3 राजधानी
उपराज्यपाल व मुख्यमंत्री में सियासी जंग तेज

6 अभिमत
संकट में हिमालयी क्षेत्रों की आजीविकाएं

11 विदेश
अमेरिका में बाइडन और ट्रंप होंगे आमने-सामने

12 स्पोर्ट्स
श्रीकांत ने किया चेन के खिलाफ उलटफेर

RNI NO.DELHIN/2012/48369
वर्ष 12 अंक 121
नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, 7 मार्च, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

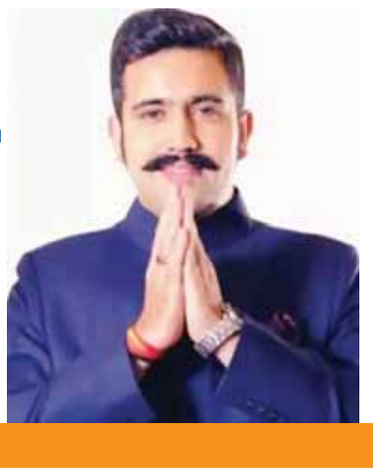

राजनीति में कुछ भी संभव, सभी दरवाजे खुले हैं: विक्रमादित्य

राष्ट्रीय-10

संदेशखाली की महिलाओं ने पीएम को बताई आपबीती

उत्तर 24 परगना जिले के बारासात में बुधवार को नारी शक्ति वंदन अभिनंदन कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

सौगर सेनगुप्ता। बारासात

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को महिलाओं पर अत्याचार को लेकर ममता बनर्जी सरकार पर तीखा हमला किया। जैसा कि हाल के दिनों में उत्तर 24 परगना के संदेशखाली में देखने को मिला था। पीएम मोदी ने कहा, संदेशखाली की माताओं और बहनों के साथ जो कुछ भी हुआ वो शर्म की बात है। यह मामला हाल ही में राष्ट्रीय सुर्खियों में उस समय आया जब यहां की महिलाओं ने जमीन पर कब्जे और उनके खिलाफ यौन उत्पीड़न के खिलाफ विद्रोह किया। प्रधानमंत्री ने कहा, टीएमसी ने उन लोगों की रक्षा करके एक बड़ा पाप किया है, जिन्होंने हमारी महिलाओं का अपमान किया, यह बहुत शर्म की बात है और मुझे यकीन है कि संदेशखाली की घटना ने बंगाल की महिलाओं को नाराज कर दिया है, यह गुस्सा संदेशखाली तक सीमित नहीं रहेगा, वहां जो तूफान आया है, वह पूरे राज्य को अपनी चपेट में ले लेगा। उत्तर 24 परगना के बारासात में नारी शक्ति वंदन अभिनंदन महिला रैली को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि कैसे भ्रष्टाचार और महिलाओं के साथ इंडिया गठबंधन और उसके घटक टीएमसी की पहचान बन गया है।

प्रधानमंत्री ने भारत के नेताओं पर निशाना साधते हुए कहा, राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सत्ता में वापस की आहट से इंडिया गठबंधन के नेताओं की नींद उड़ गयी है और मानसिक संतुलन बिगड़ गया है। इसलिए उन्होंने मोदी को गाली देना शुरू कर दिया है। इंडिया गठबंधन के भ्रष्ट लोग कह रहे हैं कि मेरा अपना कोई परिवार नहीं है लेकिन सच कहा जाए तो मेरे सामने बैठे लोगों सहित देश की पूरी जनता मेरा परिवार है। भाजपा सूत्रों ने बताया कि मोदी ने संदेशखाली के कुछ पीड़ितों से भी मुलाकात की और उन्हें मदद का आश्वासन दिया। सूत्रों ने कहा, यौन हमले की कुछ पीड़िताएं बारासात आई थीं और उन्होंने प्रधानमंत्री से मुलाकात की और उन्होंने उन्हें मदद का आश्वासन दिया। यह बैठक बारासात में प्रधानमंत्री की रैली के बाद हुई, जो उत्तर 24 परगना जिले का मुख्यालय है जहां संदेशखाली स्थित है।

प्रधानमंत्री, जिन्होंने बुधवार को भारत की पहली अंडर वॉटर मेट्रो रेलवे सेवा का उद्घाटन किया – जो हावड़ा और कोलकाता को जोड़ती है और गंगा के नीचे चलती है। इसके अलावा उन्होंने 15,000 करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं की शुरुआत किया। उन्होंने कहा कि इंडिया गठबंधन पार्टी शासित राज्यों ने सभी केंद्रीय योजनाओं में बाधा डालने का आरोप लगाया, जबकि उनकी सरकार उन्हें लागू करने की पूरी कोशिश कर रही थी ताकि देश को आगे बढ़ाया जा सके। उन्होंने कहा, इंडिया गठबंधन के नेतृत्व वाली सरकारें भाजपा सरकार द्वारा शुरू की गई योजनाओं पर ब्रेक लगा रही हैं, जैसे टीएमसी सरकार ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम, उज्ज्वला गैस योजना और पेयजल परियोजनाओं को लागू करने से इनकार कर दिया। टीएमसी शासन ने बंगाल को एक ग्रहण के रूप में निगल लिया है। प्रधानमंत्री की यह एक सप्ताह के भीतर बंगाल में तीसरी रैली थी, पिछली दो रैली 1 और 2 मार्च को आरामबाग और कृष्णानगर में आयोजित की गई थीं। इसके बाद पीएम मोदी बिहार रवाना हुए और लोगों से राज्य में विकास सुनिश्चित करने के लिए टीएमसी को सत्ता से बाहर करने को कहा।

अपने महिला वोट बैंक को बचाने के लिए बेताब टीएमसी ने तुरंत प्रतिक्रिया दी, जबकि पार्टी ने महिला-केंद्रित परियोजनाओं की घोषणा करके और प्रधानमंत्री के आरोपों का मुकाबला करके दोतरफा उपाय किया। जबकि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने एक्स पर आईसीडीएस और आशा कार्यकर्ताओं के वेतन में वृद्धि और सरकार की योजनाओं की घोषणा एक्स पर की। पार्टी के प्रवक्ता कुणाल घोष ने पीएम मोदी पर हमला करते हुए महिला सुरक्षा को लेकर 'मगरमच्छ के आंसू' बताया। मुख्यमंत्री ने कहा, आशा कार्यकर्ता हमारा गौरव हैं क्योंकि वे बहुत मेहनत करती हैं। (शेष पेज 9)

भारत को मिली पहली पानी के नीचे चलने वाली मेट्रो

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को कोलकाता मेट्रो के एस्प्लेनेड-हावड़ा मैदान खंड का उद्घाटन किया।

भाजपा की भविष्यवाणी के बाद भी गांधी परिवार यूपी में जमाएगा पैर

दीपक कुमार झा। नई दिल्ली

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा के 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए उत्तर प्रदेश के रायबरेली निर्वाचन क्षेत्र से चुनावी शुरुआत करने की संभावना है, जिसका प्रतिनिधित्व उनकी मां पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने किया है, जो अब राज्यसभा में पहुंच गई हैं। प्रियंका गांधी के पोस्टर पहले ही रायबरेली में लग चुके हैं, जबकि पड़ोसी अमेठी में भी राहुल गांधी के पोस्टर लगे हुए हैं, जो पिछला लोकसभा चुनाव भाजपा की स्मृति ईरानी से हार गए थे। रायबरेली सीट सोनिया गांधी ने पहले भी पांच बार जीती है, जिसमें 2019 भी शामिल है, जब वह यूपी लोकसभा सीट जीतने वाली एकमात्र कांग्रेस नेता थीं। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने रायबरेली से प्रियंका गांधी की उम्मीदवारी की मांग करते हुए जो पोस्टर लगाए हैं, उनमें कहा गया है- 'कांग्रेस के विकास कार्यों को आगे बढ़ाएं, रायबरेली बुला रही है...प्रियंका गांधीजी, कृपया आएं।'

कांग्रेस सूत्रों ने कहा कि राहुल गांधी के उत्तर प्रदेश के अमेठी और केरल के वायनाड दोनों जगहों से चुनाव लड़ने की संभावना है, जिसका वह वर्तमान में प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। आगामी लोकसभा चुनाव के लिए पार्टी उम्मीदवारों को अंतिम रूप देने के लिए कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व बृहस्पतिवार को राष्ट्रीय राजधानी में बैठक करेगा। एआईसीसी महासचिव, संचार, जयराम रमेश ने कहा, 'लोकसभा चुनाव के लिए उम्मीदवारों पर विचार और निर्णय लेने वाली कांग्रेस की केंद्रीय चुनाव समिति (सीईसी) की पहली बैठक 7 मार्च को हो रही है।'

बैठक में पैनल में शामिल अन्य वरिष्ठ नेताओं के अलावा अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और पूर्व प्रमुख सोनिया गांधी और राहुल गांधी सहित शीर्ष नेता उपस्थित रहेंगे। कांग्रेस ने अभी तक कोई उम्मीदवार घोषित नहीं किया है। पिछले हफ्ते भाजपा ने लोकसभा चुनाव के लिए 195 उम्मीदवारों की अपनी पहली सूची जारी की थी। इसके अलावा, आगामी लोकसभा चुनावों के लिए विपक्षी महा विकास अघाड़ी (एमवीए) जिसमें कांग्रेस भी शामिल है, के सीट-बंटवारे के फॉर्मूले को बुधवार को मुंबई में इसके नेताओं की बैठक में अंतिम रूप दिया गया। महाराष्ट्र में 48 लोकसभा सीटें हैं। एमवीए के घटक - कांग्रेस, उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना (यूबीटी) और शरद पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी-शरदचंद्र पवार - सीट-बंटवारे पर आम (शेष पेज 9)

महाराष्ट्र में भाजपा सीटों पर समझौते के करीब

मुंबई में बुधवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का स्वागत करते महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे। साथ उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस। ऐसा माना जा रहा है कि यह भेंट सीटों के तालमेल को लेकर थी

टीएन रघुनाथ। मुंबई

महाराष्ट्र में लोकसभा चुनावों में सीट बंटवारे पर सत्तारूढ़ भाजपा और गठबंधन सहयोगियों में सहमति लगभग बन गई है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह मध्यस्थता में दोनों पक्षों के बीच मतभेद दूर हो गए हैं। अनुमान के मुताबिक भाजपा यहां पर 32 सीटों पर चुनाव लड़ सकती है और शेष 16 सीटें अपने गठबंधन सहयोगियों एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और अजीत पवार के नेतृत्व वाली राकांपा के लिए छोड़ सकती है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, जो शहर के दो दिवसीय दौरे पर थे, समझा जाता है कि उन्होंने शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और अजीत पवार के नेतृत्व वाली राकांपा को सामूहिक रूप से 16 सीटें आवंटित करने पर सहमति व्यक्त की है।

शाह, जिन्होंने मंगलवार रात को सरकारी सह्याद्री गेस्ट हाउस में शिंदे और अजीत पवार के साथ एक दौर की बातचीत की, बुधवार को जियो वर्ल्ड सेंटर में उनसे एक बार फिर मुलाकात की। बुधवार की बैठक में एनसीपी नेता प्रफुल्ल पटेल और सुनील तटकरे भी मौजूद थे। जहां शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना ने कम से कम 13 सीटें मांगी थीं, वहीं अजित पवार के नेतृत्व वाली राकांपा ने 10 सीटों की मांग की थी। हालाँकि, शाह ने उन्हें स्पष्ट कर दिया कि भाजपा दोनों दलों को 16 से अधिक सीटें आवंटित नहीं कर सकती।

दोनों सत्तारूढ़ गठबंधन सहयोगियों के बीच, शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना को नौ से 10 सीटें मिल सकती हैं, जबकि एनसीपी (एपी) को शेष 6 से 7 सीटों पर संतोष करना होगा। महायुति, जैसा कि राज्य में भाजपा के नेतृत्व वाले सत्तारूढ़ गठबंधन ने बुलाया है, इस सप्ताह के अंत तक या अगले सप्ताह की शुरुआत में अपनी सीट-बंटवारे की व्यवस्था को अंतिम रूप देने की संभावना है। राकांपा को आवंटित सीटों में से भाजपा ने प्रतिष्ठित बारामती सीट उपमुख्यमंत्री अजीत पवार की पत्नी सुनेत्रा पवार के लिए छोड़ दी है। सुनेत्रा का मुकाबला प्रतिद्वंद्वी राकांपा नेता और तीन बार की सांसद सुप्रिया सुले से होगा, जो शरद पवार की बेटी हैं। इसी तरह, भाजपा ने तटीय कोंकण क्षेत्र में रायगढ़ सीट राकांपा के लिए आवंटित की है। राज्य राकांपा (एपी) प्रमुख सुनील तटकरे खुद तटीय कोंकण क्षेत्र की रायगढ़ सीट से चुनाव लड़ सकते हैं।

महाराष्ट्र में लोकसभा सीट-बंटवारे की व्यवस्था को औपचारिक रूप देने में देरी हो रही है। भाजपा ने शनिवार को 19 उम्मीदवारों की अपनी पहली सूची की घोषणा की। हालाँकि, उसने महाराष्ट्र के लिए अपने उम्मीदवारों की घोषणा नहीं की, क्योंकि पार्टी ने अपने गठबंधन सहयोगियों - शिव सेना (शिंदे) और एनसीपी (एपी) के साथ सीट समझौते को औपचारिक रूप नहीं दिया था। देवेन्द्र फडणवीस सहित राज्य भाजपा के नेता चाहते थे कि शाह हस्तक्षेप करें और शिंदे सेना और अजीत पवार भाजपा के साथ सीट-बंटवारे की व्यवस्था को मजबूत करें। अपनी दो दौर की बातचीत के दौरान, शिंदे ने मंगलवार रात और सोमवार सुबह शिंदे सेना और एनसीपी (एपी) के साथ सीट-बंटवारे का समझौता किया।

प्रधानमंत्री मोदी की कश्मीर घाटी की यात्रा से पहले झेलम नदी में गश्त करने के बाद मरीन कमांडो (मार्कोस)।

अनुच्छेद-370 के युग के बाद पहली बार पीएम जाएंगे कश्मीर

पायनियर समाचार सेवा। जम्मू

लोकसभा चुनाव से पहले और धारा 370 हटाने के बाद पहली बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बृहस्पतिवार को पहली बार कश्मीर घाटी में पहुंच कर 'विकसित भारत, विकसित जम्मू कश्मीर कार्यक्रम में भाग लेंगे। इस दौरान प्रधानमंत्री श्रीनगर में कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करने के साथ एक जनसभा को संबोधित करेंगे। घाटी की मोदी की यात्रा का उद्देश्य पार्टी कैडर को मजबूती प्रदान करना और चुनावी अभियान को आगे बढ़ाना है। प्रधानमंत्री के व्यापक जनसंपर्क कार्यक्रम से घाटी के लोगों में लोकसभा चुनावों के साथ विधानसभा चुनावों के होने की उम्मीद बढ़ गई है। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, प्रधानमंत्री श्रीनगर के बख्शी स्टेडियम में विकसित भारत, विकसित जम्मू कश्मीर कार्यक्रम में शामिल होंगे और केंद्र शासित प्रदेश में कृषि अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए लगभग 5,000 करोड़ की परियोजनाओं का उद्घाटन करेंगे। अधिकारियों ने बताया कि प्रधानमंत्री के कार्यक्रम के मद्देनजर बख्शी स्टेडियम में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए है ताकि कोई अप्रिय घटना नहीं हो। उन्होंने बताया कि पूरा स्टेडियम तिरंगा के रंग में रंग गया है। (संबंधित समाचार पेज 9)

मेट्रो के बढ़ते दायरे से और विशाल हुआ एनसीआर समुदाय, दिल्ली-मेरठ का समय एक घंटे से भी कम होगा

पायनियर समाचार सेवा। मेरठ/आगरा

दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ आरआरटीएस कॉरिडोर के 17 किलोमीटर लंबे दुहाई-मोदी नगर उत्तरी खंड को हरी झंडी दिखाने के साथ नमो भारत ट्रेन साहिबाबाद से मोदीनगर उत्तर तक आठ स्टेशनों तक फैले 34 किलोमीटर लंबे कॉरिडोर पर चालू हो गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को कोलकाता से रिमोट से अतिरिक्त खंड को हरी झंडी दिखाई। इसके साथ ही आगरा मेट्रो के प्राथमिकता वाले गलियारे का उद्घाटन प्रधानमंत्री द्वारा वस्तुत: किया गया क्योंकि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और अन्य नेताओं ने ताज महल स्टेशन से ताज महल पूर्वी स्टेशन तक उद्घाटन ट्रेन की सवारी की। उन्होंने कहा कि आगरा मेट्रो के लॉन्च के साथ, उत्तर प्रदेश लखनऊ, गाजियाबाद, नोएडा, ग्रेटर नोएडा और कानपुर में सेवाओं के साथ अधिकांश शहरों में मेट्रो सुविधाएं वाला छठा राज्य बन गया है।

आरआरटीएस विस्तार में तीन स्टेशन शामिल हैं - मुराद नगर, मोदी नगर दक्षिण और मोदी नगर उत्तर। 82 किमी से अधिक लंबे दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ आरआरटीएस कॉरिडोर से दिल्ली और मेरठ के बीच यात्रा का समय एक घंटे से भी कम होने की उम्मीद है। उद्घाटन के अवसर पर बोलते हुए, केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा कि एक बार संपूर्ण रैपिड रेल ट्रांजिट सिस्टम तैयार हो जाने के बाद, यह देश में 'दूसरा सबसे बड़ा मेट्रो सिस्टम' होगा। पुरी ने कहा, 'प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हम इस कॉरिडोर को इतनी तेज गति से विकसित कर सके। आरआरटीएस का काम और इसकी गुणवत्ता देश में सबसे बेहतरीन है।' राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम यानी एनसीआरटीसी के मुताबिक, मुरादनगर स्टेशन पर ऑटोमैटिक फेयर कलेक्शन (एएफसी) सिस्टम, प्लेटफॉर्म स्क्रीन डोर (पीएसडी), सीसीटीवी इंस्टालेशन, ग्राहक सेवा केंद्र, टिकटिंग काउंटर, रेलिंग और वॉशरूम निर्माण खत्म हो गया है। एनसीआरटीसी ने कहा, 'इसके साथ ही कॉन्कोर्स से प्लेटफॉर्म स्तर तक आवाजाही के लिए एस्केलेटर और लिफ्ट भी लगाए गए हैं। फिलहाल स्टेशन की छत की सीलिंग, पेंटिंग और लाइटिंग का काम चल रहा है। यात्रियों की सुविधा के लिए दो प्रवेश और निकास द्वार बनाए गए हैं।

यात्रियों की आवाजाही को आसान बनाने के लिए मल्टीमॉडल एकीकरण के तहत मुरादनगर स्टेशन को मुरादनगर बस स्टैंड से जोड़ा गया है। परियोजना के तहत मोदी नगर को दो स्टेशन दिए गए हैं - मोदी नगर दक्षिण और मोदी नगर उत्तर - क्योंकि इस क्षेत्र में अक्सर भीषण ट्रैफिक जाम रहता है। इन दोनों स्टेशनों की लंबाई लगभग 215 मीटर, चौड़ाई लगभग 25 मीटर और प्लेटफार्म की ऊंचाई लगभग 16 मीटर है। मोदीनगर में आमतौर पर मोदी मिल से राज चौपला तक ट्रैफिक जाम रहता है। कई बार लोगों को इस इलाके को पार करने में घंटों लग जाते हैं। एनसीआरटीसी ने कहा, इस क्षेत्र में लोगों की घनी आबादी को देखते हुए, एनसीआरटीसी ने यहां दो स्टेशन, मोदी नगर साउथ और मोदी नगर नॉर्थ बनाने का फैसला किया है। इन दो स्टेशनों के साथ, मोदी नगर को गंभीर ट्रैफिक जाम की समस्या से राहत मिलेगी। नमो भारत ट्रेन का नया जोड़ा गया 17 किलोमीटर का विस्तार दिल्ली-मेरठ (शेष पेज 9)

पायनियर
नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, 7 मार्च, 2024

बोड़ाकी तक होगा मेट्रो का विस्तार

दादरी से दिल्ली तक होगी सीधी सेवा

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा में नोएडा मेट्रो के इस विस्तार के लिए 416.34 करोड़ रुपये के प्रस्ताव को स्वीकृति दी गई है। ग्रेटर नोएडा में करीब 2.6 किलोमीटर लंबे एलिवेटेड ट्रैक पर दो स्टेशन जुनपत और बोड़ाकी होंगे। इससे दादरी, ग्रेटर नोएडा और नोएडा से दिल्ली तक के लिए सीधी कनेक्टिविटी होगी। बता दें कि अभी दादरी के लोग अलग अलग साधनों से ग्रेटर नोएडा और नोएडा जाते हैं। जबकि कुछ लोग गाजियाबाद से होते हुए नोएडा जाते हैं।

ग्रेटर नोएडा के जैतपुर डिपो से बोड़ाकी तक चार कोच की मेट्रो दौड़ेगी। इसके लिए मंगलवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में हरी झंडी मिल गई है। अब नोएडा की एक्वा लाइन के जैतपुर मेट्रो डिपो से बोड़ाकी तक 2.6 किमी का ट्रैक बनाया जाएगा। इस परियोजना पर सरकार को ओर से 416.36 करोड़ रुपये खर्च होंगे।

ग्रेटर नोएडा के बोड़ाकी में प्रस्तावित मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक हब के विकास को तेज गति देने के लिए अब बोड़ाकी तक मेट्रो की कनेक्टिविटी को हरी झंडी मिल गई है। उत्तर प्रदेश सरकार ने कैबिनेट की बैठक में नोएडा के सेक्टर 51 से ग्रेटर नोएडा के जैतपुर स्थित डिपो तक चलने वाली एक्वा मेट्रो अब बोड़ाकी तक के लिए स्वीकृति दे दी है। मेट्रो के इस विस्तार के लिए 416.34 करोड़ रुपये के प्रस्ताव को स्वीकृति दी गई है।

करीब 2.6 किलोमीटर लंबे एलिवेटेड ट्रैक पर दो स्टेशन जुनपत और बोड़ाकी होंगे। इस रूट के बनने से दादरी और बोड़ाकी के आसपास से नोएडा ग्रेटर और नोएडा आने वाले समय में दिल्ली के बीच सफर करने वाले लाखों यात्रियों को सहूलियत मिलेगी। शुरुआत में मेट्रो संचालन में कम खर्च को ध्यान में रखते हुए बोड़ाकी तक चार कोच की मेट्रो चलेगी। जानकारी के मुताबिक इस रूट पर यात्रियों की संख्या बढ़ने के बाद मेट्रो कोच की संख्या भी बढ़ाई जाएगी। बोड़ाकी के आसपास के गांव चिटेहरा, दतावली कटहेरा, और पल्ला गांव के लोगों को भी इसका लाभ मिलेगा।

इन गांवों की जमीन पर मल्टीमॉडल टांसपोर्ट हब, मल्टी मॉडल लाजिस्टिक हब, इंटिग्रेटेड इंडस्ट्रियल टाउनशिप बसाई जा रही है। बोड़ाकी के आसपास सात गांवों की 478 हेक्टेयर जमीन पर यह परियोजनाएं विकसित होंगी। अब तक करीब 80 प्रतिशत जमीन का अधिग्रहण हो गया है।

आपको बता दें कि ग्रेटर नोएडा के बोड़ाकी में मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब बनना है। यहां पर अंतरराज्यीय बस अड्डा, रेलए मेट्रो की सुविधाएं विकसित होंगी। डिपो स्टेशन से बोड़ाकी तक मेट्रो विस्तार के लिए पूर्व में ही डीपीआर तैयार हो गई थी, लेकिन हर बार बजट को लेकर मामला अटक जाता था। वर्तमान में एक्वा मेट्रो नोएडा के सेक्टर-51 से ग्रेटर नोएडा के जैतपुरा गांव स्थित डिपो स्टेशन तक चलती है।

नारी शक्ति संवाद कार्यक्रम में पीएम का वर्चुअल संबोधन

हर गांव की महिला को बनाएंगे लखपतिः पीएम

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकार के महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने और अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में भाजपा के महानगर अध्यक्ष संजीव शर्मा के नेतृत्व में महिला मोर्चा ने नारी शक्ति संवाद अभियान चलाया जा रहा है।

इसी अभियान के तहत लोहिया नगर स्थित हिंदी भवन के सभागार में प्रधानमंत्री मोदी के नारी शक्ति संवाद कार्यक्रम के उपलक्ष्य में संबोधन का सजीव प्रसारण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें प्रधानमंत्री के संबोधन को स्व-सहायता समूह, एनजीओ और भाजपा महिला मोर्चा ने सजीव प्रसारण में स्क्रीन पर सुना।

गाजियाबाद में महानगर बीजेपी के मीडिया प्रभारी प्रदीप चौधरी ने बताया कि प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन की शुरूआत करते हुए कहा कि शक्ति वंदन कार्यक्रम में लगी माता बहनों के तन्मयता से लग कर शक्ति वंदन सम्मान समारोह, पद यात्रा, चौपाल, स्कूटी यात्रा आदि के माध्यम से नारी सशक्तिकरण के प्रचार में जुटे रहने पर उनका आभार व्यक्त करता हूं प्रणाम करता हूं। उन्होंने स्वयं सहायता समूह से जुड़े क्षेत्र व सरकार के सहयोग के बारे में बताया। उन्होंने कहा की हमारी सरकार का उद्देश हर गांव में हर बहन को लखपति दीदी बनाने का है। शक्ति वंदन कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी ने यह कह कर दिल छू लिया कि मोदी का कण कण, जीवन का पल पल मातृ शक्ति को समर्पित है। आज देश की हर माता बहन कह रही है मैं हूं मोदी का परिवार। एक सौ चालीस करोड़ देश वासी मेरा परिवार है इन्होंने मेरी चिंता की है।

आज विकसित भारत को संजोकर आपकी सेवा करकर केवल कर्ज उतार रहा हूं। शहर विधायक अतुल गर्ग ने कहा भाजपा जाति धर्म से ऊपर उठ कर सर्व जन कल्याण के लिए कार्य करती है। शक्ति वंदन इसका एक और प्रमाण है जिसमे नारी शक्ति ने अपना परिचय घर से बाहर निकलकर स्वावलंबी होते हुए दिया है।

संक्षिप्त समाचार

जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपती महिला संगठन की प्रतिनिधि

संदेशखाली हिंसा पर फूटा महिलाओं का आक्रोश

नोएडा। पश्चिमी बंगाल के संदेशखाली में तृणमूल कांग्रेस के नेता द्वारा महिलाओं पर हुए दुष्कर्म, अत्याचार को लेकर को महिला संगठनों की समन्वय समिति द्वारा सूरजपुर स्थित कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन किया तथा राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा को सौंपा। राष्ट्रीय सेविका समिति की जिला अध्यक्ष इंद्राणी मुखर्जी के नेतृत्व में सैकड़ों महिलाओं ने संदेशखाली की घटना पर आक्रोश जताया तथा इस मामले में केन्द्रीय एजेंसियों से जांच कराने तथा पश्चिम बंगाल से बाहर मामले की सुनवाई फास्ट ट्रैक अदालत में करने की मांग की।जिलाध्यक्ष इंद्राणी मुखर्जी ने कहा कि तृणमूल कांग्रेस महिला विरोधी है ऐसी सरकार को इस चुनाव में बंगाल की जनता उखाड़ फेंकेगी। पश्चिम बंगाल की पुलिस आरोपी को बचा रही है। महिला समन्वय बौद्धिक प्रमुख अनीता जोशी ने कहा कि पूरे देश की महिलाएं संदेशखाली की पीड़ित महिलाओं के साथ खड़ी हैं। उन्होंने गृहमंत्री से मांग की कि मुख्य आरोपी शहजाद शेख को कड़ी से कड़ी सजा दी जाए। इस अवसर पर विभाग समन्वय टीम से रश्मि सोलंकी,स्मृति राय, अर्चना त्यागी, प्रियंका सिंह, राजश्री गुप्ता समेत कई महिलाएं मौजूद थीं।

सामूहिक दुष्कर्म के तीनों आरोपी गिरफ्तार

गाजियाबाद। मोदीनगर की एक कॉलोनी में युवती को बंधक बनाकर सामूहिक दुष्कर्म करने के मामले में पुलिस ने तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। इसके अलावा पुलिस ने युवती का मजिस्ट्रेट के समक्ष भी बयान दर्ज कराया है। नगर की एक कॉलोनी निवासी युवती रविवार रात को बाजार गई थी। दुकान के पास एक मकान में युवती को खींचकर सामूहिक दुष्कर्म किया गया। दुष्कर्म का विरोध करने पर युवती के साथ मारपीट की। किसी तरह युवती अपने घर पहुंची और अपनी मां को आपबीती सुनाई। इसके बाद वह थाने पहुंची और तहरीर दी। पुलिस ने तीन के खिलाफरिपोर्ट दर्ज कर आरोपियों की तलाश के लिए पुलिस की तीन टीमों का गठन किया। एसीपी मोदीनगर ज्ञानप्रकाश राय ने बताया कि पुलिस ने सूचना के आधार पर आरोपी अनुज एदेवांश निवासी आदर्श नगर कॉलोनी और मयंक निवासी परीक्षित गढ़ मेरठ को गिरफ्तार चालान कर दिया है।

अगरबत्ती और धूपबत्ती बनाने वाली फैक्ट्री में आग

गाजियाबाद। गाजियाबाद के थाना कविनगर इंडस्ट्रियल एरिया में अगरबत्ती और धूपबत्ती बनाने वाली फैक्ट्री में भीषण आग लग गई। कई घंटे तक दमकल कर्मी आग पर काबू पाने में जुटे रहे। घटनास्थल पर दमकल की नौ गाड़ियां पहुंची हैं। जिसके बाद भी आग पर काबू नहीं पाया गया। गाजियाबाद में चीफ फायर ऑफिसर राहुल पाल ने बताया कि बुधवार को सूचना मिली की कविनगर इंडस्ट्रियल एरिया में दिव्य प्रेम इंटरप्राइजेज के नाम से अगरबत्ती और धूपबत्ती बनाने वाली फैक्ट्री में आग लगी है। दमकल की नौ गाड़ियां घटनास्थल पर मौजूद है और आग बुझाने का काम कर रही है। आग मुख्य रूप से बेसमैंट, फर्स्ट फ्लोर और सेकंड फ्लोर पर फैली हुई है। दमकल कर्मी चारों तरफ से होज लाइन पाइप फैला कर आग पर काबू पाने का प्रयास कर रहे हैं।

पुलिस मुठभेड़ में बदमाश को लगी गोली

नोएडा। नोएडा में मुठभेड़ के बाद दो बदमाश गिरफ्तार हुए हैं। पहले को मुठभेड़ में गोली लगी है जबकि दूसरा कांबिंग के दौरान अरेस्ट किया गया। घायल बदमाश को उपचार के लिए जिला अस्पताल में भेजा गया है। थाना फेस फेस.1 पुलिस बारात घर के पास चेकिंग कर रही थी। इस दौरान 2 संदिग्ध व्यक्ति आते हुए दिखाई दिए। पुलिस ने दोनों को रुकने का इशारा किया। पुलिस को देख कर भागने लगे। सख्ती से कहने पर बदमाशों ने पुलिस पर फायरिंग कर दी। पुलिस की जवाबी कार्रवाई में एक बदमाश को गोली लगी। जबकि दूसरा मौके से फरार हो गया। घायल बदमाश की पहचान रूबेल पुत्र रमजान खान निवासी बदायूं के रूप में हुई है।

पुलिस भर्ती पेपर लीक मामले में बर्खास्त वायुसेना कर्मी को दबोचा

नोएडा। नोएडा एसटीएफ ने उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षा का पेपर लीक करने के मामले में नोएडा शहर में एक बड़ी कार्रवाई की है।

नोएडा एसटीएफ की टीम ने उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती परीक्षा लीक मामले में सेक्टर-39 कोतवाली क्षेत्र के सेक्टर-37 स्थित अरुण विहार कालोनी से वायुसेना के बर्खास्त कर्मी को गिरफ्तार किया है। नोएडा एसटीएफ की टीम ने पकड़े गए आरोपी के पास से एक फर्जी आधार कार्ड, एक असली आधार कार्ड, एक वायुसेना की आइडी का फर्जी कार्ड, 26 एडमिट कार्ड, 38 बैंक चेक, चार चेकबुक, 14 पेज पुलिस भर्ती से संबंधित, दो डायरी, दो मोबाइल फोन और 500 रुपये बरामद किए हैं। एसटीएफ के उपनिरीक्षक अक्षय परवीर कुमार त्यागी द्वारा सेक्टर-39 कोतवाली में दर्ज कराई एफआइआर में बताया कि प्रदेश में यूपी पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड लखनऊ द्वारा पुलिस आरक्षी भर्ती परीक्षा आयोजित कराई गई थी।

PUBLIC NOTICE

It is to inform to the public at large that **Mr. Ajay Kumar** is purchasing the **Freehold Residential Flat No. 1, on Upper Ground Floor, without roof/ terrace rights, area measuring 40 Sq. Yds., Built on Property Bearing No. RZ-337-A/2, out of Khasra No. 847/409 & 848/409, situated in the revenue estate of Village Nasirpur, Delhi State Delhi, Colony Known as Kailash Puri, Gali No. 11-D, New Delhi-110045.from** Mrs. Krishna Devi W/o Mr. Naresh Kumar Vide **Notarized General Power of Attorney along with ATS & Will** Dated 29.12.2003 executed by Mr. Raghuvir Sharma S/o Mr. Suraj Bhan in favour of Mrs. Krishna Devi W/o Mr. Naresh Kumar and same to be finance & mortgage by **Muthoot Homefin (India) Ltd. (MHIL).** To comply the requirements of BANK/NBFC, we give this public notice that if any Person having any type of claim /right/title/interest/creating mortgage over the said property, may inform in writing, at the address mentioned below, about his objections, within **7 days** from today, failing which it shall be presumed that the said property is free from all type of Encumbrances, lien etc. **LUCEM LEGAL LLP**
Office No. B-93B,Second Floor,Opposite SBI Bank Sector-2,Noida,UP-201301,Contact# 0120-4269379

PUBLIC NOTICE

It is to inform to the public at large that **Mr. Kapil Jain who is purchasing the Upper Ground Floor & First Floor Without Roof Rights, Built up property bearing no. C-275-A area measuring 44 sq. yards i.e. 36.78 sq. meters, out of Khasra no. 407 Situated at Village Ghonda Gujran Khaddar In Gali No .13, Bhajanpura Illaqa- Shahdara Delhi. from Mrs. Neeraj Jain & Mr. Sachin Kumar who is owner through Sale Deed dated 03.05.2023, Vide document no.1343, book no.1, vol no. 5614, pages 133 to 145 dated 03.05.2023,SR-IV Seelampur., executed by Mrs. Rekha Rathore and same to be financed & mortgaged by Aditya Birla Housing Finance Ltd.** If any Person having any type of claim/right/title/interest over the said property, may inform in writing, at the address mentioned below, about his objections, within **7 days** from today, failing which it shall be presumed that the said property is free from all type of Encumbrances, lien etc. **LUCEM LEGAL LLP**
Office No. B-93B,Second Floor,Opposite SBI Bank Sector-2,Noida,UP-201301,Contact# 0120-4269379

PUBLIC NOTICE

It is informed to the Public at large that The Jamia Co-op. Bank Ltd., Sarai Jullena Branch, New Delhi, is desirous of sanctioning Housing Loan Facility in favour of (i) Mr. Faraaz Ahmed Shah S/o Mr. Mir Ahmed Shah, and Mrs. Nazia Assad W/o Mr. Faraaz Ahmed Shah, for purchasing DDA built-up freehold SFS Category-II Flat No. 1263, on Third Floor, along with scooter garage, situated at Sector-A, Pocket B&C, Vasant Kunj, New Delhi, from Sh. Shakti Kumar Bhardwaj, S/o Late Sh. Prithi Chand Bhardwaj, (presently the owner), R/o D-167, Sector 27, Noida, Gautam Buddha Nagar, U.P. If anyone has any objection or claim the titles / rights of the said property, please contact the undersigned, within 10 (ten) days of this Public Notice.

Sd/-
**THE BRANCH HEAD,
THE JAMIA CO-OP. BANK LTD.,
G-3, SURYA PLAZA, K-185/2, SARAI JULLENA,
NEW DELHI-110025 TEL :91-11-2632 4030**

सार्वजनिक सूचना

आम जनता को एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि श्रीमती अलका रानी पत्नी स्वर्गीय श्री अनिल कुमार जैन, श्री शुभम जैन पुत्र स्वर्गीय श्री अनिल कुमार जैन और श्री नितिन जैन पुत्र स्वर्गीय श्री अनिल कुमार जैन, गुलाब वाटिका की आबादी में, गांव बेहटा हाजीपुर, परगना लोनी, तहसील और जिला गाजियाबाद, यूपी में स्थित संपत्ति सं. 7-ए, भूमि क्षेत्रफल 43.1/2 वर्ग गज, खसरा नंबर 821/2/1, के सभी मालिक हैं। उनके पिता श्री अनिल कुमार जैन के मृत्यु के बाद वारिसतन प्राप्त हुआ है। श्री अनिल कुमार जैन उक्त संपत्ति के मालिक पंजीकृत जनरल पावर ऑफ अटॉर्नी, एटीएस और वसीयत दिनांक 19.08.1998 के माध्यम से थे। श्री अनिल कुमार जैन का मृत्यु प्रमाण पत्र और एसएमसी दोनों दस्तावेज विक्रेता के पास उपलब्ध नहीं है। और इसे श्री चेतन जैन को बेचा जा रहा है और उक्त संपत्ति को एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट कंपनी लिमिटेड (पूर्व में फुलर्टन इंडिया क्रेडिट कंपनी लिमिटेड) के पास गिरवी रखा जाएगा। यदि किसी व्यक्ति के पास उक्त संपत्ति में कोई प्रभार/हित/स्वामित्व है या किसी भी प्रकार का विवाद है, तो कृपया अधोहस्ताक्षरी को नीचे दिए गए पते पर लिखित रुप में वर्तमान से 07 दिनों के भीतर सूचित करें। **श्रीमती प्रसून लता,अधिवक्ता
एसजी एसोसिएट्स (लॉ फर्म)**
**एफएफ18, लोटस पॉन्ड प्लाजा, वैभव खंड, इंदिरापुरम, गाजियाबाद, यूपी
ईमेल:sgassociatespl@gmail.com,फोन7011172764, 8130200837**

सार्वजनिक सूचना

जन साधारण को सूचित किया जाता है कि श्री अमरजीत सिंह पुत्र स्वर्गीय श्री गुरबचन सिंह, उक्त सम्पति Entire Property Bearing No. F-6/2, area measuring 126 Sq. Yds., Situated at Malviya Nagar, New Delhi, के मालिक है। उपरोक्त संपत्ति मेरे मुवक्किल पीरामल कैपिटल एंड हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड द्वारा वित्तपोषित व बंधक प्रस्तावित है। उपरोक्त संपत्ति के स्वामित्व सम्बंधित मूल दस्तावेज़ Allotment Letter & Possession Certificate कहीं खो गए है। इस सन्दर्भ में दिल्ली पुलिस को सूचना दिनांक 06.03.2024 को LR No. 1518765/2024 में दर्ज करवाई गई है। और स. गुरबचन सिंह ने वसीयत दिनांक 04.04.2008, प्रपत्र संख्या 1592 श्री अमरजीत सिंह के नाम दर्ज कराई थी तथा। स. गुरबचन सिंह की मृत्यु के बाद, वसीयत दिनांक 04.04.2008, का प्रोबेट नहीं हुआ है और न ही कोई उत्तराधिकारी प्रमाण पत्र है और श्री दिलदार सिंह की मृत्यु दिनांक 17.10.2012, को हो जाती हैं स्वर्गीय श्री दिलदार का उत्तराधिकारी प्रमाण पत्र व मृत्यु प्रमाण पत्र और स्वर्गीय श्रीमती लखबीर कौर का उत्तराधिकारी प्रमाण पत्र नहीं है। यदि मूल Allotment Letter & Possession Certificate किसी भी व्यक्ति के कब्जे में पाया जाता है या किसी भी तरह की मालकियत पायी जाती है तो कृपया मूल संपत्ति दस्तावेजों के साथ हमे इस नोटिस की तारीख से 7 दिनों के भीतर निम्न पते पर संपर्क करें। ऐसा न करने पर, उपरोक्त बिक्री विलेख के अनुसार विषय संपत्ति के संबंध में दावा अमान्य माना जाएगा।
**राघव तिवारी, अधिवक्ता
830, पटियाला हाउस कोर्ट, नई दिल्ली 110001
Mob.:+91-8076188328**

सार्वजनिक सूचना

आम जनता को एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि **श्री प्रदीप कुमार पुत्र श्री तिरखा सिंह** ने मोहल्ला राम नगर (अम्बेडकर रोड का पूर्वी भाग) परगना: लोनी, तहसील और जिला: गाजियाबाद, यूपी में स्थित आवासीय प्लॉट नंबर 268के और नया नंबर 202, भूमि क्षेत्रफल 50 वर्ग गज यानी 41.805 वर्ग मीटर, पंजीकृत बिक्री विलेख दिनांक 02.04.2019, सब रजिस्ट्रार-I, गाजियाबाद, दस्तावेज सं. 2721, पुस्तक सं.1, पृष्ठ 213-278पर, पंजीकृत दिनांक 02.04.2019 के माध्यम से मालिक हैं और उक्त संपत्ति को एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट कंपनी लिमिटेड (पूर्व में फुलर्टन इंडिया क्रेडिट कंपनी लिमिटेड) के पास गिरवी रख रहे हैं। यदि किसी व्यक्ति के पास उक्त संपत्ति में कोई प्रभार/हित/स्वामित्व है या किसी भी प्रकार का विवाद है, तो कृपया अधोहस्ताक्षरी को नीचे दिए गए पते पर लिखित रुप में वर्तमान से 07 दिनों के भीतर सूचित करें। **श्रीमती प्रसून लता,अधिवक्ता
एसजी एसोसिएट्स (लॉ फर्म)**
**एफएफ18, लोटस पॉन्ड प्लाजा, वैभव खंड, इंदिरापुरम, गाजियाबाद, यूपी
ईमेल:sgassociatespl@gmail.com,फोन7011172764, 8130200837**

PUBLIC NOTICE

General Public is hereby informed that My Client Mr. Brij Raj Kumar S/o Late Mr. Shri Krishna aged about 72 years R/o 499, Haveli Haider Quli, Chandni Chowk, Delhi – 110006 have severed all relations with his elder son namely Anirudh Kumar (Goel) S/o Brij Raj Kumar aged about 48 years and his wife namely Rashi Goel W/o Anirudh Kumar (Goel) aged about 41 years (approx)., including their Legal Heirs and any future Heirs, due to their bad behavior towards My Client, bad habits and ill-treatment of My Client. My above-name Client, through this notice, has also disowned and debarred his said son and daughter-in-law, including their Legal Heirs and any future Heirs, from all his movable and immovable properties. Further, it is put to notice that Anirudh Kumar (Goel) has My Client's e-signatures on his electronic systems, and otherwise, which he may use without the consent of My Client, therefore, any document signed by My Client digitally or otherwise, needs to get verified by My Client personally. Anybody dealing with Mr. Anirudh Kumar (Goel) or Rashi Goel, including their Legal Heirs and future heirs, will do so at his/ her/ their own risk and responsibilities and My Client will not be responsible for any act, deed or dealing done by Mr. Anirudh Kumar (Goel) or Rashi Goel. Consequently, My Clients younger son, Naval Kumar S/o Brij Raj Kumar aged about 43 years, remains to be his only and sole Legal Heir for all purposes.
Harshita Aggarwal, Advocate (Enrol. no: D/2431/2018)
M19A, IInd Floor, Jangpura Extension New Delhi-110014.

PUBLIC NOTICE

To Whomsoever it may concern This is to inform the general public that following share certificate of **KEC international Ltd** Having its registered office at **RPG House 463 Dr. Annie besant road worli Mumbai -40030** registered in the name of the following share holder/s have been lost by them sr. No. name of the shareholder/s **Ram Nath Bali Folio no. R011265, R011266 Certificate no./s 9619 , 9620 Distinctive number/s 9928776-9929245, 9929246-9929720 No. Of Shares 470, 475.** The public are hereby cautioned against purchasing or dealing in any way with the above referred share certificate. Any person who has any claim in respect of the said share certificate/s should lodge such claim with the company or its registrar and transfer agents link **Intime India Pvt. Ltd., C 101, 247 Park, L.B.S. Marg, Vikhroli (West), Mumbai, Maharashtra,400083** Tel : 022 49186270 within **15 days** of publication of this notice after which no claim will be entertained and the company shall proceed to issue Duplicate share certificate/s .
**Place: New Delhi Date: 06/03/2024
Name of Share holder: Ram Nath Bali**

भौतिक कब्ज़े की सूचना

ICICI Bank | **शाखा कार्यालय:** आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, तीसरी मंजिल, प्लॉट नंबर- 23, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली- 110005

जबकि

अधोहस्ताक्षरी ने वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के अंतर्गत आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्राधिकृत अधिकारी के रूप में तथा प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के नियम 3 के साथ पठित धारा 13(12) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए नीचे वर्णित कर्ज़दारों को माँग सूचनाएँ निर्गमित की थीं, जिसमें उक्त सूचना की प्राप्ति की तिथि से 60 दिनों के अंदर सूचना में वर्णित राशि को प्रतिभुगतान करने को कहा गया था।

कर्ज़दार/सह-कर्ज़दार/ज़मानतदार राशि का प्रतिभुगतान करने में विफल रहे हैं, अतएव एतद् द्वारा कर्ज़दार तथा जनसाधारण को सूचित किया जाता है कि अधोहस्ताक्षरदाता द्वारा भौतिक अधिग्रहण किया गया है जो कि उक्त अधिनियम की धारा 13(4) के तहत नियम 8 में दर्शाया गया है। संपत्ति तथा अधिग्रहण की तिथि नीचे दर्शाई गई है। एतद् द्वारा विशेष रूप से कर्ज़दार एवं जनसाधारण को संपत्ति के संव्यवहार नहीं करने के लिए सचेत किया जाता है तथा संपत्ति के साथ कोई भी संव्यवहार इसमें वर्णित राशि तथा उस पर आगे ब्याज हेतु आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्रभार के अधीन होगा।

क्र. सं.	कर्ज़दार/ सह-कर्ज़दार का नाम/ ऋण खाता क्र.	संपत्ति का विवरण/ भौतिक कब्ज़े की तिथि	डिमांड नोटिस की तिथि/ डिमांड नोटिस में राशि (रु.)	शाखा का नाम
1.	विश्वास अरोड़ा/ रश्मिता अरोरा/ LBDEL00001857770	फ्लैट नंबर-टी-3, तीसरी मंजिल, प्लॉट नंबर-I-22 और I-23, किला नंबर 59/21, 59/22/2, लक्ष्मी नगर, खुरेजी खास शाहदरा, नई दिल्ली/ मार्च 02, 2024	फ़रवरी 12, 2019 रु. 62,12,578/-	दिल्ली/ एनसीआर

उपरोक्त दर्शाए गए कर्ज़दार/सह-कर्ज़दार एवं ज़मानतदारों को सूचित किया जाता है कि इस सूचना के प्रकाशन से 30 दिनों के अंदर राशि का भुगतान करें, अन्यथा 30 दिनों की समाप्ति के पश्चात् अधिग्रहित संपत्ति की नीलामी कर दी जाएगी जो पूर्णत: नियम 8 और 9 प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के अंतर्गत है।

दिनांक : मार्च 07, 2024 **प्राधिकृत अधिकारी**
स्थान : दिल्ली/ एनसीआर **आईसीआईसीआई बैंक लि.**

PUBLIC NOTICE

This is to inform the general public that **Mr. Aditya Verma & Mrs. Jaya** are the owners of Back side flat on first floor without its roof/upper floor rights, built-up property bearing no. 33/19, area measuring 65 sq. yds i.e., 54.34 sq. mtrs., situated at Shakti Nagar, Delhi. They acquired the flat through a Sale Deed dated 24.06.2023 vide doc. no.7350 executed by Mr. Praveen Kumar Jain in favour of Mr. Aditya Verma & Mrs. Jaya.

The above-said owners have misplaced the Original Sale Deed dated 13.12.2004 vide doc. no. 8173 executed by Mr. Lakshmi Narain in favour of Mrs. Manju Gupta. Anyone who finds the above-mentioned documents, kindly handover the same to the Manager of **Tata Capital Limited, Preet Vihar. Mr. Aditya Verma & Mrs. Jaya** are currently in the process of mortgaging the aforementioned flat with **Tata Capital Limited.** Any objections or concerns regarding this transaction should be raised within a period of 07 days from the date of this public notice. Any objections submitted after the completion of this 07-days period will not be considered binding with respect to the said property or the interests of our client.

If anyone wishes to raise an objection, please do so within the stipulated 07-days period by contacting **Law Veritas: North (Advocates & Legal Consultants) at Office No. 11, 1st Floor, Building No. A-44/A, Sector-16, Noida, Uttar Pradesh-201301; Landline(s): +9101203101683, e-mail: accounts@lvnorth.in**

THE PIONEER CLASSIFIEDS

CHANGE OF NAME

I, **Ahmad Yusuf Shaikh, S/o.** Mohammad Anzar Azmi, R/o. L-2, Ghaffar Manzil Extn. Part-2, Jamia Nagar, Okhla, New Delhi-110025, declare that my name has been wrongly mentioned in my Passport No. Z6375002 as Ahmad Yousuf instead of Ahmad Yusuf Shaikh.

PD(297)A

Karur Vysya Bank — Smart way to bank

पीतमपुरा शाखा: 15, वैशाली मेन रोड, गुलाब स्वीट्स के पास, पीतमपुरा, दिल्ली-110034
सम्पर्क नं. 011-27315993, 011-27315994
9999234373 | ईमेल: pitampura@kvbmail.com

सुरक्षित जमा लॉकर तोड़ने की सार्वजनिक सूचना

निम्नलिखित किरायेदारों ने पीतमपुरा शाखा से सुरक्षित जमा लॉकर सुविधा का लाभ उठाया है और निर्धारित समय के भीतर इसे नवीनीकृत करने में विफल रहे हैं, करूर वैश्य बैंक लि द्वारा उन्हें बार-बार नोटिस जारी किए जाने के बावजूद - किरायेदार लॉकर किराया बकाया का भुगतान करने में विफल रहे हैं, चूंकि किरायेदार लॉकर के किराए का बकाया भुगतान करने में विफल रहे हैं, इसलिए हम 27.03.2024 को संबंधित शाखा परिसर में सायं 04:00 बजे उक्त लॉकर को तोड़ने के लिए बाध्य हैं।

यह सार्वजनिक सूचना किराएदारों के वारिसों/कानूनी उत्तराधिकारियों को है, यदि लागू हो। इसके अलावा, करूर वैश्य बैंक लिमिटेड के पास बिना किसी पूर्व सूचना के ब्रेक ओपनिंग की तिथि को बदलने का अधिकार है।

क्र. सं.	किराएदार का नाम	लॉकर नं.	देय राशि (रु.) जीएसटी सहित
1.	श्री पंकज चौहान पुत्र श्री नेत्र राम सिंह श्रीमती तुलसी चौहान पत्नी श्री पंकज चौहान	4112002b011	6726.00/-

दिनांक : 07.03.2024, स्थान: दिल्ली हस्ता/- शाखा प्रमुख - करूर वैश्य बैंक

Karur Vysya Bank — Smart way to bank

रोहिणी (4104): सी-3/10, भूतल, सैक्टर-14 प्रशांत विहार, रोहिणी, दिल्ली-110085
सम्पर्क नं. : 011-27550455, 011-27550454
9953140657 | ईमेल: rohini@kvbmail.com

सुरक्षित जमा लॉकर तोड़ने की सार्वजनिक सूचना

निम्नलिखित किरायेदारों ने रोहिणी(4104) शाखा से सुरक्षित जमा लॉकर सुविधा का लाभ उठाया है और निर्धारित समय के भीतर इसे नवीनीकृत करने में विफल रहे हैं, करूर वैश्य बैंक लि द्वारा उन्हें बार-बार नोटिस जारी किए जाने के बावजूद - किरायेदार लॉकर किराया बकाया का भुगतान करने में विफल रहे हैं, चूंकि किरायेदार लॉकर के किराए का बकाया भुगतान करने में विफल रहे हैं, इसलिए हम 21.03.2024 को संबंधित शाखा परिसर में सायं 04:00 बजे उक्त लॉकर को तोड़ने के लिए बाध्य हैं।

यह सार्वजनिक सूचना किराएदारों के वारिसों/कानूनी उत्तराधिकारियों को है, यदि लागू हो। इसके अलावा, करूर वैश्य बैंक लिमिटेड के पास बिना किसी पूर्व सूचना के ब्रेक ओपनिंग की तिथि को बदलने का अधिकार है।

क्र. सं.	किराएदार का नाम	लॉकर नं.	देय राशि (रु.) जीएसटी सहित
1.	श्री परवीन गुप्ता	4104002B081	6726/-
2.	श्री मलिक पी.पी	4104007F015	56640/-
3.	श्री राम किशोर	4104003D119	20650/-
4.	श्रीमती सविता गर्ग	4104006F015	28320/-
5.	श्री हरमिंदर सिंह	4104002B061	5310/-

दिनांक : 06.03.2024, स्थान: दिल्ली हस्ता/- शाखा प्रमुख - करूर वैश्य बैंक

Arcil

एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी (इंडिया) लिमिटेड (एआरसीआईएल)
विभिन्न एआरसीआईएल ट्रस्टों के ट्रस्टी के रूप में अपनी क्षमता में कार्य करते हुए
एआरसीआईएल कार्यालय: द रूबी, 10वीं मंजिल, 29, सेनापति बापट मार्ग, दादर (पश्चिम) मुंबई-400 028
शाखा कार्यालय: कार्यालय नं. 1008, 11वीं मंजिल, वेस्टएंड मॉल, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, जनकपुरी, पश्चिम नई दिल्ली-110058
वेबसाइट : https://auction.arcil.co.in; CIN-U65999MH2002PLC134884

सिक्युरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के नियम 6, 8 और 9 के नियमों को पढ़ते हुए, सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल एसेट्स एंड एन्फोर्समेन्ट ऑफ सिक्युरिटी इंटरेस्ट एक्ट 2002 (सरफेसी एक्ट) के अधीन शक्तियों का प्रयोग करते हुए ऑनलाइन ई-नीलामी के माध्यम से बिक्री के लिए सार्वजनिक सूचना।

सामान्य जनता को और विशेष रूप से उधारकर्ता (ओं)/गैरेन्टर (ओं) /बंधककर्ता (ओं) को सूचित किया जाता है कि निम्नवर्णित अचल संपत्ति/संपत्तियां एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी (इंडिया) लिमिटेड के पास गिरवी रखी/प्रभारित की गई है, विभिन्न एआरसीआईएल ट्रस्टी (''एआरसीआईएल'') के ट्रस्टी के रूप में अपनी क्षमता में कार्य करते हुए (पंजीकृत असाइनमेंट समझौतों के माध्यम से वित्तीय परिसंपत्ति के असाइनमेंट के अनुसार), को अतिरिक्त ब्याज, शुल्कों और लागत आदि सहित बकाया राशि की वसूली के लिए ऑनलाइन ई-नीलामी के माध्यम से ''जहां है'', ''जैसा है'', और ''जो कुछ भी है'' और ''बिना किसी सहारा के आधार पर'' पर बेचा जाएगा, जैसा कि सिक्युरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 (''रूल्स'') के नियम 6, 8 और 9 के नियमों को पढ़ते हुए, सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल एसेट्स एंड एन्फोर्समेन्ट ऑफ सिक्युरिटी इंटरेस्ट एक्ट 2002 (''एक्ट'') के प्रावधानों के संदर्भ में नीचे बताया गया है।

उधारकर्ता / सह-उधारकर्ता/ गैरेन्टर / बंधककर्ता के नाम	एलएएन नंबर और विक्रय बैंक	ट्रस्ट का नाम	सरफेसी सूचना की तिथि 07.04.2021 के अनुसार बकाया राशि	कब्जे का प्रकार और तिथि	निरीक्षण की तिथि	संपत्ति का प्रकार	अर्नेस्ट मनी डिपोजिट (ईएमडी)	आरक्षित मूल्य	ई-नीलामी की तिथि और समय
उधारकर्ता: 1. कृष्ण कांत सिंह 2. मोती रानी देवी 3. सौरभ कुमार मिश्रा (गैरेन्टर)	कर्ज खाता क्र. HHLNOD00401200 इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड (आईएचएफएल)	एआरसी आईएल-सीपीएल-II-ट्रस्ट	रू. 19,76,607/- (रुपए उन्नीस लाख छिहत्तर हजार छह सौ सात मात्र) 31.03.2021 तक + अतिरिक्त ब्याज + कानूनी व्यय	वास्तविक कब्जा 31.07.2023 को	अनुरोध पर व्यवस्था की जाएगी	फ्रीहोल्ड - 500 वर्ग फीट	रू. 1,42,500/- (रुपए एक लाख बयालीस हजार पांच सौ मात्र)	रू. 14,25,000/- (रुपए चौदह लाख पच्चीस हजार मात्र)	08.04.2024 को दोपहर 03.00 बजे

नीलाम की जा रही सुरक्षित संपत्ति का विवरण : **मोतीरानी देवी के स्वामित्व वाली संपत्ति:**
अचल संपत्ति 500 वर्ग मीटर की है और निम्नानुसार सीमाबद्ध है, संपत्ति बेअरिंग फ्लैट नंबर एसएफ-2 (एम.आई.जी.) के सभी भाग और खंड, जिसका कुल कवर्ड क्षेत्रफल 46.45 वर्ग मीटर जो कि 500 वर्ग फीट के बराबर है, दूसरी मंजिल पर (छत के अधिकारों के साथ), बाईं तरफ पीछे की ओर, प्लॉट नंबर एफ-39 पर निर्मित, ''ब्लॉक-एफ'', एसएलएफ वेद विहार में स्थित, लोनी, गाजियाबाद- 200111, उत्तर प्रदेश। फ्लैट नंबर एसएफ-2 निम्नानुसार सीमाबद्ध है:
पूर्व : दूसरों की संपत्ति — उत्तर : फ्लैट नंबर एसएफ-3(एलआईजी) और प्लॉट नंबर एफ-40
पश्चिम : सार्वजनिक पैसेज और सीढ़ियाँ — दक्षिण : दूसरों की संपत्ति

लंबित मुकदमे जिनकी एआरसीआईएल को जानकारी है	शून्य	ज्ञात ऋणभार/बकाया जिनकी एआरसीआईएल को जानकारी है	शून्य
बोली जमा करने की अंतिम तिथि	उसी दिन नीलामी से 2 घंटे पहले	बोली वृद्धि की राशि	जैसा कि बोली के दस्तावेज में उल्लिखित है
डिमांड ड्राफ्ट जिसके नाम से बनाया जाना है:	एआरसीआईएल-सीपीएस-II-ट्रस्ट	सममूल्य पर देय	
आरटीजीएस के विवरण	एआरसीआईएल-सीपीएस-II-ट्रस्ट, ट्रस्ट खाता संख्या - 57500001169088, एचडीएफसी बैंक लिमिटेड, शाखा: कमला मिल, मुंबई, आईएफएससी कोड: HDFC0000542		
संपर्ककर्ता का नाम और नंबर	संजीव गोदारा - 9829322474 (sanjeevkumar22@indiabulls.com), विक्रम सिंह तंवर - 9004173256 (vikram.tanwar@arcil.co.in), शैलेश गायकवाड़ - 9867929121 (shailesh.gaikwad@arcil.co.in), महेश बंगेरा - 9004173256 (mahesh.bangera@arcil.co.in).		

नियम और शर्तें:
1. नीलामी बिक्री ई-नीलामी के माध्यम से वेबसाइट https://auction.arcil.co.in के माध्यम से और बोली दस्तावेज के नियमों और शर्तों के अनुसार और उसमें निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार की जा रही है।
2. प्राधिकृत अधिकारी (''एओ'')/एआरसीआईएल को इंटरनेट कनेक्टिविटी, नेटवर्क की समस्याओं, सिस्टम क्रैश होने, बिजली न होने आदि के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।
3. नीलामी के किसी भी चरण में, ''एओ'' बिना कोई कारण बताए और बिना किसी पूर्व सूचना के प्रस्ताव को स्वीकार/अस्वीकार/संशोधित/ बोली रद्द कर सकता है या नीलामी को स्थगित कर सकता है।
4. सफल क्रेता/बोलीदाता को किसी भी वैधानिक बकाया, कर, देय शुल्क, खरीद पर लागू जीएसटी, स्टांप शुल्क, पंजीकरण शुल्क आदि का भुगतान करना होगा, जिसका लागू कानून के अनुसार सुरक्षित संपत्ति को उसके पक्ष में हस्तांतरित/सुपुर्द करने के लिए इसका भुगतान करना आवश्यक है।
5. इच्छुक बोलीदाताओं को अपनी बोली जमा करने से पहले, सुरक्षित परिसंपत्तियों को प्रभावित करने वाले दायित्वों, सुरक्षित संपत्ति के टाइटल और वैधानिक बकाया आदि सहित दावों/अधिकारों/बकाया के संबंध में अपनी स्वतंत्र पूछताछ/उचित आकलन करना चाहिए। नीलामी विज्ञापन में एआरसीआईएल की कोई प्रतिबद्धता या कोई प्रतिनिधित्व शामिल नहीं है और न ही होगा। एआरसीआईएल का प्राधिकृत अधिकारी तृतीय पक्ष के किसी भी दावों/अधिकारों/बकाया के लिए किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं होगा।
6. समाचार-पत्र में प्रकाशित नीलामी सूचना में निर्दिष्ट विवरण अधोहस्ताक्षरी की सर्वोत्तम जानकारी के अनुसार बताए गए हैं; हालांकि अधोहस्ताक्षरी किसी भी त्रुटि, गलत विवरण या चूक के लिए जिम्मेदार/उत्तरदायी नहीं होगा।
7. उधारकर्ता/गैरेन्टर/बंधककर्ता, जो उक्त बकाया राशि के लिए उत्तरदायी हैं, इस बिक्री सूचना को उपरोक्त उल्लिखित नीलामी बिक्री के आयोजन के बारे में सिक्युरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स के नियम 8 और 9 के तहत सूचना के रूप में मानेंगे।
8. यदि ऊपर निर्धारित नीलामी किसी भी कारण से विफल हो जाती है, तो एआरसीआईएल को सुरक्षित संपत्ति को नियमों और अधिनियम के नियम 8(5) के प्रावधानों के तहत किसी अन्य तरीके से बेचने का अधिकार है।

स्थान : गाजियाबाद
दिनांक : 27.02.2024

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी (इंडिया) लिमिटेड
एआरसीआईएल-सीपीएस-II-ट्रस्ट के ट्रस्टी

दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर हादसे में दो की मौत

गाजियाबाद। थाना मसूरी इलाके में दिल्ली मेरठ एक्सप्रेस वे पर भीषण सड़क हादसा हुआ है। दिल्ली से मेरठ की तरफजाते समय यह हादसा हुआ है। थाना मसूरी क्षेत्र में मेरठ एक्सप्रेसवे पर आगे चल रहे छोटे हाथी का टायर अचानक से फट गया। इसके बाद इसके पीछे चल रही स्विफ्ट कार और इको कार आपस में भिड़ गई।

हादसे में छोटा हाथी के ड्राइवर की मौत हुई है। वहीं कार में सवार दंपति में से पत्नी की मौत हुई है। पति और ड्राइवर घायल है। वहीं इको कार में मौजूद एक महिला भी घायल हुई है। गाजियाबाद में थाना मसूरी प्रभारी नरेश शर्मा ने बताया कि दिल्ली मेरठ एक्सप्रेसवे पर आगे जा रहे छोटे हाथी का टायर फट गया।

अवैध संबंध के शक में पत्नी की हत्या, गिरफ्तार

नोएडा। नोएडा में पत्नी के चरित्र पर संदेह के चलते एक हंसता खेलता परिवार उजड़ गया। संदेह के चलते एक युवक ने अपनी पत्नी की हत्या कर दी। पत्नी की हत्या करने के आरोपी पति को थाना सेक्टर-63 पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। थाना सेक्टर-63 प्रभारी अवधेश प्रताप सिंह ने बताया कि चोटपुर कॉलोनी में रहने वाली पूजा 3 मार्च को अपने कमरे में बिस्तर पर मृत अवस्था में पड़ी हुई मिली थी। उसके गले पर गला घोंटने के के निशान थे। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में गला घोटने की वजह मृत्यु का कारण सामने आया था। मामले में जांच पड़ताल में सामने आया कि मृतक पूजा का 14 वर्ष पूर्व बदायूं निवासी देवपाल के साथ विवाह हुआ था। देवपाल ने चोटपुर कॉलोनी में चार मंजिला घर बना रखा था। कुछ समय पूर्व देवपाल को अपनी पत्नी के अवैध संबंधों का शक हुआ। इस बात को लेकर दोनों पति पत्नी के बीच वाद विवाद रहने लगा। इसके बाद देवपाल अपनी पत्नी पूजा पर गांव चलने का दबाव डालने लगा। इस पर पूजा ने गांव जाने से साफइनकार कर दिया।

एक करोड़ की नकली दवा जब्त

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

- एक गिरफ्तार, नामी कंपनियों के नाम पर बनाई जा रही थी

गाजियाबाद के साहिबाबाद क्षेत्र में औषधि विभाग, क्राइम ब्रांच और स्थानीय पुलिस ने औद्योगिक क्षेत्र में रेड करके नकली दवाई बनाने वाली एक कंपनी का पर्दाफाश किया है। इस मामले में लाइव रेड का वीडियो भी सामने आया है। यहां से एक करोड़ रुपए से अधिक की नकली दवाइयां बरामद हुई है। साथ ही एक व्यक्ति को भी गिरफ्तार किया गया है।

प्रारंभिक जांच में पता चला कि कि यह दवाइयां नामी गिरामी अंतराष्ट्रीय कंपनी के नाम से बनाई जा रही थी। यहां बनने वाली दवाइयां शुगर, गैस और बीपी में काम आती है। ड्रग इंस्पेक्टर आशुतोष मिश्रा ने बताया की औषधि विभाग को सूचना मिली की गाजियाबाद के थाना साहिबाबाद के औद्योगिक क्षेत्र में एक फैक्ट्री में नकली दवाइयां बनाई जा रही है। इस सूचना पर औषधि विभाग ने गाजियाबाद पुलिस के साथ यहां पर रेड की। आशुतोष मिश्रा के मुताबिक, यहां पर दवाइयां उनको बनाने की मशीन और पैकेजिंग का सामान मिला।

दवा माफिया नामी ग्रामीण अंतराष्ट्रीय दवाई कंपनी जैसे लूपिन डॉक्टर रेडी के नाम से यहां नकली दवाई बना रहे थे। जब्त माल की कीमत 1 करोड़ 10 लाख रुपए है।

साथ ही विकास चौहान नाम के एक व्यक्ति को भी गिरफ्तार किया गया है। ड्रग इंस्पेक्टर आशुतोष मिश्रा के मुताबिक प्रारंभिक जांच में यह पता चला है कि यहां से बनाई गई दवाइयां कोलकाता की तरफ सप्लाई की जाती थी। यहां बनने वाली नकली दवाइयां गैस, शुगर और ब्लड प्रेशर में काम आती थी।

सफाई और सुविधाओं के मुद्दे पर टकराव हुआ तेज

● एलजी ने शाहदरा की कलंदर कॉलोनी का किया दौरा, बोले लोगों की दुर्दशा को बयां करना मुश्किल

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

शाहदरा स्थित कलंदर कॉलोनी का दौरा करते उपराज्यपाल वीके सक्सेना व अन्य।

उपराज्यपाल और मुख्यमंत्री में सियासी जंग तेज हो गई है। उपराज्यपाल अलग-अलग कॉलोनियों में बुनियादी सुविधाओं की कमी को उजागर कर रहे हैं। इसी कड़ी में उन्होंने मंगलवार को शाहदरा स्थित कलंदर कॉलोनी का दौरा किया और बुधवार को वहां की कुछ तस्वीरें मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को सोशल मीडिया पर साझा कर समस्याओं से अवगत कराया।

उन्होंने एक्स पर मुख्यमंत्री को संबोधित करते हुए कहा कि उपराज्यपाल होने के नाते ये मेरा संवैधानिक दायित्व और कर्तव्य है कि वह अपनी सरकार के मुख्यमंत्री के समक्ष जनता के मुद्दों को उजागर करें। इसके साथ ही दिल्ली के लोगों द्वारा झेली जा रही समस्याओं की तरफ उनका ध्यान आकर्षित करें। यह कुछ नया नहीं है। पदभार संभालने के पहले दिन से आज तक लगभग 650 दिनों में राष्ट्रीय राजधानी के विभिन्न इलाकों में 1600 किलोमीटर से अधिक पैदल चल कर स्थिति का जायजा लिया है। वह हमेशा मुख्यमंत्री को समस्याओं से अवगत कराता रहा हूं। वह ऐसा पिछले डेढ़ वर्षों से ऐसा करते आ रहे हैं। आगे भी करते रहेंगे।

उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने लिखा है कि मंगलवार शाम इसी सिलसिले में वह उत्तर-पूर्वी दिल्ली के शाहदरा स्थित कलंदर कॉलोनी पहुंचे। वहां की नर्क से भी बदतर बदहाली उन्होंने देखी। सड़क के नाम पर गड्ढे, जाम पड़ी नालियाँ, कचरे के ढेर और दुर्गंध के बीच रह रहे लोगों की दुर्दशा को शब्दों में बयां कर पाना संभव नहीं है। स्थानीय लोगों ने उन्हें बताया कि यहां लगभग 4 हजार घरों में 35-40 हजार लोग पशु की भांति जीवन जीने को मजबूर हैं। उपराज्यपाल ने कहा कि इस झुग्गी बस्ती में बुनियादी जनसुविधाएं देना डूसिब की जिम्मेदारी है, जिसके अध्यक्ष मुख्यमंत्री

कॉलोनी में खुली नालियां

सरकार के विषय हैं। उसमें एलजी का कोई लेना-देना नहीं है। अब किराड़ी, संगम विहार और बुराड़ी में जो विषय हैं वो तो चुनी हुई सरकार के विषय हैं। तो पहला सवाल है कि एलजी वहां क्यों गए।

दूसरी बात की एलजी अफसरों को भी लेकर गए। जब एलजी को मालूम है कि जो अफसर अपना काम नहीं कर रहे हैं, जिनकी कमियां खुद एलजी बता रहे हैं और फोटो खींच कर भेज रहे हैं तो उन अफसरों पर कार्रवाई करने की शक्ति तो एलजी के पास ही है। यह शक्ति मुख्यमंत्री और मेरे पास भी नहीं है और ना ही आतिशी के पास है। अब तो मुख्यमंत्री ने भी कह दिया कि आप उन अफसरों पर कार्रवाई करें, तो एलजी जिम्मेदार अफसरों पर कार्रवाई क्यों नहीं कर रहे हैं।

भारद्वाज ने कहा, चाहे वह दिल्ली, एमसीडी के कमिश्नर हों या बाढ़ नियंत्रण विभाग के प्रधान सचिव हों इन तीनों नौकरशाहों की गिनती एलजी के चहेते अफसरों में होती है। वो काम अच्छा नहीं कर रहे हैं, यह बात एलजी खुद कह रहे हैं। जगह-जगह उनके कामों के अंदर कमियां एलजी खुद निकाल रहे हैं। एलजी उन पर कार्रवाई क्यों नहीं कर रहे हैं।

खुद हैं। वहीं इलाके में साफ-सफाई की जिम्मेदारी निगम के पास है। ऐसे में वह दोबारा इलाके की कुछ हृदय-विदारक तस्वीरें में भेज रहे हैं। उम्मीद है कि मुख्यमंत्री इस मुद्दे पर सकारात्मकता दिखाएंगे।

उपराज्यपाल कुछ इलाकों की खस्ताहाल सड़कों और वहां फैली गंदगी की तस्वीर सोशल मीडिया पर साझा कर इशारों-इशारों में दिल्ली सरकार के विकास के दावों पर सवाल उठा रहे हैं। इस पर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने भी मंगलवार को पटलवार किया था। अब आम आदमी पार्टी ने एलजी से इस मुद्दे पर तीखे सवाल भी पूछे हैं और आरोप लगाया है कि वो जिम्मेदार अफसरों पर कार्रवाई नहीं करना चाहते हैं। केजरीवाल सरकार के मंत्री सौरभ भारद्वाज ने मीडिया से बातचीत में कहा कि अभी पिछले ही दिनों एलजी ने मुख्यमंत्री को पत्र लिख कर कहा कि ट्रांसफर से जुड़े जो विषय हैं वो चुनी हुई

झुग्गीवासियों के पुनर्वास योजना की देरी से उपराज्यपाल नाराज

● डीएसआईआईडीसी को नरेला, भोरगढ़ और बवाना औद्योगिक क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाएं दुरुस्त करने के निर्देश

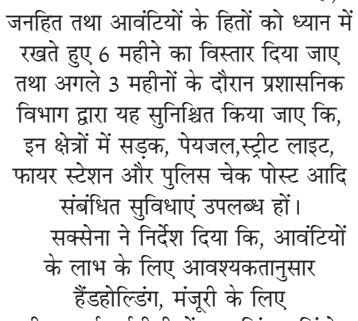

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने दिल्ली राज्य औद्योगिक एंव अवसंरचना विकास निगम लि. (डीएसआईआईडीसी) को उत्तर-पश्चिम दिल्ली के नरेला, भोरगढ़ और बवाना औद्योगिक क्षेत्र में, पुनर्वास योजना के तहत, आवंटियों को प्लॉट की शेष लागत जमा करने और फैक्ट्री भवन के निर्माण के लिए एनओसी आवेदन करने के लिए 6 महीने का विस्तार देने का निर्देश दिया है। एलजी ने केवल 4 महीने का विस्तार देने के डीएसआईआईडीसी के प्रस्ताव को खारिज करते हुए कहा कि समय सीमा को चार महीने तक बढ़ाने का प्रस्ताव, किसी तरह से उचित नहीं लगता है। उन्होंने कहा कि आवंटियों के लिए यह समय जरूरी काम करने के लिए, काफी कम है।

फाइल में उपराज्यपाल टिप्पणी की है, आवंटन के लिए राशि का भुगतान करने के बावजूद अगर आवंटी भूखंडों पर कब्जा नहीं कर रहे हैं या उन पर इकाइयों का निर्माण नहीं कर रहे हैं, तो यह स्पष्ट संकेत है कि बुनियादी सेवाओं की कमी उन्हें ऐसा करने से रोक रही है। उन्होंने चार महीने बीत जाने के बाद भी, क्षेत्रों में बुनियादी सेवाओं से संबंधित कार्रवाई रिपोर्ट पेश करने के लिए दिए उनके निर्देशों का पालन करने में, डीएसआईआईडीसी की विफलता पर नाराजगी व्यक्त की। उपराज्यपाल ने, अक्टूबर 2023 में डीएसआईआईडीसी को व्यवसाय करने में आसानी के लिए, बुनियादी ढांचे को अनुकूल बनाने के लिए कई निर्देश दिए थे। उनका कहना था कि यहां बीते 10 वर्षों से कोई भी उन्नयन कार्य नहीं किया गया। उन्होंने हैरानी जताई थी कि, 1996 में, जब सुप्रीम कोर्ट ने नॉन-कंफर्मिंग एरिया से उद्योगों को निर्दिष्ट औद्योगिक क्षेत्रों में स्थानांतरित करने का आदेश दिया था, लेकिन पिछले 26 वर्षों में, स्थिति जस की तस बनी रही, और वहां पर बुनियादी सुविधाएं भी नहीं हैं।

उपराज्यपाल ने, डीएसआईआईडीसी के नए प्रस्ताव, जिसमें निदेशक मंडल द्वारा समय सीमा में विस्तार की सिफारिश की गई थी, को ध्यानपूर्वक देखने पर पाया कि, वह इस बात का उल्लेख करने को मजबूर हैं कि, पूर्व में दिए उनके स्पष्ट निर्देशों के बावजूद विभाग द्वारा, औद्योगिक क्षेत्रों में बुनियादी सेवाओं के प्रावधान के संबंध में, कार्रवाई रिपोर्ट पेश नहीं की।

उपराज्यपाल ने अपने नोट में कहा, जनहित तथा आवंटियों के हितों को ध्यान में रखते हुए 6 महीने का विस्तार दिया जाए तथा अगले 3 महीनों के दौरान प्रशासनिक विभाग द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि, इन क्षेत्रों में सड़क, पेयजल,स्ट्रीट लाइट, फायर स्टेशन और पुलिस चेक पोस्ट आदि संबंधित सुविधाएं उपलब्ध हों।

सक्सेना ने निर्देश दिया कि, आवंटियों के लाभ के लिए आवश्यकतानुसार हैंडहोल्डिंग, मंजूरी के लिए डीएसआईआईडीसी में एक सिंगल विंडो स्थापित की जाएं।

संक्षिप्त समाचार

राजेंद्र को एनएचपीसी प्रबंध निदेशक का अतिरिक्त प्रभार

राजेंद्र प्रसाद गोयल

नई दिल्ली। भारत की अग्रणी जलविद्युत कंपनी और भारत सरकार की अनुसूची 'ए' उद्यम एनएचपीसी लिमिटेड के अध्यक्ष व निदेशक (वित्त) राजेंद्र प्रसाद गोयल ने 1 मार्च को प्रबंध निदेशक का अतिरिक्त प्रभार संभाला है। गोयल 18 नवंबर 1988 को वित्त पेशेवर के रूप में एनएचपीसी में शामिल हुए थे। गोयल इंस्टिट्यूट ऑफ कॉस्ट एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया के सदस्य हैं। गोयल एनएचपीसी के सहायक कंपनियों- लैंको तीस्ता हाइड्रो पावर लिमिटेड (एलटीएचपीएल), जल पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (जेपीसीएल), बुंदेलखंड सौर ऊर्जा लिमिटेड (बीएसयूएल) और एनएचपीसी रिन्यूएबल एनर्जी लिमिटेड (एनआरईएल) के अध्यक्ष और एनएचडीसी लिमिटेड, चिनाब वैली पावर प्रोजेक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (सीवीपीपीपीएल), रतले हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आरएचपीसीएल) और लोकतक डाउनस्ट्रीम हाइड्रोइलेक्ट्रिक कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एलडीएचसीएल) के बोर्ड में नामित निदेशक भी हैं। श्री गोयल स्टैंडिंग कॉन्फ्रेंस ऑफ पब्लिक इंटरप्राइजेज (स्कोप), नई दिल्ली के कार्यकारी बोर्ड के सदस्य भी हैं।

राजधानी की सीमाओं पर बढ़ाई गई सुरक्षा

नई दिल्ली। किसानों के दिल्ली चलो मार्च के मद्देनजर दिल्ली की सीमाओं पर बुधवार को यातायात प्रभावित रहा। टिकरी, सिंघु, गाजीपुर और दिल्ली-नोएडा सीमा पर बड़ी संख्या में सुरक्षाकर्मियों की तैनाती की वजह से सीमाओं पर वाहनों की लंबी कतारें लगने लगी है। पुलिस ने सीमाओं और शहर के अन्य हिस्सों में अवरोधक लगाए हैं और मध्य दिल्ली की ओर जाने वाली सड़कों पर वाहनों की गहन जांच शुरू कर दी है। दिल्ली पुलिस के मुताबिक, बड़ी संख्या में सुरक्षा कर्मी टिकरी, सिंघु और गाजीपुर सीमाओं के साथ-साथ रेलवे, मेट्रो स्टेशनों और बस अड्डों पर कड़ी निगरानी रख रहे हैं। एक अधिकारी ने बताया, तीनों सीमाओं पर सुरक्षा बढ़ा दी है। हालांकि कोई सीमा या मार्ग को बंद नहीं किया है लेकिन वाहनों की जांच की जाएगी। पुलिस उपायुक्त (बाहरी दिल्ली) जिमी चिराम ने बताया कि दिल्ली-हरियाणा सीमा पर बल पहले से ही तैनात है। उन्होंने कहा, किसानों के दिल्ली चलो मार्च को देखते हुए स्थिति पर नजर रख रहे हैं।

दिल्ली में धारा 144 लागू : पुलिस

नई दिल्ली। किसान दिल्ली की तरफ कूच कर दिए हैं। वे जंतर-मंतर पर धरना प्रदर्शन करना चाहते हैं। इसके लेकर दिल्ली पुलिस पूरी तरह से सर्तक है और धारा 144 लगा दिया है। पुलिस कहा वह किसी भी तरह की भीड़ या लोगों को एक जगह बड़ी संख्या में इकट्ठा नहीं देगी। किसान नेता सरवन सिंह पंढेर ने कहा, केएमएस और एकेएम (गैर-राजनीतिक) के प्रदर्शन का 23वां दिन है। ऐलान किया गया था कि दूसरे राज्यों से किसान आज दिल्ली कूच करेंगे लेकिन किसान दूर-दूर से आ रहे हैं इसलिए सभी किसान बुधवार को दिल्ली नहीं पहुंच सकेंगे।

ईडी ने सीएम के खिलाफ दर्ज कराई नई शिकायत

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● आप संयोजक को भेजे गए समन संख्या 4 से 8 का पालन नही करने से संबंधित है

प्रवर्तन निदेशालय ने धन शोधन जांच में समन का पालन नहीं करने के लिए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ मुकदमा चलाने का अनुरोध करते हुए एक अदालत में नई शिकायत दर्ज कराई है।

नई शिकायत धन शोधन निवारण अधिनियम की धारा 50 के तहत संघीय जांच एजेंसी द्वारा आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक केजरीवाल को भेजे गए समन संख्या 4 से 8 का पालन नहीं करने से संबंधित है। अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट (एसीएमएम) दिव्या मल्होत्रा की अदालत ने मामले की सुनवाई बृहस्पतिवार को तय की है। ईडी ने पूर्व में एक स्थानीय अदालत में याचिका दायर कर दिल्ली आबकारी नीति से जुड़ी धन शोधन जांच में केजरीवाल को जारी किए गए पहले तीन समन पर पेश नहीं होने के लिए उनके खिलाफ मुकदमा चलाने की मांग की थी। एसीएमएम मल्होत्रा की अदालत ने इस मामले (समन संख्या। से 3 के संबंध में) को 16 मार्च को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया है। केजरीवाल ने ईडी के इन सभी आठ समन को अवैध बताया था और पिछली बार संघीय एजेंसी को सूचित किया था कि उनसे 12 मार्च के बाद वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए पूछताछ की जा सकती है।

केजरीवाल ने कहा था, हमने कुछ भी गलत नहीं किया है और न ही हम छिपने की कोशिश कर रहे हैं। ईडी ने भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 174 (लोक सेवक के आदेश का पालन न करना) के साथ पठित धन शोधन निवारण कानून (पीएमएलए) की धारा 63 (4) के अलावा अन्य धाराओं के तहत नई शिकायत दर्ज कराई है।

दिल्ली-एनसीआर में 2.50 रुपये किलो सस्ती हुई सीएनजी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली-एनसीआर में सीएनजी के दामों में 2.50 रुपये प्रति किलो की कटौती की गई है। कीमतों में कटौती 7 मार्च की सुबह 6 बजे से लागू मानी जाएगी। दिल्ली एनसीआर में सिटी गैस कंपनी इंद्रप्रस्थ गैस लिमिटेड ने सीएनजी के दामों में समीक्षा करते हुए सीएनजी के दाम घटाने का फैसला लिया है।

दिल्ली में पहले सीएनजी 76.59 रुपये किलो में मिल रहा था जो अब 74.09 रुपये प्रति किलो में मिलेगा। नोएडा, ग्रेटर नोएडा और गाजियाबाद में पहले सीएनजी 81.20 रुपये प्रति किलो था जो अब 78.70 रुपये प्रति किलो में मिलेगा। गुरुग्राम में सीएनजी के दाम 82.62 रुपये प्रति किलो से घटकर 80.12 रुपये प्रति किलो हो गया है। रेवाड़ी में 81.20 रुपये प्रति किलो की जगह 78.70 रुपये प्रति किलो में सीएनजी मिलेगा। करनाल और कैथल में 82.93 रुपये से घटकर कीमत अब 80.43 रुपये प्रति किलो हो गई है।

इससे पहले मंगलवार को महानगर गैस लिमिटेड ने राहत देते हुए सीएनजी की कीमतों में बड़ी कटौती करने का ऐलान किया था।

भाजपा के सातों विधायकों का निलंबन रद्द

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● दी गई सजा पीठासीन अधिकारी द्वारा इस्तेमाल किए गए नियम में अत्यधिक है : उच्च न्यायालय

उच्च न्यायालय ने विधानसभा के बजट सत्र में उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना के पारंपरिक अभिभाषण में व्यवधान डालने को लेकर भारतीय जनता पार्टी के सात विधायकों को निलंबित करने के विधानसभाध्यक्ष के आदेश को बुधवार को रद्द कर दिया।

उच्च न्यायालय ने कहा कि दी गई सजा पीठासीन अधिकारी द्वारा इस्तेमाल किए गए नियम में अत्यधिक है। उच्च न्यायालय ने इन विधायकों को तत्काल प्रभाव से सत्र में हिस्सा लेने की अनमुति दी और कहा कि सजा यथोचित नहीं है। भाजपा विधायकों को राहत देते हुए न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद ने कहा कि सजा कानूनी ढांचे के अनुरूप नहीं है तथा विधानसभा अध्यक्ष ने इस विषय को विशेषाधिकार समिति के पास भेजते समय विवेक का इस्तेमाल नहीं किया। उच्च न्यायालय ने कहा, अध्यक्ष द्वारा अपने विवेक का स्वतंत्र रूप से इस्तेमाल, जिसका (दिल्ली विधानसभा की प्रक्रिया एवं कामकाज नियमावली के) 11वें अध्याय के नियम 70 में प्रावधान है, किए बगैर विशेषाधिकार समिति के पास इस मुद्दे को भेजने का सदन का निर्णय तथा विशेषाधिकार समिति का निर्णय आने तक इन याचिकाकर्ताओं को निलंबित करने का फैसला पांचवीं अनुसूची और 11वें अध्याय में निर्धारित प्रक्रिया का उल्लंघन है।

अदालत ने कहा, चूंकि याचिकाकर्ता पहले ही 14 बैठकों के लिए निलंबित रहे हैं, ऐसे में इस अदालत का मत है कि याचिकाकर्ताओं को तत्काल प्रभाव से सदन से फिर जुड़ने दिया जाना चाहिए।

भाजपा प्रत्याशी बांसुरी पर आप ने साधा निशाना

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

आम आदमी पार्टी ने नई दिल्ली से भाजपा प्रत्याशी बांसुरी स्वराज को उम्मीदवार बनाए जाने पर प्रश्न खड़ा करते हुए निशाना साधा है।

आप के वरिष्ठ नेता एवं नई दिल्ली लोकसभा प्रत्याशी सोमनाथ भारती ने बुधवार को प्रेसवार्ता में आरोप लगाया कि बांसुरी स्वराज ने ललित मोदी को विदेश भागने में मदद की और कोर्ट की डबल बेंच का फैसला आने से पहले उनका पासपोर्ट रिन्यू कराने और विदेश भेजा। उन्होंने कहा कि बांसुरी स्वराज को इस बारे में सफाई देनी चाहिए। आप नेता ने नई दिल्ली लोकसभा सीट से 10 साल से सांसद और मंत्री मीनाक्षी लेखी का टिकट काटकर बांसुरी स्वराज को देने पर सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि ललित मोदी ने देश में हजारों करोड़ों का घोटाला किया है और आज कानून से बचने के लिए देश से फरार है। ऐसे में उसके भागने में किसने मदद करने का आरोप है।

सोमनाथ भारती ने कहा कि यह बेहद चिंताजनक है।

बांसुरी स्वराज को बताना चाहिए कि क्या ललित मोदी जैसे व्यक्ति को बचाना देशद्रोह नहीं है और क्या भाजपा ने उनको ललित मोदी की मदद करने के लिए कहा था।

भाजपा ने ऐसे व्यक्ति को लोकसभा का उम्मीदवार बनाया है, जोकि बहुत चिंताजनक विषय है। सोमनाथ भारती ने बासुंरी स्वराज से पूछे प्रश्नों में बांसुरी स्वराज बताएं कि क्या ललित मोदी ईमानदार आदमी है, क्या बीजेपी ने बांसुरी स्वराज को ललित मोदी की मदद करने के लिए कहा था।

बेतुकी बयानबाजी कर रहे सोमनाथ भारती : प्रवीण शंकर

नई दिल्ली । दिल्ली भाजपा के प्रवक्ता प्रवीण शंकर कपूर ने आप नेता सोमनाथ भारती पर निशाना साधते हुए कहा कि चुनाव से पहले हार मान चुकी पार्टी के वे निराश हताश प्रत्याशी हैं जो चुनाव में दिखने के लिए बेतुकी बयानबाजी कर रहे हैं। कपूर ने कहा है कि आम आदमी पार्टी के पास दिल्ली में सरकार एवं नगर निगम में सत्ता है पर उसके पास लोकसभा की 7 सीटें खुद लड़ने का अस्तित्व नहीं है, वह कांग्रेस के रहमो करम पर चुनाव में उतर रही है, लगभग हर दिन आम आदमी पार्टी के नेता कार्यकर्ता भाजपा में शामिल हो रहे हैं। दिल्ली भाजपा प्रवक्ता ने कहा है कि सोमनाथ भारती एक महिला विरोधी मानसिकता के व्यक्ति हैं जिनपर महिला उत्पीड़न के आरोप हैं। बांसुरी स्वराज के नई दिल्ली से प्रत्याशी बनाये जाने के बाद आप प्रत्याशी सोमनाथ भारती बौखला गये हैं और खुद को चुनावी अखाड़े के बाहर पा रहे हैं।

अंबेडकर स्टेडियम में नगर निगम के शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित बाल मेला में शामिल हुई मेयर शैली ओबरॉय व अन्य।

अंतरराष्ट्रीय खाद्य एवं आतिथ्य मेले में नए सुझावों और स्टार्टअप पर जोर

प्रगति मैदान में 7 से 11 मार्च तक चलने वाले इस मेले के मुख्य आकर्षणों में नए उत्पादों को लॉन्च व प्रदर्शित करना शामिल

● निवेशक और विक्रेता को मिलेगा सांझा मंच

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राजधानी दिल्ली में हर रोज कुछ न कुछ नया होता रहता है, कभी राजनीतिक घटनाक्रम, कभी सामाजिक गतिविधियां, तो कभी खेल से जुड़ी स्पर्धा।

यदि फिर भी किसी को नया चाहिए, तो प्रगति मैदान में खाने के शौकिनों के लिए 38वाँ आहार अंतर्राष्ट्रीय खाद्य एवं आतिथ्य मेला बृहस्पतिवार से शुरू हो रहा है जहां देश दुनिया के तरह-तरह के नए व स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद ले सकते हैं। 7 से 11 मार्च तक आयोजित होने वाले इस मेले के मुख्य आकर्षणों में नए उत्पादों को लॉन्च व प्रदर्शित करना शामिल है। देश और विदेश से 1800 से अधिक उत्पादक अपने स्टॉल के माध्यम से इस मेला का हिस्सा होंगे।

यह आहार मेला भारत का सबसे बड़ा आहार एवं आतिथ्य मेला है जो बिजनेस टू बिजनेस (बी2बी) मेले के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। अन्य वर्षो की तरह इस बार भी मेले में हरियाणा राज्य के खाद्य उत्पादों की स्टालों की अधिकता रहेगी।

इस बार मेला में हरियाणा के 14 स्टॉल रखे गए हैं। इस आहार मेले का मकसद होटल उद्योग और पर्यटन क्षेत्र को दिल्ली-एनसीआर समेत अन्य जगहों में बढ़ावा देना है और नये आइडिया व स्टार्टअप को नई तकनीक के साथ सामने लाने का है। इस मेले के माध्यम से खाद्य एवं पेय पदार्थ, खाद्य और पेय उपकरण, जिसमें उत्पाद को तैयार करने से लेकर उसकी प्रोसेसिंग, पैकेजिंग और उत्पाद से जुड़ी तकनीक, एक्वाकल्चर और सी फूड (समुद्री उत्पाद) ,डेयरी उत्पाद को प्रदर्शित करना शामिल है। यहां पर थोक विक्रेता, कैटरर्स, होटल इंडस्ट्री से जुड़े लोग और रेस्तरां मालिक जुटेंगे।

हरियाणा राज्य की ओर से मुख्य रूप से चावल, दूध, सोया, मशरूम से बने विभिन्न उत्पाद, पैकेजिंग मैटेरियल और अन्य खाद्य पदार्थों से सम्बद्ध उपकरणों को प्रदर्शित किया जाएगा। हरियाणा की ओर से सभी स्टॉल प्रगति मैदान के भारत मंडपम के हॉल नंबर 4 के भूतल पर लगाए गए हैं। इस मेले का आयोजन भारत व्यापार संवर्द्धन संगठन (आईटीपीओ) द्वारा किया जा रहा है। इसके अलावा इस मेले में फूलों की खेती, आतिथ्य व सजावटी सामान भी मेले का प्रमुख आकर्षण होंगे। इस मेले की लोकप्रियता हाल ही के वर्षों में तेजी से बढ़ी है। वैश्विक विक्रेताओं के लिए भी यह मेला प्रमुख गन्तव्य बनकर उभरा है। यह मेला भारत मंडपम के हॉल 1 से 12, 12ए और हॉल 14 में लगाया जा रहा है। भैरों रोड से गेट न. 1 व 4 से वहीं मथुरा रोड से गेट न. 6 व 10 से इस मेले के लिए प्रवेश किया जा सकता है।

ऐसे पहुंचे यहां....

आहार अंतर्राष्ट्रीय खाद्य एवं आतिथ्य मेला प्रगति मैदान भारत मंडपम में आयोजित किया जाएगा। यहां पहुंचने के लिए नजदीकी मेट्रो स्टेशन सुप्रीम कोर्ट मेट्रो स्टेशन है। सुप्रीम कोर्ट मेट्रो स्टेशन से भारत मंडपम की दूरी मात्र 900 मीटर है।

पाकिस्तानी हिंदू शरणार्थियों को डीडीए ने जारी किया नोटिस

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली विकास प्राधिकरण ने यमुना डूब क्षेत्र में गुरुद्वारा मजनूं का टीला के निकट रहने वाले पाकिस्तान के हिंदू शरणार्थियों को नोटिस जारी कर क्षेत्र खाली करने का निर्देश दिया है।

स्थानीय निवासियों ने बुधवार को यह दावा किया। राष्ट्रीय हरित अधिकरण के आदेश के बाद 7 और 8 मार्च को अतिक्रमण हटाने का अभियान चलाना प्रस्तावित है। सूत्रों ने बताया कि पुलिस बल की अनुपलब्धता के कारण अभियान स्थगित कर दिया गया है। मजनूं का टीला की एक पाकिस्तानी हिंदू शरणार्थी सोना दास ने कहा कि पूरे शिविर को सूचित कर दिया गया है और सभी को नोटिस दिए गए हैं। दास ने कहा, हमें इस क्षेत्र को जल्द से जल्द खाली करने के लिए समय दिया गया है। पूरे शिविर को सूचित कर दिया गया है और हम सभी को नोटिस दिए गए हैं।

हम अभी दिल्ली बाढ़ के दौरान हुए नुकसान से उबरे हैं और अब वे यहां बुलडोजर चलाने वाले हैं। लोग इतने कम समय में कैसे खाली करें और उन्हें कहां जाएं। मजनू का टीला में रहने वाले पाकिस्तानी हिंदू शरणार्थी कन्हैया लाल ने कहा, हमें कल ही सूचित किया गया था कि यहां तोड़फोड़ होगी। कुछ अधिकारी मंगलवार को यहां आए और हमारे घरों के बाहर नोटिस चिपका दिया। इस क्षेत्र में लगभग सभी को मंगलवार रात को नोटिस मिला। अभी किसी ने अपना मकान खाली नहीं किया है।

नारी शक्ति को आत्मनिर्भर बनाने के लिए भारत व हरियाणा सरकार निरंतर प्रयासरत

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में जिला स्तरीय लखपति दीदी सम्मेलन में कही यह बात

सम्मेलन में उपस्थित एसएचजी की महिलाओं को दिया गया तकनीकी प्रशिक्षण

आजादी के अमृत काल में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं में कौशल विकास की बढ़ोतरी कर उन्हें लखपति दीदी बनाने की कृत संकल्पना के साथ बुधवार को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य पर जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। सिविल लाइन्स स्थित स्वतंत्रता सेनानी भवन में आयोजित कार्यक्रम में पूर्व सांसद एवं बीजेपी के संसदीय बोर्ड की सदस्य डॉ. सुधा यादव बतौर मुख्यातिथि उपस्थित रही। अन्य स्थानों पर भी इस तरह के कार्यक्रम हुए।

जिला में सभी स्थानों पर आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राष्ट्रीय स्तर व मुख्यमंत्री मनोहर लाल के करनाल में राज्य स्तरीय समारोह में दिए गए संबोधन का वर्चुअल प्रसारण भी किया गया। जिला स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. सुधा यादव ने कहा कि नारी शक्ति के पास हुनर की कमी नहीं है। बस जरूरत है उनको सही प्लेटफार्म देने की। उन्होंने कहा कि पिछले दस वर्षों में देश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व हरियाणा में

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में जिला स्तरीय लखपति दीदी सम्मेलन में बोलतीं डा. सुधा यादव।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने नारी शक्ति के जीवन को सहज व सरल बनाने के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को ना केवल गंभीरता से धरातल पर उतारा है, बल्कि वे निर्धारित समयावधि में अपने लक्ष्यों तक पहुंचे इसके लिए उन योजनाओं की निरन्तर मोनिटरिंग भी कर रहे हैं।

डॉ. सुधा यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत सरकार विभिन्न प्रभावी योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण की दिशा में लगातार काम कर रही है। देश की सीमाओं से लेकर युद्धपोतों पर तैनात होने तक, भारतीय महिलाएं शस्त्र बलों में हर क्षेत्र के अवरोधों को ध्वस्त कर रही हैं। उन्होंने कहा कि भारत व हरियाणा सरकार के प्रयासों से स्वयं सहायता समूह की बहनों को अपने उत्पादों को बेचने के लिए बेहतर मॉर्केट उपलब्ध कराए गए हैं। वहीं वे अपने उत्पादों की गुणवत्ता में बढ़ोतरी कर लखपति दीदी बनने की ओर अग्रसर

हो इसके लिए मुद्रा लोन भी उपलब्ध कराया जा रहा है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला परिषद के सीईओ जगनिवास ने कहा कि राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) की महिलाओं के उत्थान के लिए विभाग द्वारा उन्हें हर संभव सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। उन्होंने एसएचजी की महिलाओं से आह्वान करते हुए कहा कि अगर आपको अपने उत्पादों के साथ बिजनेस को बड़ा स्वरूप देना है तो आपको बड़े ब्रांड के साथ कंपिट करना होगा।

अतिरिक्त निगमायुक्त डॉ. बलप्रीत सिंह ने की बैंक प्रतिनिधियों के साथ बैठक

गुरुग्राम। नगर निगम गुरुग्राम के अतिरिक्त आयुक्त डॉ. बलप्रीत सिंह ने बुधवार को निगम कार्यालय में विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधियों के साथ आयोजित बैठक में एक बार फिर स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी बैंक पीएम स्वनिधि योजना के तहत उनके यहां प्राप्त होने वाले आवेदनों पर त्वरित कार्रवाई करके लाभार्थियों के खाते में ऋण राशि भिजवाना सुनिश्चित करें। डॉ. सिंह ने कहा कि पीएम स्वनिधि योजना भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण योजना है तथा हम सभी का यह कर्तव्य बनता है कि हम योजना के तहत पात्र लाभार्थियों को बिना किसी बहानेबाजी के लाभ देना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि जिन लाभार्थियों के दस्तावेज बैंकों के पास जमा हो गए हैं, उनकी ऋण राशि का डिस्बर्समेंट 1-2 दिन में सुनिश्चित किया जाए। योजना के तहत बैंकों को जो लक्ष्य दिया गया है, उस पर गंभीरता से कार्रवाई करें। डा. सिंह ने स्पष्ट किया कि कोताही किसी भी सूरत में ना की जाए।

संक्षिप्त समाचार

रविंद्र कुमार ने संभाला नार्थ गुरुग्राम का एसडीएम पदभार

गुरुग्राम। हरियाणा सिविल सर्विस 2016 बैच के अधिकारी रविंद्र कुमार ने बुधवार को एसडीएम नार्थ गुरुग्राम का पदभार ग्रहण कर लिया है। एसडीएम रविंद्र कुमार ने पदभार संभालने उपरांत डीसी निशांत कुमार यादव के साथ शिष्टाचार भेंट करते हुए जिला प्रशासन की ओर से क्रियान्वित योजनाओं को प्रभावी रूप से निभाते हुए अपनी ड्यूटी का सजगता से निर्वहन करने की बात कही। रविंद्र कुमार हाल ही में रेवाड़ी से स्थानांतरित होकर गुरुग्राम आए हैं। एसडीएम रविंद्र कुमार ने कहा कि सरकार व प्रशासन की ओर से जनसेवा में निभाई जा रही जिम्मेदारी को वे बखूबी निभाएंगे और प्रयास रहेगा कि आमजन के हितों को मद्देनजर रखते हुए वे अपनी प्रशासनिक जिम्मेदारी के साथ कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि डीसी के नेतृत्व में वे गुरुग्राम जिला प्रशासन की कार्यशैली को गुणवत्तापरक बनाए रखते हुए जन सेवाओं को प्रदान करने में सक्रियता रखेंगे।

केआर मंगलम यूनिवर्सिटी में तीन दिवसीय कार्यक्रम शुरू

सोहना। सोहना- गुरुग्राम मार्ग पर स्थित केआर मंगलम यूनिवर्सिटी में हैक केआरएमयू 3.0 कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम कंप्यूटर

विज्ञान शाखा द्वारा आयोजित किया गया है। जिसमें देश के विभिन्न यूनिवर्सिटी व कॉलेजों के करीब 600 विद्यार्थी हिस्सा ले रहे हैं। मंगलवार से केआर मंगलम यूनिवर्सिटी में तीन दिवसीय कार्यक्रम द्वारा विधिवत उदघाट्न यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉक्टर रघुवीर सिंह, डीन ऑफ रिसर्च डॉक्टर राकेश कुमार सिन्हा, यूनिवर्सिटी रजिस्ट्रार डॉक्टर उदय प्रकाश आदि ने दीप प्रज्वलित करके किया गया था। अतिथियों के पहुंचने पर आयोजकों द्वारा बुक्के देकर उनका स्वागत किया गया था। कार्यक्रम कई चरणों में आयोजित किया था। जिसमें विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का बखूबी प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में जजों व सलाहकारों द्वारा परियोजनाओं का मूल्यांकन करके शीर्ष 50 टीमों का चयन किया है। जिनको सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्र्म की संयोजिका डॉक्टर श्वेता बंसल व सह संयोजक डॉक्टर अमर सारस्वत ने बताया कि कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी का योगदान है। यह कंप्यूटर व इंजीनियरिंग विज्ञान का केंद्र है। जिसमें विद्यार्थियों को काफी फायदा मिलेगा।उन्होंने यह भी बताया कि कार्यक्रम में विद्यार्थियों को सम्मानित भी किया जाएगा।

बिजली विभाग ने की रिकॉर्ड वसूली, चोरी पर कसेगी लगाम

सोहना। बिजली विभाग ने डिफाल्टर उपभोक्ताओं पर लगाम कसना आरम्भ कर दिया है। विभाग ने पांच हजार से अधिक बकाया बिल की वसूली करना शुक्र कर दिया है। जिसके लिए निगम के कर्मचारी उपभोक्ताओं के घरों व दुकानों में पहुंचकर वसूली करने में जुटे हैं। बिजली के कार्यकारी अधिकारी के अनुसार बिजली विभाग का करीब 41 करोड़ रुपये की राशि डिफाल्टर उपभोक्ताओं के जिम्मे वर्षों से बकाया है। जिसकी अदायगी उपभोक्ताओं ने आज तक भी नहीं ऐसे उपभोक्ताओं में निजी व सरकारी उपभोक्ता शामिल हैं। वहीं विभाग ने डिफॉल्टरों से बकाया राशि वसूलने का अभियान छेड़ दिया है। वसूली करने के लिए कई टीमों का गठन भी किया गया है। जो उपभोक्ताओं से वसूली करने में जुटी हुई हैं। बिजली निगम ने फरवरी माह में 22 करोड़ रुपये की वसूली करके रिकॉर्ड कायम किया है। जबकि छह मार्च तक करीब 10 करोड़ की वसूली की है। सरकारी विभागों से कुल करोड़ की वसूली की है। जिनके जिम्मे कोई भी राशि बकाया नहीं है। निगम ने पांच हजार से ज्यादा राशि होने पर घर घर जाकर वसूली करने में लगा है। जिसके लिए टीम गठित की गई हैं। चोरी पर लगाम कसने के लिए विशेष अभियान छेड़ा हुआ है। ऐसे लोगों की काफी शिकायतें मिल चुकी हैं। विभाग का लक्ष्य मार्च माह में दो करोड़ की चोरी पकड़ना होगा।

हरियाणा में दो लोकसभा सीटों पर वैश्य समाज के प्रतिनिधियों को टिकट दें सभी दल

कुरुक्षेत्र, फरीदाबाद व करनाल सीट पर है वैश्य समाज का मजबूत दावा

हरियाणा में हैं कुल 10 लोकसभा सीट

राज्यसभा में भी वैश्य समाज को प्रतिनिधित्व नहीं मिलने से है रोष

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

अग्रवाल वैश्य समाज के प्रदेश अध्यक्ष अशोक बुवानीवाला ने सभी राजनीतिक दलों से मांग की है कि आने वाले लोकसभा चुनाव में सभी दल हरियाणा की 10 लोकसभा सीटों में से दो सीटों पर वैश्य समाज के प्रतिनिधियों को टिकट दें। उन्होंने कहा कि कुरुक्षेत्र, फरीदाबाद और करनाल सीट पर वैश्य समाज का मजबूत दावा है। अशोक बुवानीवाला ने कहा कि हरियाणा में राज्यसभा के चुनावों में भी वैश्य समाज की

अशोक बुवानीवाला

अनदेखी की गई थी, जिस कारण हरियाणा में अब लोकसभा चुनाव में दो सीटों पर समाज के लोगों को टिकट मिलनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी ने हरियाणा में इसकी शुरुआत कर दी है। अग्रवाल वैश्य समाज के प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि हरियाणा के बहुत से समाज से जुड़े लोग बहुराष्ट्रीय कंपनियों में ऊंचे पदों पर कार्यरत हैं। समाज के लोग न केवल देश, बल्कि विदेश में भी अपना प्रभाव रखते हैं। ऐसे में वैश्य समाज के लोगों को राजनीति में संपूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करना सभी राजनीतिक दलों के प्रमुखों का कर्तव्य बनता है। उन्होंने कहा कि राज्यसभा में भी वैश्य समाज को प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया। पूर्व में बनारसी दास गुप्ता, सुभाष चंद्रा समाज का प्रतिनिधित्व करते रहे हैं। अब समाज की उपेक्षा करने से राजनीतिक दलों के प्रति समाज में रोष है।

अशोक बुवानीवाला ने कहा कि अग्रवाल वैश्य समाज राजनीति में अपनी सक्रिय भागीदारी को बढ़ाने के लिए 10 मार्च को अंबाला में स्वाभिमान सम्मेलन का आयोजन कर रहा है, जिसमें राज्य में दो लोकसभा सीटों और 16 विधानसभा सीटों पर प्रमुख रूप से चुनाव लड़ने का बिगुल बजाया जाएगा। उन्होंने कहा कि वैश्य समाज का वर्तमान में बिल्कुल स्पष्ट एजेंडा है कि जो राजनीतिक दल उसे उसका हक देगा वह चुनाव में उसके साथ खड़ा होगा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और भाजपा समेत सभी राजनीतिक दलों को अब वैश्य समाज की अनदेखी करना बंद करना होगा। अग्रवाल वैश्य समाज के प्रदेश अध्यक्ष ने बताया कि हरियाणा में फरीदाबाद, कुरुक्षेत्र, करनाल सीटों पर वैश्य समाज का वोट बैंक अच्छा खासा है। समाज यहां पर किसी भी दल की जीत और हार को सुनिश्चित करने का काम करता है। ऐसे में इन तीन सीटों में से दो सीटों पर समाज के लोगों को टिकट देकर उसे राजनीति में आगे लाने का काम सभी राजनीतिक दलों को करना चाहिए।

मोदी-मनोहर सरकार का संकल्प हर महिला आत्मनिर्भर बने : कमल यादव

जिला अध्यक्ष कमल यादव ने कार्यकर्ताओं के साथ सुना पीएम मोदी का लाइव संबोधन

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम बंगाल से नारी शक्ति वंदन समापन समारोह में देशभर में बुधवार को वर्चुअल संवाद किया। भाजपा कार्यालय गुरुकमल में जिला अध्यक्ष कमल यादव ने कार्यकर्ताओं के साथ कार्यक्रम का लाइव प्रसारण सुना।

कार्यक्रम के बाद कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कमल यादव ने कहा कि मोदी-मनोहर सरकार का संकल्प है कि देश और प्रदेश की हर महिला आत्मनिर्भर बनें और विकसित भारत के निर्माण में सहयोगी की भूमिका निभाएं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश मजबूती के साथ आगे बढ़ रहा है। 10 सालों में मोदी और मनोहर सरकार ने महिलाओं के हित में जितनी भी योजनाएं बनाई हैं उनसे महिलाएं आत्मनिर्भर होकर परिवार

भाजपा कार्यालय गुरुकमल में पीएम मोदी के लाइव संबोधन को सुनने के दौरान मोबाइल टॉर्च दिखाते भाजपा नेता, कार्यकर्ता

का सहारा बन रही हैं। कमल यादव ने कहा कि महिलाओं के लिए 50 फीसदी आरक्षण अगर किसी ने किया है तो वह नरेंद्र मोदी की केंद्र सरकार ने किया है। जब भी कांग्रेस की सरकारें आईं, महिलाओं का शोषण हुआ है। पश्चिम बंगाल में महिलाओं के साथ घटित हुई घटना शर्मशार और झकझोर कर देने वाली है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने बलात्कार और रेप जैसे संगीन अपराध के लिए फांसी की सजा तक की व्यवस्था की है। महिला हेल्पलाइन बनाई, लेकिन तृणमूल सरकार इस व्यवस्था को पश्चिमी बंगाल में लागू नहीं होने दे रही है। ऐसी महिला विरोधी तृणमूल सरकार महिलाओं का कभी भला नहीं कर सकती। कमल यादव ने इंडी गठबंधन पर निशाना साधते हुए कहा कि यह गठबंधन परिवारवादियों का गठबंधन है। प्रधानमंत्री मोदी जब परिवारवाद पर बोलते हैं तो भ्रष्टाचार मे लिप्त इंडी गठबंधन के नेता बौखला उठते हैं। घमंडिया गठबंधन के पास देश के विकास और देश को समृद्ध तथा ताकतवर बनाने का कोई विजन नहीं है, इसलिए वे मोदी को टारगेट करते हैं। प्रधानमंत्री मोदी के लाइव संबोधन को जिला प्रभारी संदीप जोशी, प्रशिक्षण विभाग प्रमुख शैलेंद्र पांडेय, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य समय सिंह भाटी, एनजीओ प्रकोष्ठ के संयोजक बोधराज सीकरी, लाभार्थी योजना के सह प्रमुख महेश यादव, जिला महामंत्री रामबीर भाटी, जिला महामंत्री सर्वप्रिय त्यागी, जिला मीडिया प्रमुख डॉ. गजेन्द्र गुप्ता आदि मौजूद रहे।

समाजसेवी बोधराज सीकरी के नेतृत्व में हो चुके हैं 5,73,936 हनुमान चालीसा पाठ

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

एक साल से अधिक समय से लगातार जारी हनुमान चालीसा पाठ की भाजपा नेता बोधराज सीकरी द्वारा चलाई जा रही मुहिम पर भाजपा जिला अध्यक्ष कमल यादव ने प्रसन्नता जाहिर की। उन्होंने कहा कि राजनीति में रहते हुए व्यक्ति महत्वाकांक्षी होता है, परंतु बोधराज सीकरी अति महत्वाकांक्षी नहीं हैं। क्योंकि उनका लक्ष्य अध्यात्म के माध्यम से युवा को संस्कारवान बनाना है और समाज सेवा है, मात्र राजनीति नहीं। इस बार के पाठ को मिलाकर 232 स्थानों पर 41,607 साधकों द्वारा 5,73,936 हनुमान चालीसा पाठ हो चुके हैं।

सुशांत लोक-सी ब्लॉक कम्युनिटी सेंटर में हनुमान चालीसा पाठ की मुहिम के तहत बोधराज सीकरी की अगुवाई में गजेंद्र गोसाई ने संगीतमय

हनुमान चालीसा पाठ में मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह भेंट करते बोधराज सीकरी व अन्य

तरीके से हनुमान चालीसा पाठ का शुभारंभ पंडित भीम दत्त के माध्यम से मंत्रोच्चारण से करवाया। मंगलाचरण उपरांत गायकी से पाठ का शुभारंभ यजमान जगदीश डुडेजा ने अपनी पत्नी के साथ पूजा-अर्चना से करवाया और सह आयोजक जगदीश बंसल भी उपस्थित रहे। 21 बार पाठ होने के बाद बोधराज सीकरी ने रामायण और हनुमान चालीसा पाठ के अद्भुत उदाहरण पेश कर वहां बैठी संगत का मन गद्गद कर दिया।

हॉल 300 से अधिक लोगों से खचाखच भरा हुआ था। बोधराज सीकरी ने अपने वक्तव्य में कहा कि वे प्राय राजनीति के लोगों को अपने पाठ में नहीं बुलाते। उन्होंने कमल को इस नाते बुलाया है कि वे सुशांत लोक के निवासी भी हैं और अपने माता-पिता की नेक संतान हैं।

इस अवसर पर स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री के वरिष्ठ पुत्र सुनील शास्त्री भी उपस्थित थे। आरडब्ल्यूए की टीम विष्णु खन्ना, दीपक वर्मा, संजय टंडन की भी सराहना की। पुराने गुरुग्राम से धर्मेन्द्र बजाज, नवनियुक्त अर्जुन मंडल के मंडल अध्यक्ष अपनी पत्नी ज्योत्सना बजाज के साथ उपस्थित रहे।

महिला दिवस के उपलक्ष्य में कवि सम्मेलन व महिला सम्मान समारोह

गुरुग्राम। महिलाओं के सशक्तिकरण एवं उनके सम्मान के लिए सेक्टर-14 स्थित राजकीय कन्या विश्विद्यालय के हिंदी विभाग एवं नेहा फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में कवि सम्मेलन एवं पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया।

महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित इस समारोह में भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष कमल यादव मुख्य अतिथि रहे। इस कार्यक्रम में समाज के अलग-अलग क्षेत्रों में अनुकरणीय काम करने वाली महिलाओं को ट्राफी देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर फाउंडेशन की चेयरपर्सन एवं गुरुग्राम भाजपा मोर्चा की उपाध्यक्ष नेहा शालिनी दुआ ने कहा कि हमने इस सम्मान के लिए उन कर्मठ महिलाओं को पुरस्कार के लिए चयनित किया है, जिन्होंने अपने परिश्रम की बदौलत अपना एक मुकाम हासिल किया है। साथ ही दूसरी महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बनी हैं। भाजपा जिला अध्यक्ष कमल यादव ने इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए नेहा फाउंडेशन के प्रयास की सराहना की। इस समारोह में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने वाली स्पेशल अचीवर की अध्यक्ष माधवी हंस, एनकाउंटर लेडी के नाम से मशहूर एसीपी शाहिदा परवीन, राष्ट्रीय महिला रैली ड्राइवर की अध्यक्ष जसमीत बत्रा और नेशनल हॉर्स राइडिंग में गोल्ड मेडलिस्ट सोनाली शर्मा को उनकी विशेष उपलब्धियां के लिए सम्मानित किया गया।

फोर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट ने 5वें TED& इवेंट के दौरान प्रभावी वक्ताओं को पेश किया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

देश के जाने-माने बी-स्कूल फोर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट ने नौ मार्च 2024 को एक TED& इवेंट के आयोजन की घोषणा की है। TED& के मंच पर कई ऐसे महत्वपूर्ण विषयों को प्रस्तुत किया जाता है जो आज के दौर में दुनिया का चेहरा बदलने की क्षमता रखते हैं। इस इवेंट का थीम चुना गया है। परिकल्पनम: नवाचार और कल्पनाशीलता का मेल, और यह इनोवेशन (नवाचार), प्रेरणा तथा टैक्नोलॉजी की ताकत पर केंद्रित होगा तथा इसमें अलग-अलग पृष्ठभूमियों से जुड़े स्पीकर्स अपने विचार रखेंगे।

TED& इवेंट के इस सीज़न में तीन प्रमुख थीम्स पर संदेशों को रेखांकित किया गया है: भारत में चुनाव: नवाचार तथा भविष्य की चुनौतियां, विकासाशील अर्थव्यवस्थाओं में टैक्नोलॉजी संबंधी नवाचारों की कल्पना, तथा स्टोरीटेलिंग एवं फोटोग्राफी में विज़ुअलाइज़ेशन, पर्सपेक्टिव्स एवं परसेप्शन। TED& 2024 इवेंट में स्पोर्ट्स, एंटरटेनमेंट, पॉलिटिक्स और वाइल्डलाइफ फोटोग्राफी जैसे विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े दिग्गज स्पीकर्स भी भाग ले रहे हैं और हरेक वक्ता अपने साथ नए परिप्रेक्ष्यों तथा अनुभवों को लेकर आएंगे। प्रत्येक वक्ता अपने-अपने कार्यक्षेत्रों के संदर्भों में अपने विचारों को प्रस्तुत कर श्रोताओं को कुछ अलग ढंग से सोचने तथा रटी-रटायी लीक पर प्रश्नचिन्ह लगाने के लिए प्रेरित करेंगे।

डॉ. सुबीर वर्मा, डायरेक्टर, फोर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट ने कहा, हम TED& इवेंट के आयोजन को लेकर काफी उत्साहित हैं, जिसमें हम अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़े दिग्गजों तथा बंधे-बंधे ढर्रों को चुनौती देने वाले पेशेवरों को एक छत के नीचे ला रहे हैं। फोर में, हमारा मानना है कि विचारों में इतनी ताकत होती है कि वे न सिर्फ जीवन में बदलाव ला सकते हैं बल्कि निकट भविष्य में भी सकारात्मक परिवर्तन को साकार कर सकते हैं। हमें उम्मीद है कि यह इवेंट लोगों में जिज्ञासा पैदा करेगा, उन्हें रटे-रटाए ढर्रों को चैलेंज करने के लिए उकसाएगा, रास्तों की अड़चनों के पार जाने के लिए उन्हें प्रेरित करने के साथ-साथ समुदायों के स्तर पर तथा हमारे छात्रों में भी पॉजिटिव बदलाव लाएगा।

इस इवेंट में भाग लेने वाले स्पीकर्स में शामिल हैं। प्राची तहलान, जो कि बहुमुखी प्रतिभा की धनी हैं और अपने अद्भुत सफर में खेल-कूद तथा मनोरंजन जगत में अमिट पहचान बना चुकी हैं। डॉ. संजय कुमार जाने-माने राजनीतिक विश्लेषक और चुनाव विश्लेषक हैं।

नारायणा हेल्थ ने मरीजों के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए सेल्सफोर्स के साथ सहयोग किया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

भारत के जानेमाने स्वास्थ्य सेवा देने वालों में से एक, नारायणा हेल्थ ने एआई सीआरएम लीडर, सेल्सफोर्स, जो मरीजों के अनुभवों को बेहतर बनाने और ऑपरेशनल एफिशिएंसी बढ़ाने पर केंद्रित है, के साथ सहयोग की घोषणा की।

नारायणा हेल्थ मरीज के साथ रिलेशनशिप मैनेजमेंट और यूनिफाइड मैनेजमेंट फीडबैक सिस्टम (यूएफएमएस) के लिए सेल्सफोर्स सर्विस क्लाउड का इस्तेमाल करता है। सेल्सफोर्स ने नारायणा हेल्थ की कई मुश्किलों को हल करने में मदद करी है। जैसे कई अनुप्रयोगों के बीच नेविगेट करने की जरूरत को खत्म करना, मैन्युअल डेटा साझा करना, व्यापक 360-डिग्री पेशेंट व्यू की पेशकश करना और डेटा-संचालित निर्णय लेने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्राप्त करना आदि। साथ ही इसे अपनाने से कॉल के समय में कमी, बेहतर सहयोग और सुव्यवस्थित शिकायत प्रबंधन जैसे उल्लेखनीय प्रभाव पड़े हैं, जो और भी सहज मरीज के अनुभव को दिखाते हैं। नारायणा हेल्थ उनके लक्षित प्रिवेंटिव वैलनेस अभियानों को चलाने के लिए भी सेल्सफोर्स मार्केटिंग क्लाउड का इस्तेमाल कर रहा है। सेल्सफोर्स का व्यापक सुइट विभागों के बीच बेहतर सूचना प्रवाह की सुविधा देता है, डेटा-संचालित निर्णय लेने में मदद करता है और रोगी के अनुभवों में सुधार करते हुए नारायणा हेल्थ की स्वास्थ्य सेवाओं की काबिलायत को बढ़ाता है। नारायणा हेल्थ स्वास्थ्य सेवाओं को और भी ज्यादा सुलभ बनाने के लिए अलग-अलग उपयोग के मामलों में डेटा + एआई-संचालित हस्तक्षेपों को शामिल करने पर सक्रिय रूप से काम कर रहा है। पर्सिस्टेंट इस प्रोजेक्ट में कार्यान्वयन भागीदार है जो सेल्सफोर्स और हेल्थकेयर उद्योग दोनों में गहरी विशेषज्ञता को एक साथ लाता है। पर्सिस्टेंट 18 सालों से भी ज्यादा समय से एक रणनीतिक सेल्सफोर्स पार्टनर रहा है, जिसके पास 7,100+ विशेषज्ञता और व्यवसायी प्रमाणपत्र और 300,000+ ट्रेलहेड बैज हैं।

नारायणा हेल्थ के ग्रुप चीफ इनफॉर्मेशन ऑफिसर कुमार केवी ने बताया कि ''नारायणा हेल्थ में हम स्वास्थ्य देखभाल से जुड़ी कमियों को पूरा करने और बेहतर सेवाएं देने के लिए प्रौद्योगिकी की शक्ति का इस्तेमाल करने में विश्वास करते हैं। सेल्सफोर्स के साथ हमारा सहयोग इस दृष्टिकोण को हासिल करने की दिशा में एक बहुत बड़ा कदम है। हम रोगी-केंद्रित सेवाओं में और प्रगति की आशा करते हैं। यह सहयोग बड़े पैमाने पर अच्छी क्वॉलिटी की स्वास्थ्य सेवा देने की हमारी प्रतिबद्धता को पूरा करेगा।

देश में पीएम मोदी, प्रदेश में सीएम मनोहर लाल कर रहे नारी सशक्तिकरण पर काम : नवीन गोयल

पीएम नरेंद्र मोदी की महिलाओं के लिए नीतियों, योजनाओं को मिल रहा बढ़ावा

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

कैनविन फाउंडेशन की ओर से राजेंद्र पार्क में खोले गए कैनविन महिला कौशल विकास केंद्र के लिए सूरत नगर की महिलाओं ने कैनविन फाउंडेशन के सह-संस्थापक एवं भारतीय जनता पार्टी व्यापारी प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक नवीन गोयल को शुभकामनाएं और धन्यवाद दिया।

सेक्टर-17 स्थित माधव सेवा केंद्र में पहुंची सूरत नगर की महिलाओं का सम्मान करते हुए नवीन गोयल कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी केंद्र में और राज्य में मुख्यमंत्री मनोहर लाल महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए मजबूती से

सूरत नगर की महिलाओं द्वारा राजेंद्र पार्क में खोले गए केंद्र को लेकर महिलाओं के साथ कार्यक्रम में नवीन गोयल

काम कर रहे हैं। नवीन गोयल ने समाज की सशक्त महिलाओं के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संबोधन भी सुना और प्रेरणा ली।

नवीन गोयल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की महिलाओं के लिए चलाई गई स्कीमों की जानकारी दी। साथ ही आगामी लोकसभा चुनाव के लिए मोदी सरकार को फिर से लाने के लिए साथ देने का संकल्प लिया। उन्होंने कहा कि देश की और अधिक मजबूत करने के लिए, और अधिक सुरक्षित करने के लिए तीसरी बार नरेंद्र भाई मोदी का प्रधानमंत्री बनना जरूरी है। हर स्तर पर उन्होंनें देश को प्रथम श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है। उनका देश के प्रति समर्पण ही है कि वे दिन-रात देश को आगे बढ़ाने के काम में लगे रहते हैं। नवीन गोयल ने कहा कि महिलाओं को आत्मनिर्भर, मजबूत, सुरक्षित बनाने के लिए भी केंद्र और राज्य सरकार अनेक योजनाएं लागू कर चुकी हैं। महिलाओं को आगे बढ़ाने में सरकार बड़े स्तर पर काम कर रही है।

मेरा पहला वोट देश के लिए अभियान के तहत निकाली जागरूकता रैली

डॉ. बीआर अंबेडकर सनातकोत्तर महाविद्यालय में अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित

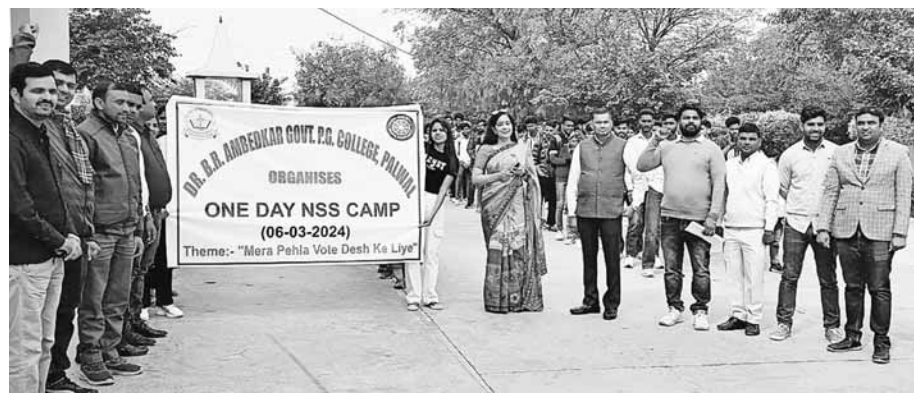

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

डॉ. बीआर अंबेडकर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय पलवल में प्राचार्या अर्चना वर्मा के निर्देशानुसार मेरा पहला वोट देश के लिए अभियान के तहत एक दिवसीय एनएसएस शिविर व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एनएसएस अधिकारी अनिल चौहान व बंदना भारद्वाज ने नए मतदाताओं को जागरूक करने के लिए व मेरा पहला वोट देश के लिए अभियान को सफल बनाने हेतु मतदाता रैली का आयोजन किया।

इस रैली में प्राचार्या अर्चना वर्मा, उपप्राचार्य डॉ. बाबू लाल शर्मा, मुख्य अतिथि विनोद कुमार, एनएसएस अधिकारी अनिल चौहान व बंदना भारद्वाज ने सभी विद्यार्थियों एवं नए मतदाताओं को रैली के माध्यम से चुनावों में शत-प्रतिशत भागीदारी के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान विनोद कुमार ने अपने वक्तव्य के माध्यम से सभी विद्यार्थियों को मतदाताओं के अधिकारों व कर्तव्यों से अवगत कराया। इस अवसर पर महाविद्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे पोस्टर मेकिंग, स्लोगन लेखन, भाषण, कविता पाठ व निबंध लेखन का आयोजन किया गया। जिसमें भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान जोगेंदर, द्वितीय स्थान रिंकी, तृतीय स्थान शरीन ने प्राप्त किया। कविता प्रतियोगिता में प्रथम स्थान निशा, द्वितीय स्थान अन्नू, तृतीय स्थान संजना ने प्राप्त किया। कार्यक्रम के अंत में उपप्राचार्य डॉ. बाबू लाल शर्मा ने सभी विद्यार्थियों व स्टाफ सदस्यों को लोकतंत्र को सफल बनाने व मतदान में शत-प्रतिशत भागीदारी के लिए प्रेरित किया। नए मतदाताओं को मतदान के दौरान निष्पक्ष वोट डालने हेतु जागरूक किया व सभी को निष्पक्ष चुनाव हेतु शपथ भी दिलाई। एनएसएस अधिकारी अनिल चौहान व बंदना भारद्वाज ने एनएसएस शिविर के माध्यम से मेरा पहला वोट देश के लिए अभियान में विशेष योगदान दिया।

कार्यक्रम में मंच का संचालन राजू और मनोज कुमार ने गया। इस अवसर पर तरूण सैनी, डॉ. संजीव कुमार, डॉ. अनिता मिश्रा, निशा, पिंकी, डॉ. योगेश, डॉ. दीपिका छाबड़ा, ओम प्रकाश, राहुल लांबा व अन्य स्टाफ सदस्य मौजूद रहे।

माताएं अपने शिशु को लिटाकर न पिलाएं दूध : ईएनटी सर्जन डॉ. शिल्पी अरोड़ा

जिला नागरिक अस्पताल पलवल में मनाया गया विश्व श्रवण दिवस

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

जिला नागरिक अस्पताल पलवल में सिविल सर्जन डॉ. नरेश कुमार गर्ग के दिशा-निर्देशन व डिप्टी सिविल सर्जन डॉ. नवीन गर्ग के मार्गदर्शन में विश्व श्रवण दिवस मनाया गया। सिविल सर्जन डॉ. नरेश गर्ग ने बताया कि इस वर्ष यह आयोजन बदलती मानसिकता आइए कान और सुनने की देखभाल को सभी के लिए वास्तविकता बनाएं थीम पर मनाया गया। उन्होंने बताया कि बच्चों में कान बहने, कान में संक्रमण होने, कान में चोट लगने से, बचपन में खसरा, मेनिनजाइटिस तथा मम्स कन्फेडे रोग होने से बहरापन हो सकता है। इसलिए कान में कोई सींक या नुकीली चीज न डालें और न ही तरल पदार्थ अर्थात तेल आदि डालें। इस मौके पर ईएनटी सर्जन डॉ. दीप किशोर ने बताया कि विश्व में लगभग 80 प्रतिशत लोगों की कान और सुनने की क्षमता की जरूरतें पूरी नहीं हो पातीं हैं। कान की बीमारियों पर विश्व स्तर पर लगभग अमेरिकी 10 खरब डॉलर की वार्षिक लागत का खर्चा आता है। उनका कहना है कि सामाजिक रूप से लोगों को इसका ज्ञान न होना और विविध भ्रांतियों के कारण हम बधिरता को ठीक कर पाने में पूर्ण सक्षम नहीं हो पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसके लिए लोगों का जागरूक होना बेहद जरूरी है। विश्व श्रवण हियरिंग दिवस को मनाने का उद्देश्य लोगों और स्वास्थ्य कर्मचारियों की बधिरता संबंधी भ्रांतियां दूर करना, लोगों की बहरेपन संबंधी भ्रांतियों को दूर करना, सभी सिविल सोसाइटीज और देशों में बधिरता संबंधी शंकाओं को दूर करना तथा लोगों की भ्रांतियों को दूर कर समस्त सुविधाएं देकर बधिरता की चिकित्सा करना है। ईएनटी सर्जन डॉ. दीप किशोर ने उपस्थित सभी बच्चों व लोगों को ज्यादा ऊंची आवाज में संगीत न सुनने, मोबाइल चलाते समय इअर बड व लीड का इस्तेमाल न करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि हमेशा धीमी व मधुर आवाज में ही संगीत सुनें। उन्होंने बताया कि कोक्लियर इंप्लांट के छह महीने से तीन वर्ष की उम्र तक ही ज्यादा अच्छे परिणाम मिलते हैं।

ईएनटी सर्जन डॉ. शिल्पी अरोड़ा ने कहा कि माताओं को अपने बच्चों को लिटाकर दूध नहीं पिलाना चाहिए। इससे बच्चों में कान बहने की संभावना रहती है। उन्होंने बताया कि जिला के सिविल अस्पताल पलवल, एसडीएच होडल, सभी सीएचसी, पीएचसी में तीन से नौ मार्च तक कान की बीमारियों से संबंधित जागरूकता शिविर लगाए जा रहे हैं। चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजय माम ने बताया कि छोटे बच्चों में अक्सर कान बहने की शिकायत मिलती है। ऐसी स्थिति में तुरंत कान, नाक, गला रोग विशेषज्ञ व सर्जन से परामर्श कर इलाज करवाना चाहिए। उन्होंने बताया कि छह महीने से तीन वर्ष की उम्र पर ही कोक्लियर इंप्लांट के ज्यादा अच्छे परिणाम मिलते हैं। इस कार्यक्रम में कान से संबंधित बीमारियों से ग्रस्त अर्थात बहरे-गूंगे बच्चों की पेंटिंग प्रतियोगिता भी कराई गई। इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले सभी विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया। इस अवसर पर चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजय माम, ईएनटी सर्जन डॉ. शिल्पी अरोड़ा, डॉ. दीप किशोर, मेडिकल ऑफिसर आयुष डॉ. रूपलाल, फिजियोथैरेपिस्ट डॉ. लितेश मलिक, इंटरवेंशनिस्ट पूनम शर्मा, ऑडियोलॉजिस्ट पुष्पा कुमारी, मनीष और लक्ष्मण सहित बच्चे व महिलाएं मौजूद रहे।

क्राइम ब्रांच ने 50 हजार के इनामी बदमाश पर कसा शिकंजा

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

क्राइम ब्रांच हथीन ने 50 हजार के इनामी बदमाश को गिरफ्तार किया है। प्रेस वार्ता में खुलासा करते हुए डीएसपी पलवल दिनेश यादव ने बताया कि एसपी पलवल डॉक्टर अंशु सिंगला के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में जिला पुलिस लगातार अपराधियों पर शिकंजा कस रही है। इसी कड़ी में क्राइम ब्रांच हथीन इंचार्ज उप निरीक्षक दीपक गुलिया की टीम ने दिल्ली पुलिस की गिरफ्त से करीब एक साल से फरार चल रहे पीओ करार एवं 50 हजार के इनामी बदमाश को काबू करने में सफलता हासिल की है ।

मामले के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए डीएसपी पलवल ने बताया कि 13 अक्टूबर 2023 को मठेपुर छांयसा, थाना हथीन पलवल निवासी ड्राइवर व कंडक्टर ट्रक में करोड़ों रुपये की कीमत की सुपारी भरके कर्नाटक से दिल्ली के लिए चले थे। 17 अक्टूबर को दिल्ली पहुंचना था। जिन्होंने अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर करोड़ों रुपये की सुपारी का ट्रक नंगली पूना दिल्ली पहुंचाने की बजाय अपने फोन बंद करके माल/सुपारी की गाड़ी को बेच दिया था। जिस संबंध में थाना मयूर विहार, फेस-1, दिल्ली में मुकदमा दर्ज है। मामले में मठेपुर छांयसा निवासी एक आरोपी गिरफ्तार हो चुका है और बाकि के आरोपीयों की गिरफ्तारी बकाया है। जिन पर दिल्ली पुलिस द्वारा 50 हजार रुपये का इनाम रखा गया है। फरार चल रहे मठेपुर छांयसा निवासी दूसरे आरोपी जिस पर भी 50 हजार का इनाम घोषित है तथा मामले में अदालत से पीओ भी करार है को बुधवार को सीआएए स्टाफ हथीन टीम द्वारा काबू किया गया है। जिसे न्यायालय में पेश करके, थाना मयुर विहार, ईस्ट दिल्ली के हवाले किया जायेगा।

225 पेटी शराब सहित आरोपी तस्कर किया गिरफ्तार

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

क्राइम ब्रांच हथीन प्रभारी उप निरीक्षक दीपक गुलिया की टीम ने शराब तस्करी पर कड़ा प्रहार करते हुए लाखों रुपये की 225 पेटी की खेप सहित आरोपी तस्कर को गिरफ्तार किया है।

क्राइम ब्रांच हथीन प्रभारी उप निरीक्षक दीपक गुलिया के अनुसार स्टाफ में तैनात हेड कांस्टेबल कर्मबीर के नेतृत्व में गठित टीम थाना हसनपुर क्षेत्र अंतर्गत गांव कुशक मौजूद थी। जहां उन्हें सूचना मिली कि पीरगढ़ी निवासी युवक अबैध शराब बेचने का काम करता है। जो अपनी गाड़ी छोटा हाथी में पलवल की तरफ से शराब की सप्लाई लेकर आएगा तथा हसनपुर होते हुए उत्तर प्रदेश को जाएगा। सूचना के आधार पर टीम ने भूमिया चौक से आगे जटौली रोड पर नाकाबंदी कर उसे गाड़ी सहित धर दबोचा। गाड़ी की तलाशी में 170 पेटी पव्वा मार्का मस्ताना देशी, 25 पेटी अद्धा मार्का मस्ताना देशी, 20 पेटी बोतल मार्का मस्ताना देशी, पांच पेटी रॉयल स्टेग अद्धा व पांच पेटी बीयर मार्का किंगफिशर मिली जो कुल 225 पेटी थी। शराब के बारे में आरोपी कोई लाइसेंस परमिट पेश न कर सका।

गांधीनगर में होगी अखिल भारतीय सिविल सेवा टेबल टेनिस प्रतियोगिता

खेल स्पर्धा में भाग लेने के लिए आज रोहतक में होगा हरियाणा के खिलाड़ियों का चयन

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

जिला खेल अधिकारी अनिल कुमार ने बताया कि अखिल भारतीय सिविल सेवा टेबल टेनिस महिला एवं पुरुष खिलाड़ियों की प्रतियोगिता का आयोजन 10 से 14 मार्च तक गुजरात के गांधीनगर में सचिवालय जिमखाना सेक्टर-21 मे करवाया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में हरियाणा राज्य की ओर से भाग लेने वाले टेबल टेनिस खिलाडियों के लिए सात मार्च को पुरुष एवं महिला खिलाड़ियों का चयन जिला रोहतक में सर छोटू राम स्टेडियम में स्थित डीएसओ कार्यालय में किया जाएगा। उन्होंने इच्छुक अधिकारी अथवा कर्मचारियों से इस चयन स्पर्धा में सुबह 10 बजे तक निर्धारित स्थान पर पहुंचने का आह्वान किया है।

जिला खेल अधिकारी अनिल कुमार ने जिला पलवल के सभी विभागों में कार्यरत अधिकारी व कर्मचारियों से इस चयन स्पर्धा मे दर्शाई गई तिथि, समय व स्थान पर पहुंचने का आह्वान किया है। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले अधिकारियों अथवा कर्मचारियों को अपने विभाग से यह प्रमाण पत्र देना होगा कि वे अमुक विभाग के कार्यालय के अधिकारी या कर्मचारी हैं। इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए जाने व वापिस आने का किराया संबंधित विभाग व खिलाड़ी द्वारा वहन किया जाएगा। इस चयन स्पर्धा मे भाग लेने वाले सिविल सेवा कर्मचारी टीए, डीए अपने विभाग से लेंगे।

केंद्रीय सिविल सेवा सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा बोर्ड नई दिल्ली के अनुसार विभिन्न कैटेगरी के कर्मचारी अखिल भारतीय सिविल सेवा के लिए पात्र नहीं हैं। जिनमें रक्षा सेवाओं, अर्धसैनिक संगठन, केंद्रीय पुलिस, संगठन, पुलिस, आरपीएफ, सीआईएसएफ, बीएसएफ, आईटीबीपी, एनएसजी आदि में वर्दीधारी कर्मी, स्वायत्त निकायों, उपक्रमों, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के कर्मचारी, भले ही प्रशासनिक रूप से केंद्रीय मंत्री द्वारा नियंत्रित हों तथा आकस्मिक, दैनिक वेतन भोगी श्रमिक और अस्थायी ड्यूटी पर कार्यालयों से जुड़े कर्मचारी व एक नवनियुक्त नियोजित व्यक्ति, जिसने नियमित स्थापना एवं सेवा में छह माह से कम समय बिताया हो आदि शामिल हैं। हरियाणा सिविल सेवा प्रतियोगिता से संबंधित सभी हिदायतें सिविल सर्विस की वेबसाइट से प्राप्त की जा सकती हैं।

मोबाइल ऐप से ऑनलाइन हाजिरी लगाने के फरमान पर कर्मचारियों ने किया प्रदर्शन

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

मोबाइल ऐप से ऑनलाइन हाजिरी लगाने के फरमान से गुस्साए ग्रामीण सफाई कर्मचारियों ने जिला मुख्यालय पर धरना प्रदर्शन किया। यूनियन के नेता नानकचंद की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम का संचालन विनोद घुघेरा ने किया। सीआईटीयू के नेता रमेशचंद व मकैनिकल वर्कर यूनियन के राज्य कमेटी के नेता राकेश तंवर तथा योगेश शर्मा ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर मांगों का समर्थन करते हुए सरकार से ऑनलाइन हाजिरी के आदेश को वापिस लेने की मांग की। जिला प्रधान रमेश डागर की संयुक्त अध्यक्षता में आयोजित प्रदर्शन का संचालन राकेश तंवर ने किया।

प्रदर्शन में शामिल कर्मचारियों को संबोधित करते हुए यूनियन नेताओं ने कहा कि ऐप से हाजिरी लगाने की नई व्यवस्था से ग्रामीण सफाई कर्मचारीयों का शोषण व गुलामी बढ़ जाएगी। ग्रामीण सफाईकर्मी समाज के अंतिम छोर का व्यक्ति है। सरकार व प्रशासन को इनकी सामाजिक स्थित कि पूरी जानकारी होने के बावजूद भी इस तरह के फैसले करना किसी भी लिहाज से उचित नहीं हैं। ये कर्मचारी पहले ही गांवों की चुनावी रंजिशों का शिकार हो रहे हैं।

इस नई व्यवस्था से ग्रामीण सफाई कर्मियों के शोषण से बेगार के कार्यों में बढ़ोतरी होगी तथा कुछ लोगों की मनमानी बढ़ जाएगी तथा संबंधित विभाग का हस्तक्षेप व उसकी भूमिका बिल्कुल खत्म हो जाएगी। उन्होंने कहा कि नए नियम के लागू होने पर पीड़ित कर्मचारी की सुनवाई का भी कोई प्रावधान नहीं है। यूनियन नेताओं ने बताया कि पंचायत विभाग द्वारा बनाए गए नए नियम के तहत तीन दिन तक ऑनलाइन हाजिरी का सत्यापन संबंधित ग्राम सचिव द्वारा किया जाएगा तथा इसके बाद एप के माध्यम से सरपंच वेतन के भुगतान की ऑनलाइन सिफारिश करेगा। सरपंच की सिफारिश के बाद सरकार द्वारा अधिकृत बैंक कर्मचारी के वेतन का भुगतान करेगा। उन्होंने कहा कि नए नियम के लागू होने से कर्मचारियों के हटाने व लगाने का एक नया खेल शुरू होगा। उन्होंने कहा कि ज्यादातर कर्मचारियों के पास ऐप चलाने के लिए स्मार्ट फोन तक नहीं हैं तथा कम पढ़े लिखे या अशिक्षित होने के कारण सफाई कर्मचारी स्मार्टफोन चलाने में अस्मर्थ भी हैं। उन्होंने मांग की कि सरकार पुरानी व्यवस्था को ही जारी रखे। कार्यक्रम में यूनियन नेता सुरेश, सोनू, रामेश्वरी, रामवती, दयाराम व जोगेंद्र ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

नागरिकों को वोट बनवाने के साथ त्रुटियां सही करवाने के लिए करें प्रेरित

पलवल। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त नेहा सिंह ने कहा कि जिला के नागरिक मतदान के प्रति जागरूक होवें। इसके लिए जिन नागरिकों की वोट नहीं बनी हुई हैं, वे अपना मत अवश्य बनवाएं और अन्य लोगों को भी इसके बारे में जागरूक करें। वहीं मौजूदा वोट से व्याप्त त्रुटियों को सही करवाने के लिए भी नागरिकों को प्रेरित किया जाए। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त नेहा सिंह जिला सचिवालय स्थित अपने कार्यालय में आगामी लोकसभा चुनाव की तैयारियों के संबंध में विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक के दौरान बोल रहीं थीं। उन्होंने कहा कि राजनीतिक पार्टी के प्रतिनिधि अपने स्तर पर लोगों के बीच जाकर उन्हें चुनाव के दौरान वोट डालने के लिए जागरूक करें। जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि जिन लोगों की वोट में त्रुटि हैं, उन्हें सही करवाने के लिए भी लोगों को प्रेरित करें।

उन्होंने कहा कि एक व्यक्ति की एक स्थान पर ही वोट हो सकती है। इसके अलावा जिन व्यक्तियों की एक से अधिक वोट बनी हुई है, ऐसे लोगों का नाम एक स्थान की वोटर लिस्ट से कटवाने में राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि जिला प्रशासन का सहयोग करें। इसके अतिरिक्त यदि किसी मतदाता की उसके वोटर कार्ड में फोटो गलत लगी हुई है तो उसे भी सही करवाने के लिए संबंधित वोटर को जानकारी देने की दिशा में कार्य करें। वहीं उपायुक्त नेहा सिंह ने महिलाओं को भी अपने मत का भरपूर प्रयोग करने के लिए आह्वान किया है, ताकि महिलाएं भी अपने मत के प्रति जागरूक होकर मतदान करने के लिए बढ़-चढ़कर आगे आएं। राजनीतिक दलों की ओर से मतदान केंद्रों पर बीएलए नियुक्त किए जाएं। इस दौरान नायब तहसीलदार चुनाव कुलदीप सहित विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

संक्षिप्त समाचार

हथीन में हो रहे अवैध निर्माण पर चला पीला पंजा

पलवल। बुधवार को जिला नगर योजनाकार, पलवल द्वारा गुरास्कार रोड हथीन में तीन अवैध कॉलोनियों में लगभग चार एकड़ में पनप रही 300 मीटर रोड नेटवर्क 30 डीपीसी, एक निर्माणाधीन मकान व एक स्कूल को तोड़ा गया। यह कार्रवाई अर्बन क्षेत्र अधिनियम 1975 के तहत की गई है। तोड़फोड़ की कार्रवाई के दौरान ड्यूटी मजिस्ट्रेट एवं फील्ड स्टाफ व पुलिस बल मौजूद थे। जिला नगर योजनाकार पलवल नरेंद्र नैन ने बताया कि विभाग द्वारा की जा रही तोड़फोड़ में और सख्ती बरती जायेगी, ताकि अवैध कॉलोनी काटने व उसमें निर्माण करने वाले मंसूबे पूरे न हो सकें और समय रहते पनप रहे अवैध निर्माण को तोड़ा जा सके। उन्होंने बताया कि सभी अवैध कॉलोनियों में जन साधारण को जागरूक करने के लिए चेतावनी बोर्ड भी लगाये जा चुके हैं। उन्होंने जनसाधारण से अनुरोध किया है कि अवैध कॉलोनियों में भू माफियाओं के बहकावे में आकर प्लॉट न खरीदें व अपनी मेहनत की कमाई को बर्बाद न होने दें, क्योकि अवैध कॉलोनियों में सरकार द्वारा किसी भी प्रकार की सुविधा नहीं दी जाती है। कोई भी अवैध कॉलोनी में निर्माण करने से पहले सरकार से नियमानुसार अनुमति लें। अवैध कॉलोनी में निर्माण को किसी भी समय अधिनियम के प्रावधान में गिराया जा सकता है।

खेल नर्सरी के लिए 15 मार्च तक कर सकते हैं आवेदन

पलवल। जिला खेल अधिकारी अनिल कुमार ने बताया कि खेलों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से खेल नर्सरी स्कीम के तहत सरकारी, निजी शिक्षण संस्थानों तथा पंचायत एवं निजी खेल संस्थानों में खेल नर्सरी स्थापित करने हेतु आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। उन्होंने बताया कि केवल ओलंपिक, एशियन व कॉमनवेल्थ खेलों में सम्मिलित खेलों के लिए खेल यह नर्सरियां खोली जाएंगी। जिला खेल अधिकारी अनिल कुमार ने बताया कि इच्छुक संस्थान विभागीय वेबसाइट पर विजिट कर ऑनलाइन अपना आवेदन कर सकते हैं। आवेदन करने की अंतिम तिथि 15 मार्च निर्धारित की गई है।

लापता लड़के को तलाश कर किया परिजनों के हवाले

फरीदाबाद। थाना पल्ला प्रबंधक की टीम पुलिस चौकी नवीन नगर की टीम ने घर से लापता लड़के को तलाश कर परिजनो के हवाले करने का सराहनीय कार्य किया है। लड़का अपने घर से बना बताए 25 जनवरी को निकल गया था। परिजनों के द्वारा काफी तलाश किया गया। नहीं मिलने पर पुलिस चौकी नवीन नगर में लड़के के संबंध में सुचना दी थी। पुलिस चौकी के द्वारा इस संबंध में थाना पल्ला में गुमशुदगी की धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लड़के की तलाश की जा रही थी। पुलिस टीम ने गुमशुदा लड़के का अपने गुप्त सूत्रों व तकनीकी माध्यमों से अगवानपुर चौक का पता लगाया, जहां से लड़के को तलाश किया गया। लड़के से पूछताछ में सामने आया कि लड़का नौकरी करना चाहता था। जिसके लिए वह घर से बिना बताए निकल गया था। अब वह रोशन नगर में एक गोदाम नें नौकरी करता है। लड़के को पूछताछ के बाद परिजनों के हवाले किया है।

शव को दफनाने पर श्मशान में विवाद

पलवल। एक बुजुर्ग व्यक्ति की मौत के बाद उसके शव को दफनाने को लेकर विवाद हो गया। हथीन में श्मशान घाट प्रबंधन से जुड़े लोगों ने शव को दफनाने से रोक दिया। विवाद की सूचना मिलने पर डीएसपी हथीन सुरेश भड़ाना पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंच गए। बाद में शव को दूसरे गांव में दफनाया गया। जानकारी के अनुसार पलवल के हथीन में रहने वाले घुमंतू जाति के 85 वर्षीय व्यक्ति की मौत हो गई थी। वह तीन वर्षों से हथीन में रह रहा था। उसका दवाइयां बेचने का काम था। इससे पूर्व वह परिवार के साथ पलवल की दया कॉलोनी में रहते था। हथीन में व्यक्ति की मौत के बाद उसके परिजन शव को दफनाने गए तो विवाद हो गया। विवाद बढ़ता देख मौके पर डीएसपी सुरेश भड़ाना पहुंचे। डीएसपी ने श्मशान घाट प्रबंधन एवं शव दफनाने आए लोगों से बात की। श्मशान भूमि वालों का कहना था कि श्मशान में अग्नि से दाह संस्कार की परंपरा है। इस प्रक्रिया से अंतिम संस्कार की इजाजत श्मशान भूमि में दी जाती है। शव दफनाने की इजाजत श्मशान में नहीं मिलती। वहीं, शव को दफनाने आए लोगों से बात की तो उनका कहना था कि मृतक दूसरे पंथ का है, इसलिए शव को वे जलाते नहीं, बल्कि दफनाते हैं। शव दफनाने वाले लोगों ने बताया कि शव दफनाने का एकमात्र स्थल जिले के एक गांव में है। इसके बाद वह शव को दूसरे गांव में ले गए और शव दफना दिया।

छात्राओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया

पलवल। बुधवार को सरस्वती महिला महाविद्यालय पलवल के वूमेन सेल व हेल्थ सेल द्वारा सैनेट्री पैड्स के प्रयोग के लिए जागरूक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं को महिला सशक्तिकरण और साथ ही उनके स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं से बचाव के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. वंदना त्यागी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि मनीषा मंगला अध्यक्ष इनर व्हील क्लब, कोमल कौशिक कार्यक्रम प्रबंधक, गो गर्ल फाउंडेशन व मानसी रहे। मुख्य वक्ता कोमल कौशिक ने छात्राओं को मासिक धर्म से संबंधित होने वाली समस्याओं के प्रति जागरूक किया। इस कार्यक्रम में वोमेन सेल व हेल्थ कल्ब की प्राध्यापिकाओं डॉ. नीरज वर्मा, हिमानी, नेहा, नीलम व रेणु ने अपनी भूमिका निभाई। इस कार्यक्रम में डॉ. लक्ष्मी गुप्ता, डॉ. सोनिया भारद्वाज तथा शुभ्रा भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। लगभग 2500 छात्राओं को सेनेट्री पैड वितरण किए गए।

देश की महान महिला विभूतियां होंगी सम्मानित : आजाद

फरीदाबाद। बेटी बचाओ अभियान सात मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर देश की 21 महान लाडली विभूतियों व शहर की 11 महिला अधिकारियों को सनातन धर्म मंदिर धर्मशाला जवाहर कॉलोनी फरीदाबाद में भारतीय लाडली गौरव अवार्ड से सम्मानित करेगा। संस्थापक व राष्ट्रीय संयोजक हरीशचंद्र आज़ाद ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजा नहर सिंह के प्रपोत्र व वरिष्ठ इनेलो नेता सुनील तेवतिया होंगे। बेबी प्रियंका लाडलियों के गीत प्रस्तुत करेगी। कार्यक्रम के लिए एक मीटिंग सेक्टर-29 कार्यालय में ब्लॉक टीम के साथ हरीशचंद्र आजाद की अध्यक्षता में रखी गई, जिसमें कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई गई व सदस्यों को कार्य सौंपा गया। आजाद ने कहा कि यह कार्यक्रम शहर का सबसे बड़ा सामाजिक कार्यक्रम होगा, जिसमें शहर की लगभग सभी सामाजिक हस्तियां उपस्थित होंगीं। चेयरमैन जगजीत कौर ने बताया कि कार्यक्रम में जसलीन कौर डीसीपी सेंट्रल, यशिका यादव प्रिंसिपल जज फैमली कोर्ट, ममता खरबंदा दहिया डीसीपी क्राइम स्टेट, गरिमा मितल सीइओ स्मार्ट सिटी फरीदाबाद, अनमोल खरब बेडमिंटन खिलाड़ी स्वर्ण पदक विजेता, सीमा बंसल डायरेक्टर एसएसबी अस्पताल, मोनिका भारद्वाज एसीपी वूमेन सेफ्टी फरीदाबाद, पूनम हुडा एसएचओ, सविता एसएचओ वूमेन एनआईटी, इंदू बाला वूमेन एसएचओ सेक्टर-16, मोनिका एसीपी आदि शिरकत करेंगी। जिन्हें भारतीय लाडली गौरव अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा।

सुप्रीम कोर्ट का फैसला

सांसदों का अभियोजन

सुप्रीम कोर्ट ने स्वागत योग्य फैसला दिया है कि रिश्वत के मामलों में सांसदों को अभियोजन का सामना करना पड़ सकता है। निश्चित रूप से इस उल्लेखनीय निर्णय से व्यवस्था को स्वच्छ बनाने में बहुत मदद मिलेगी, भले ही इससे राजनेता वर्ग थोड़ा असहज ही क्यों न हो। सर्वोच्च न्यायालय ने अपना पुराना फैसला पलटते हुए निर्णय दिया कि विधि-निर्माता रिश्वत लेने पर अभियोजन से मुक्त नहीं रखे जा सकते हैं। इस फैसले से वास्तव में भारतीय लोकतंत्र के स्तंभ मजबूत होंगे तथा निर्वाचित प्रतिनिधियों में जवाबदेही और निष्ठा की भावना विकसित होगी। इस फैसले से सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट संदेश दिया है कि कानून का शासन सर्वोच्च है और यह बात शासन के सर्वोच्च स्तर पर भी लागू होती है। सांसदों और विधायकों का पवित्र कार्य ऐसी नीतियां और नियम बनाना है जो मतदाताओं की सामूहिक इच्छा का प्रतिनिधित्व करते हों। यदि इसमें भ्रष्टाचार प्रवेश कर जाए तो जनता का विश्वास टूट जाएगा तथा लोकतंत्र की आत्मा नष्ट हो जाएगी। खासकर रिश्वत राजनीतिक प्रक्रियाओं की शुद्धता के लिए गंभीर खतरा है क्योंकि इससे निर्णय लेने की प्रक्रिया विकृत होती है तथा प्राथमिकतायें बदलती हैं। संसदीय विशेषाधिकारों की अवधारण विधि-निर्माताओं को विधायी क्षेत्र में कानूनी हस्तक्षेप से सुरक्षा देती है और यह स्वतंत्र बहस व विचार-विमर्श को बढ़ावा देती है। हालांकि, यह विशेषाधिकार विमर्श प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण है, पर इसे सत्ता के दुरुपयोग या गलत कामों का लाइसेंस नहीं माना जाना चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय के हालिया फैसले के बाद यह स्थिति बदलने जा रही है। इसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि विधि-निर्माता रिश्वत के आरोपों में विशेषाधिकार द्वारा सुरक्षित नहीं होते हैं क्योंकि यह लोकतंत्र व न्याय की भावना के विपरीत है।

इस निर्णय ने यह अवधारणा रेखांकित की है कि विधि-निर्माता भी कानून से ऊपर नहीं हैं और उनकी जांच हो सकती है। इससे वे जवाबदेही व्यवस्थायें मजबूत होती हैं जो जीवन्त लोकतंत्र के कामकाज के लिए जिम्मेदार हैं। यह फैसला गलत तरीकों से राजनीतिक प्रक्रियाओं की विकृति के खिलाफ प्रतिरोधक है जिससे मतदाताओं के जनादेश की निष्ठा तथा लोकतांत्रिक संस्थानों की पवित्रता सुरक्षित बनी रहती है। राजनीति से भयानक मोहभंग के वर्तमान समय में न्यायपालिका की ऐसी निर्णायक कार्रवाई नागरिकों में विश्वास पैदा करेगी तथा व्यवस्था की निष्पक्षता में उनका विश्वास मजबूत होगा। लेकिन ऐसे निर्णयों की प्रभावशीलता के लिए जरूरी है कि सरकार उनको पूरी निष्ठा के साथ लागू करे। कभी-कभी राजनेता वर्ग अपने हितों के खिलाफ जाने पर सर्वोत्तम कानूनों को भी तोड़ता मरोड़ता है। इसके साथ ही कानूनों का चयनित ढंग से प्रयोग दोषियों को दंड देने के बजाय अपने विरोधियों को परेशान करने के लिए किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में प्रक्रिया ही दंड बन जाती है। चूंकि जांच एजेंसियां सरकारी नियंत्रण में होती हैं, इसलिए अक्सर सरकार कानूनी कार्रवाई के लिए उचित मामलों का चयन करती है। लेकिन इन सबके बावजूद यह फैसला विधिक ढांचे में परिवर्तन की दिशा में पहला कदम है। यह फैसला एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, हालांकि यह स्वीकार करना जरूरी है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई निरंतर जारी रहती है और यह बहुआयामी है। स्वच्छ राजनीति को बढ़ावा देने के प्रयास विधिक घोषणाओं से आगे जाते हैं और इनमें चुनावों की फाइनेंसिंग, संस्थागत निगरानी तथा नागरिक शिक्षा जैसे व्यापक सुधार शामिल हैं।

कृषि सब्सिडी पर डब्लूटीओ में विचार

डब्लूटीओ मंत्री सम्मेलन में भारत ने कृषि सब्सिडी कार्यक्रम पर अपना दृष्टिकोण मजबूती से रखा, लेकिन विकसित देशों ने इसका घोर विरोध किया।

उत्तम गुप्ता
(लेखक, नीति विश्लेषक हैं)

विश्व व्यापार संगठन-डब्लूटीओ का 26-29 फरवरी, 2024 में अबूधाबी में 13वां मंत्री स्तरीय सम्मेलन गतिरोध के साथ समाप्त हुआ। इसमें एक ओर भारत ने जी33 देशों का नेतृत्व किया जिसमें भारत, अफ्रीकी, कैरिबियन और प्रशांत देश शामिल थे जिसे सामूहिक रूप से 'एसीपी' कहा जाता है। दूसरी ओर यूरोपीय संघ-ईयू व अमेरिका ने विकसित देशों व अन्य का प्रतिनिधित्व किया जो अपनी पूर्व-निर्धारित स्थितियों से हटने के लिए तैयार नहीं है। इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दा खाद्य सुरक्षा के लिए पब्लिक स्टाक-होल्डिंग-पीएसएच कार्यक्रम है।

भारत के दृष्टिकोण का अमेरिका-ईयू ने घोर विरोध किया। वर्तमान समय में भारत के पीएसएच कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय खाद्य निगम-एफसीआई जैसी सरकारी एजेंसियां किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य-एमएसपी पर कृषि उत्पाद, जैसे गेंहू, धान व मोटे अनाज खरीदती हैं तथा इनको राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून-एनएफएसए के अंतर्गत भारत के गरीबों को मुफ्त देती हैं। एमएसपी के साथ हैंडलिंग, भंडारण व वितरण पर आने वाले खर्च और मुफ्त सप्लाई के बीच आने वाले अंतर की भरपाई केन्द्र सरकार अपने बजट से करती है जिसे 'सब्सिडी' कहा जाता है। इसके दो आयाम हैं। 1. किसानों को सब्सिडी जो एमएसपी से अधिक होती है। इसका उदाहरण चावल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों या एक्सटर्नल रेफरेंस प्राइस-ईआरपी से एमएसपी का अधिक होना है। 2. उपभोक्ताओं को सब्सिडी जो ईआरपी से अधिक होती है। इनमें डब्लूटीओ का सरोकार पहली श्रेणी में आने वाली सब्सिडी से है जिसे 'उत्पाद-विशिष्ट' सब्सिडी कहते हैं।

किसी वस्तु का अंतरराष्ट्रीय मूल्य-ईआरपी वैश्विक मांग-सप्लाई पर निर्भर करता है और इसका निर्णय प्रतियोगिता के आधार पर होता है। सभी देशों के सभी किसानों को यह मूल्य दिलाने की उम्मीद की जाती है। यदि भारत जैसे किसी देश की सरकार के हस्तक्षेप से किसानों को इससे अधिक एमएसपी मिलती है तो उम्मीद की जाती है कि उनको ईआरपी से अधिक एमएसपी की सब्सिडी मिलती है। डब्लूटीओ को कृषि निवेशों, जैसे उर्वरकों, बीजों, सिंचाई, बिजली, आदि पर मिलने वाली सब्सिडी की भी चिन्ता होती है जिसे 'गैर-उत्पाद विशिष्ट' सब्सिडी कहते हैं।

कृषि समझौते-एओए के अंतर्गत 'एंबर बाक्स' सब्सिडी के रूप में परिभाषित इन उत्पाद और गैर-उत्पाद विशिष्ट सब्सिडी की कुल मात्रा या एग्रीगेट मेज़रमेंट सपोर्ट-एएमएस को विकासशील देशों के कृषि उत्पादन मूल्य के 10 प्रतिशत पर सीमित रखा जाता है। यदि कोई देश 10 प्रतिशत से अधिक एएमएस देता है तो इसे समझौते का उल्लंघन माना जाता है। एओए 1995 में लागू हुआ। भारत के मामले में 2005 तक एमएसपी ईआरपी से कम था। इसके बाद एमएसपी ईआरपी से अधिक हो गया तथा पिछले दशक में यह खाई और चौड़ी हुई।

2019-20 में चावल के मामले में एएमएस 10 प्रतिशत की सीमा से अधिक 13.7 प्रतिशत हो गया। ऐसे में सवाल है कि क्या अतिरिक्त सब्सिडी से अंतरराष्ट्रीय व्यापार प्रभावित होता है? इसका उत्तर स्पष्ट रूप से 'नहीं' है। इसका कारण यह है कि एएमएस गणना का फार्मूला गलत है। एमएसपी से तुलना करने का ईआरपी 1986-88 में तय हुआ था। इससे सब्सिडी 'कृत्रिम' रूप से बढ़ी लगती है। इसके साथ ही एओए गणना में गरीब किसानों को दी जाने वाली सब्सिडी अलग नहीं रखी जाती है। ये किसान मुख्यत: अपने खाने के लिए ही खेती करते हैं और उनके पास बेचने के लिए अतिरिक्त फसल नहीं होती है। इन दोनों कमियों को दूर करने की जरूरत है।

वर्तमान ईआरपी का प्रयोग कर गरीब किसानों को दी जाने वाली सब्सिडी को इससे बाहर रखने पर भारत की सब्सिडी 10 प्रतिशत की सीमा से नीचे आएगी। दूसरा, किसानों से एमएसपी पर की जाने वाली कुल खरीद का उद्देश्य एनएफएसए के अंतर्गत गरीब उपभोक्ताओं को इसकी बिक्री करना है। इसलिए खरीदे गए अनाजों के वैश्विक बाजार में प्रवेश का सवाल नहीं उठता है। एक दशक से अधिक समय से भारत अपने इन बिंदुओं को सामने रख कर 'स्थाई समाधान' की मांग करता रहा है। लेकिन विकसित देश 2013 के बाली सम्मेलन में नवीं एमसी में केवल 'पीस क्लाज़' पर सहमत हुए। इसके अनुसार, 'यदि कोई विकासशील देश 10 प्रतिशत से अधिक एएमएस देता है तो कोई सदस्य इसे 2017 तक इसे चुनौती नहीं देगा, जब डब्लूटीओ स्थाई समाधान निकालेगा।' दिसंबर, 2014 में आम सभा में इसे संशोधित कर कहा गया कि 'पीस क्लाज़ उस समय तक लागू रहेगा जब तक स्थाई समाधान न खोज लिया जाए।' लेकिन पीस क्लाज़ में अनेक शर्तें हैं, जैसे खाद्यान्न खरीद, स्टाकहोल्डिंग, वितरण और सब्सिडी पर डेटा देना। इनमें यह स्थापित करना भी शामिल है कि सब्सिडी से 'व्यापार विकृति' नहीं होती है।

इसके साथ ही 2013 के बाद से क्रियान्वित कार्यक्रम 'पीस क्लाज़' के दायरे में नहीं आते हैं। भारत ने कई बाद चावल पर सब्सिडी की सीमा 10 प्रतिशत से अधिक होने पर 'पीस क्लाज़' का प्रयोग किया। लेकिन विकसित देशों ने इसे अपारदर्शी बता कर लागू करने का विरोध किया। उनका कहना था कि पीएसएच के अंतर्गत खरीदे अनाजों का 'अवैध' रूप से निर्यात किया जाता है। डब्लूटीओ में थाईलैंड की दूत पिमचानोक वोंकोरपान पिटफील्ड ने यह आरोप लगाया है। उन्होंने कहा है कि भारत के चावल निर्यात का 40 प्रतिशत पीएसएच स्टाक से होता है। विकसित देशों की दिलचस्पी यह सुनिश्चित करने में है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में उनके कृषि-उत्पादों को ज्यादा स्थान मिले। इसके लिए भारतीय निर्यातों को हतोत्साहित करना जरूरी है। इसलिए वे समस्या का स्थाई समाधान खोजने में दिलचस्पी नहीं लेते हैं। यह स्थिति एक दशक से अधिक समय से बनी हुई है और वे इसे बनाए रखना चाहते हैं।

इस बीच भारत को 'पीस क्लाज़' का सहज क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए विकसित देशों की आलोचना से बचना होगा। सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि एजेंसियों द्वारा की जाने वाली खरीद एनएफएसए की आवश्कताओं के अनुरूप हो, अतिरिक्त भंडारण से बचा जाए तथा पीएसएच कार्यक्रम के अंतर्गत सब्सिडी वाले खाद्यान्न की चोरी न हो। फिशरी सब्सिडी पर भारत ने 'प्रदूषक भुगतान करे' तथा 'साझा पर अलग-अलग जिम्मेदारियों' के सिद्धान्तों पर प्रस्ताव किया है कि विकसित देश अगले 25 सालों में अपनी सब्सिडी समाप्त करें तथा इन 25 वर्षों में विकासशील देशों को 'ओवर-फिशिंग सब्सिडी' से बाहर रखें। एमसी-13 में भारत ने प्रस्ताव किया कि गरीब देशों को वे सब्सिडी बिना शर्त देने की अनुमति दी जाए जो वे अपने छोटे स्तर के और 'एंटीसेनल फिशरमैन' को देते हैं। विकसित देशों ने इसे स्वीकार करने से मना कर दिया। जहां तक ई-कामर्स पर कस्टम ड्यूटी सीमा का सवाल है, 1998 तक विकसित देशों को इसका लाभ मिलता था। भारत इसे समाप्त कराना चाहता है क्योंकि इसके कारण विकासशील देशों को ड्यूटी के रूप में मिलने वाले अरबों डालर से हाथ धोना पड़ रहा है। एमसी-12 ने इसे एमसी-13 या मार्च, 2024 तक जारी रखने का निर्णय किया। हालिया अबूधाबी विश्व व्यापार संगठन मंत्री स्तरीय सम्मेलन में भारत ने फिशरी सब्सिडी के मामलों में अपनी मांग पुन: दुहराई है।

भारत अंत तक अपनी मांग पर डटा रहा, लेकिन अंतत: उसे पीछे हटना पड़ा क्योंकि यूएई समेत बहुसंख्य सदस्यों ने यह सीमा दो वर्ष और जारी रखने का निर्णय कर लिया। हालांकि, इस बीच भारत ने चीन द्वारा 'निवेश सुविधा' पर समझौता करने के प्रयास विफल कर दिए। भारत ने डब्लूटीओ के इस सम्मेलन में विकसित देशों के उन प्रयासों का विरोध किया जो गैर-व्यापार मुद्दों, जैसे पर्यावरण, श्रम मानक, औद्योगिक नीति, आदि को डब्लूटीओ में विकासशील देशों पर दबाव डालने के लिए वार्ता में लाना चाहते थे।

संकट में हिमालयी क्षेत्रों की आजीविकाएं

> "जैसे-जैसे मशीनें शारीरिक श्रम की जगह लेती हैं, ग्रामीण महिलाओं को घटते अवसरों का खामियाजा भुगतना पड़ता है"

बीना बिष्ट
(लेखिका, विकासीय मामलों पर टिप्पणीकार हैं)

एक बच्चे के रूप में, मैं अक्सर हरियाली के बीच बैठकर हिमालय के पहाड़ों को देखता रहता था। कई वर्षों के बाद लौटते हुए, परिदृश्य और मेरे गांव में परिवर्तन आश्चर्यजनक थे। स्कूलों की स्थिति में काफी सुधार हुआ है और शौचालयों के निर्माण के साथ-साथ हर घर में पाइप से पानी की लाइनें दिखाई दे रही हैं। अधिकांश घर, जिनकी छतें कभी पत्थर की हुआ करती थीं, अब कंक्रीट की इमारतों में परिवर्तित हो गए हैं। हालांकि भौतिक बुनियादी ढांचे का विकास प्रभावशाली था, लेकिन इसमें उस आकर्षण का अभाव था जो मुझे बचपन में आकर्षित करता था। आधुनिकीकरण के कारण चल रहे परिवर्तनों ने गांव के माहौल को बदल दिया है।

हल्द्वानी के पास ल्वेशाली गांव के 23 वर्षीय पंकज तिवारी बताते हैं, एक समय था जब हमारे गांव से सब्जियां बिक्री के लिए मैदानी इलाकों में भेजी जाती थीं, जिससे ग्रामीणों के लिए अच्छी आय सुनिश्चित होती थी, जिससे वे समृद्ध और संतुष्ट जीवन जीते थे। हालांकि, आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण लोगों ने कृषि कार्य या तो छोड़ दिया है या कम कर दिया है। अब, ग्रामीणों को अपने भरण-पोषण के लिए भी मैदानी इलाकों से सब्जियां खरीदनी पड़ रही हैं। ग्रामीण समुदाय आजीविका की तलाश में गाँवों को छोड़कर शहरी क्षेत्रों में अल्प वेतन वाली नौकरियों पर निर्भर हो रहे हैं, क्योंकि परिवार के भरण-पोषण की ज़िम्मेदारियां पूरी तरह से उनके कंधों पर हैं।

प्रारंभ में, पहाड़ों में पत्थर के घर आम थे, जो पहाड़ों में रहने का एहसास प्रदान करते थे। बखली, एक सामूहिक संरचना जहां 5-6 परिवार एक साथ रहते थे, प्रचलित थी।

हालांकि, बढ़ते पर्यटन के कारण, इन बाखली स्थानों को अब होटल/रिसॉर्ट्स/इमारतों में परिवर्तित किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप लगातार वनों की कटाई हो रही है और पहाड़ियों को नुकसान हो रहा है। पैसे और रोजगार के अवसरों का लालच अनजाने में हमारे पहाड़ों को नुकसान पहुंचा रहा है।

वास्तव में, भौगोलिक परिस्थितियाँ ग्रामीण समुदायों के लिए रोजगार का एक स्त्रोत थीं, जो अब आधुनिकीकरण के कारण कमजोर हो रही हैं। इसका असर हर किसी पर पड़ रहा है, जिसका खामियाजा ग्रामीण महिलाओं को भुगतना पड़ रहा है। विभिन्न गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी, जो एक समय आम थी, कम होती जा रही है क्योंकि मशीनें काम संभाल रही हैं। जबकि मशीनों से कुछ कार्यों की गति बढ़ गई है, स्थानीय रोजगार के अवसर कम हो गए हैं, और वर्तमान कार्य बाहरी मजदूरों को सौंपा जा रहा है। वर्तमान में, ग्रामीण स्तर पर आजीविका के अवसर दुर्लभ हो गए हैं, जिससे लोगों को अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। इससे पहाड़ों का अस्तित्व खतरे में पड़ रहा है।

भुनौली गांव की 68 वर्षीय सरस्वती देवी अपने जीवनकाल में हुए महत्वपूर्ण बदलावों के बारे में बताती हैं। 12 साल की उम्र में, उन्होंने बैलों की मदद से खेतों की जुताई करते समय पुरुषों और महिलाओं दोनों को एक साथ गाते और हंसते देखा। हालांकि, 35 साल की उम्र में यह प्रथा कुछ परिवारों तक ही सीमित थी। आज, 68 साल की उम्र में, इन खेतों में न तो परिवार के सदस्य और न ही बैल दिखाई देते हैं, मशीनों ने कब्ज़ा कर लिया है. आधुनिकीकरण से पैदा हुई भौगोलिक और सांस्कृतिक खाई लोगों को एक-दूसरे से दूर कर रही है। सरस्वती देवी बताती हैं कि आधुनिक उपकरणों और तकनीक ने न केवल ग्रामीण रोजगार छीन लिया है, बल्कि गांव के निवासियों को अपने गांव से भी दूर कर दिया है।

विकास स्वाभाविक रूप से नकारात्मक नहीं है. यह न केवल सुविधाओं के अधिग्रहण की सुविधा प्रदान करता है बल्कि अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि, आधुनिकीकरण के कारण गांवों में हो रहे बदलाव एक खतरनाक खतरा पैदा करते हैं। यह खतरा न केवल सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों से जुड़ा है, बल्कि इसमें पहाड़ों की पहचान खोने का खतरा भी शामिल है।

अगर समय रहते इसे नहीं रोका गया तो वह दिन दूर नहीं जब पहाड़ों की सादगी और यहां की संस्कृति गुमनामी में खो जाएगी और आने वाली पीढ़ियां पहाड़ों को सिर्फ किताबों या तस्वीरों में ही देख पाएंगी। विकास एक साथ ग्रामीण आबादी से उनकी आजीविका छीन रहा है, इसके लिए समय पर हस्तक्षेप और नीतियों की आवश्यकता है जो गांवों में विकास और स्थानीय रोजगार दोनों की अनुमति दें।

आप की बात

राहुल का बेतुका बयान

कांग्रेस की हालत लगातार गंभीर होती जा रही है। उसके शीर्ष नेता राहुल गांधी की बेतुकी बयानबाजी पार्टी को भारी नुकसान पहुंचा रही है। मध्यप्रदेश के शाजापुर में यात्रा के दौरान उन्होंने कहा-मोदी चाहते है देश का युवा मोबाइल दिनभर देखता रहे, कोई काम धंधा न करे, जय श्रीराम बोलता रहे और भूखा मर जाए। यह बयान अनेक दृष्टिकोण से समझ से परे लगता है। इसका अर्थ है कि राहुल गांधी जमीनी यथार्थ से पूरी तरह कटे और अपनी ही बनाई कृत्रिम दुनिया में जीने वाले हैं। मोदी ने युवावर्ग को आत्मनिर्भर बनाने के लिए तकनीक का जो उपयोग किया, उसकी कल्पना भी कांग्रेस ने शायद नहीं की होगी। आज युवा अपने मोबाइल के माध्यम से देश-दुनिया और कांग्रेस समेत विपक्षी दलों की हकीकत से अच्छी तरह परिचित है। जय श्रीराम का नारा आज जनजीवन का हिस्सा बनता जा रहा है, इसलिए उसका मजाक उड़ा कर कांग्रेस अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रही है। इसके पहले राहुल वाराणसी के युवाओं को नशेड़ी बता चुके हैं। वोटों के लिए मंदिर-मंदिर जाने वाले राहुल की जय श्रीराम नारे के बारे में ऐसी अशोभनीय टिप्पणी की जनता में व्यापक व गुस्से से भरी प्रतिक्रिया हाल में दिखने लगी है। राहुल को युवाओं का मजाक उड़ाने का जोखिम नहीं मोल लेना चाहिए।

– **योगेश जोशी,** बड़वाह

महिला सशक्तीकरण

हालांकि आजादी के बाद से महिला सशक्तीकरण के लिए समाज और सरकार ने अनेक कदम उठाये हैं। समुचित व समतापूर्ण शिक्षा, रूढ़िवादिता से मुक्ति, पुरुष-महिला समानता, देश के शासन-प्रशासन व राजनीति में हिस्सेदारी, आकाश में उड़ान की सोच, जमीन पर दुश्मनों से मुकाबला, नौसेना के माध्यम से देश सेवा, आदि अनेकानेक क्षेत्र में महिलाओं ने उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त की हैं। इन्हें प्राप्त करने में सरकार, समाज और परिवार की सकारात्मक सोच का असाधारण योगदान रहा है। बावजूद इसके महिलाओं को अनेक ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जो आदिम काल से उनका पीछा नहीं छोड़ रही हैं। महिलाओं से छेड़छाड़, यौन उत्पीड़न और यहां तक कि बलात्कार जैसे जघन्य अपराध आज भी महिला सशक्तीकरण तथा उनके विभिन्न क्षेत्रों में कामकाज में बाधा डालते हैं। इसी कारण भारत में अन्य देशों की तुलना में महिला श्रमबल काफी कम है। इसे दूर करने का एक उपाय जीवन के सभी क्षेत्रों में कम से कम पचास प्रतिशत महिलाओं की उपस्थिति सुनिश्चित करना हो सकता है। जब सभी क्षेत्रों में महिलाओं की उपस्थिति समान होगी तो उनकी असाधारण प्रगति के अभूतपूर्व रास्ते खुलेंगे।

– **शकुंतला महेश नेनावा,** इंदौर

एआई के खतरे

गूगल के एआई प्लेटफॉर्म जेमिनाय की ओर से दिए गए गलत और आपत्तिजनक जवाबों से उपजा विवाद एक तरह से खतरे की घंटी है। बेशक इस मामले में गूगल ने माफी मांग ली है, लेकिन एआई के पूर्वाग्रहों से जुड़ा यह मसला बड़ा है। एआई या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर काम आगे बढ़ने के साथ ही इसके दुरुपयोग के मामले भी सामने आते जा रहे हैं। वैसे तो हर वैज्ञानिक खोज के सकारात्मक के साथ नकारात्मक परिणाम भी प्रारंभ से ही चले आ रहे हैं, लेकिन एआई के दुरुपयोग तथा एआई के माध्यम से परोसी जाने वाली पूर्वाग्रही जानकारी से गंभीरतम प्रभाव सारी दुनिया पर पड़ सकते हैं। हालांकि, अब एआई की प्रगति को कोई रोक नहीं सकता पर जनता को अपना विवेक जागृत रखकर एआई माध्यम से मिलने वाली हर सूचना और जानकारी को परखना होगा। हालांकि, यह काम भी बहुत कठिन तथा आने वाले समय में लगभग असंभव हो सकता है। यदि एआई किसी खास समुदाय के इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, आदि के बारे में विकृत और पूर्वाग्रही जानकारी देने लगे तो इसका निराकरण ज्ञान के परंपरागत स्त्रोत निरंतर सूखते जाने के कारण बहुत कठिन हो जाएगा। अत: शुरुआत से ही अत्यधिक सावधानी जरूरी है।

सुभाष बुड़ावन वाला, रतलाम

नशे का व्यापार

भारत में अफीम, भांग, गांजा, चरस, आदि नशीली वस्तुओं के उत्पादन पर सख्त पाबंदी होने तथा पाकिस्तान, अफगानिस्तान व अन्य देशों में इनके उत्पादन पर कोई रोक-टोक न होने से तस्कर ऐसी चीजों को और घातक ड्रग्स बनाकर भारत में हजार गुना महंगे दामों पर बेचते हैं। देश के सीमावर्ती राज्यों, खासतौर से पंजाब में ड्रोन व अन्य तकनीकों से बड़े पैमाने पर नशीली वस्तुयें विदेशों से भेजी जाती हैं। नशीले पदार्थों की बिक्री से प्राप्त धन को आतंकवाद के पोषण में लगाया जाता है। इस प्रकार भारत दुहरी मार झेल रहा है। एक तो हमारे अनेक युवा नशे के आदी होकर अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर भारत का हीं पैसा आतंकवाद के रूप में देश को नुकसान पहुंचाने के लिए प्रयोग किया जा रहा है। डार्क ब्लू जैसी खतरनाक वेबसाइट से खतरनाक ड्रग्स दुनिया भर में सप्लाई की जा रही हैं। भारत में नश-व्यापार तथा नशा व्यापार, आतंकवाद व अपराध के बीच पैदा दुष्चक्र को तोड़ने के लिए व्यापक व बहुआयामी प्रयासों की जरूरत है। इसमें सरकार, पुलिस एजेंसियों तथा इंटरपोल आदि के साथ समाज का सहयोग भी जरूरी है।

– **विभूति बुपक्या,** खाचरोद

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

पीएम मोदी ने आगरा मेट्रो को वर्चुअली दिखाई हरी झंडी, सीएम योगी आदित्यनाथ ने किया सफर

मुख्यमंत्री ने विजिटर बुक में दी प्रतिक्रिया, लिखा-प्रोजेक्ट की क्वॉलिटी के साथ ही समयबद्धता महत्व रखती है

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा कोलकाता से वर्चुअली आगरा मेट्रो को हरी झंडी दिखाते ही, उसके नाम एक अनोखा रिकॉर्ड दर्ज हो गया है। यह देश की पहली मेट्रो बन गई है, जो तय समय से नौ महीने पहले ही ट्रैक पर दौड़ने लगी। 32 महीने में प्राथमिक भूमिगत सेक्शन का निर्माण होना था लेकिन यह 23 महीने में बनकर तैयार हो गया। सात दिसंबर 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आगरा मेट्रो का शिलान्यास किया था। इस मौके पर ताज महल मेट्रो स्टेशन से सीएम योगी ने आगरा मेट्रो को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मेट्रो स्टेशन के अंदर एआई से निगरानी की जाएगी। आगरा मेट्रो यूपी की छठवीं मेट्रो है। फर्स्ट फेज में अभी 6 किलोमीटर तक मेट्रो चलेगी। इसके बीच में प्राथमिकता कॉरिडोर में छह स्टेशन शामिल हैं। जिनके बीच गुरुवार से आम जनता के लिए यात्री सेवा आरंभ हो जाएगी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आगरा मेट्रो में सफर भी किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ताजमहल स्टेशन से ताज पूर्वी स्टेशन तक मेट्रो ट्रेन में सफर किया। उनके साथ जनप्रतिनिधि भी शामिल रहे। उन्होंने विजिटर बुक में अपने अनुभव सांझा करते हुए लिखा कि आगरा मेट्रो का आज प्रधानमंत्री ने वर्चुअली शुभारंभ किया। प्रोजेक्ट की क्वलिटी के साथ ही समयबद्धता महत्व रखती है। आगरा मेट्रो ने इस मानक को बनाए रखा है...शुभकामनाएं। इस अवसर पर सीएम योगी ने कहा कि दिसंबर 2021 में आगरा मेट्रो कार्य का शुभारंभ हुआ था और दो वर्ष के अंदर ही प्रायोरिटी सेक्शन के 6 किमी का पहला कार्य पूरा कर लिया गया। जिसमें तीन एलिवेटेड और तीन भूमिगत मेट्रो स्टेशन है। इस कार्य को पूरा करने के साथ ही इसमें मेट्रो सेवा भी प्रारंभ हो चुकी है। आगरा मेट्रो के शुरू होने के साथ ही उत्तर प्रदेश देश का पहला राज्य है, जिसके पास सबसे अधिक शहर में मेट्रो की सुविधा है। इससे पहले लखनऊ, गाजियाबाद, नोएडा, ग्रेटर नोएडा और कानपुर में मेट्रो सेवा प्रारंभ हो चुकी है। आज मुझे प्रसन्नता है कि उत्तर प्रदेश के छठवें शहर आगरा में ब्रजवासियों के लिए, आगरा वासियों के लिए पब्लिक ट्रांसपोर्ट की एक बेहतरीन सुविधा उपलब्ध हुई है।

सीएम ने कहा कि उत्तर प्रदेश मेट्रो कारपोरेशन ने कानपुर मेट्रो, लखनऊ मेट्रो और आगरा मेट्रो के कार्य को जिस तत्परता के साथ किया है, उसकी सर्वत्र पर सराहना हुई है। तीन अंडरग्राउंड स्टेशन को तीन किमी क्षेत्र में, उन्हें विकसित करने में एक तय समय सीमा से पहले कार्य करके देश के अंदर सबसे पहले तीव्र गति से कार्य करने का कीर्तिमान हासिल करने वाली आगरा मेट्रो हुई है। यह अपने आप में एक उपलब्धि है। सीएम योगी ने यूपीएमआरसी को उनकी इस सेवा के लिए हृदय से धन्यवाद दिया और कहा कि पीएम मोदी के विजन को जिस प्रभावी ढंग से उत्तर प्रदेश वासियों के हित में और उत्तर प्रदेश आने वालों के हित में, पर्यटन और पर्यटकों के हित में इस कार्य को यूपीएमआरसी ने करके दिखाया है। ये वास्तव में आम जनमानस के सुविधा को, उनकी सुरक्षा को ध्यान में रख करके किए गए प्रयासों का प्रतिफल है। ये चीजें दिखाती है कि अगर प्रोजेक्ट समयबद्ध तरीके से आगे बढ़ रहा है। कार्य मानक की गुणवत्ता को बनाए रखते हुए पूरा हो रहा है, तो कोई कारण नही कि हम उस सेवा को पब्लिक के विश्वास का प्रतीक बना सकते हैं। आगरा मेट्रो, कानपुर मेट्रो और लखनऊ मेट्रो की तर्ज पर आज हमारे अन्य शहरों में जो मेट्रो चल रही है, आम जनमानस के विश्वास का प्रतीक बनेगी। सीएम योगी ने कहा कि ये आगरा भी प्रदेश का एक प्राचीनतम शहरों में से है। ये ब्रजभूमि का नगर है। यह छत्रपति शिवाजी महाराज के शौर्य और पराक्रम की गाथा से यह शहर जुड़ा हुआ है। इस शहर ने अनेक उतार चढ़ाव देखे हैं। आधुनिक सुविधाओं का केंद्र यह शहर बने इसके लिए मेट्रो आवश्यक थी।

सीएम योगी ने पीएम नरेंद्र मोदी का आभार जताते हुए कहा कि हम प्रधानमंत्री मोदी के आभारी है कि उन्होंने आगरा को मेट्रो के लिए चयन करके इस कार्य को तेजी के साथ आगे बढ़ाने का कार्य किया। आज वह कार्य भी, सपना भी पूरा हो चुका है। इसके साथ ही आगरा में अन्य सुविधाएं जैसे आगरा के पास अपना एयरपोर्ट हो, उसके सिविल टर्मिनल का कार्य भी तेजी के साथ आगे बढ़ाने का कार्य हो रहा है। यहां पर जायका प्रोजेक्ट के अंतर्गत गंगाजल की उपलब्धता पेयजल के लिए उपलब्ध हो। आईटी सेक्टर के रूप में भी इस सिटी को डेवलप करने के लिए तेजी के साथ उन कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने का कार्य भी सरकार प्राथमिकता के आधार पर कर रही है। यहां के नागरिकों के साथ- साथ यहां पर आने वाले पर्यटकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए डबल इंजन की सरकार द्वारा जो प्रयास जो प्रारंभ हुए है, आज वह मेट्रो के रूप में, एयरपोर्ट के रूप में और अन्य जन सुविधाओं के रूप में यहां के बेहतरीन इन्फ्रास्ट्रक्चर के रूप में हम सबको देखने को मिल रहा है। सीएम योगी ने होली से पहले आगरा वासियों को मिले इस उपहार की हृदयतल से बधाई भी दी। मुख्यमंत्री ने आगरा के सभी जनप्रतिनिधियों को धन्यवाद ज्ञापित भी किया कि उन्होंने इन सभी कार्यों में रूचि लेकर समयबद्ध कार्य को सम्पन्न कराने में सहयोग प्रदान किया है। ऐसे ही आगे भी इन सभी के सहयोग से आगरा मेट्रो के आगे के कार्य भी समय से पूर्ण किये जा सकेंगे।

पीएम के हरी झंडी दिखाते ही मेट्रो अपने सफर पर दौड़ पड़ी। मेट्रो ट्रेन में पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय एक के 32 बच्चे चुने गए थे। इन्होंने ताजमहल स्टेशन से ताजपूर्वी तक सफर किया। इनकी ट्रेन को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हरी झंडी दिखाई थी। आगरा मेट्रो ट्रेन में पहली बार सफर करने पर बच्चे बेहद उत्साहित दिखे। इनके प्रधानाचार्य राजेश पांडे ने कहा कि यह हमारे लिए खुशी की बात है कि पूरे शहर में हमारे विद्यालय के बच्चे मेट्रो ट्रेन में सफर करने के लिए चुने गए। लोगों को इस पल का लंबे समय से इंतजार था। मेट्रो के दौड़ते ही उनमें खासा उत्साह दिखा।

● लोकार्पण के अवसर पर केंद्रीय विद्यालय के 32 बच्चों ने आगरा मेट्रो में किया सफर

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/आगरा

पहले सैफई और इटावा का नाम सुनकर ही भयभीत हो जाते थे लोगः मुख्यमंत्री

● सीएम योगी ने सैफई में 500 बेडे के सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक का किया लोकार्पण

● इटावा के लिए 147 करोड़ की 37 परियोजनाओं का किया लोकार्पण एवं शिलान्यास

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/इटावा

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि डबल इंजन सरकार में पिक एंड चूज नहीं होता, न तो मेरा-तेरा होता है। मेरा-तेरा की भावना ही सभ्य समाज को कलंकित और अपमानित करती है। यह समाज के विकास में बहुत बड़ा रोड़ा है। विकास और जनकल्याण की योजनाएं सबके लिए होनी चाहिए। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को यहां सैफई स्थित उत्तर प्रदेश आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम के दौरान कही।

उन्होंने कहा कि पहले सैफई और इटावा का नाम सुनकर ही लोग भयभीत हो जाते थे। सीएम योगी ने खुद से जुड़े एक पुराने प्रसंग की चर्चा करते हुए बताया कि कैसे एक बार शाम ढलने के बाद आगरा से कानपुर आने के उनके कार्यक्रम को पुलिस ने यह कहकर रोक दिया था कि रात में इस इलाके में सफर करना खतरनाक साबित हो सकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज यहां किसी बात का डर नहीं है, बल्कि पूरे देश के युवा यहां डॉक्टरी की पढ़ाई करने आ रहे हैं। मुख्यमंत्री ने आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय के डॉक्टरों से अपील की कि वे अधिक से अधिक मरीजों को अटेंड करें। सीएम ने कहा कि हर पेशेंट से हमें कुछ न कुछ नया सीखने को मिलता है। इससे पहले सीएम योगी ने उत्तर प्रदेश आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय में 500 बेडड सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक का लोकर्पण किया। वहीं इसके अलावा उन्होंने इटावा जनपद के लिए 147 करोड़ रुपए की 37 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया। इसमें 112.59 करोड़ रुपए की 13 परियोजनाओं का शिलान्यास और 34.66 करोड़ की 24 परियोजनाओं का लोकार्पण मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने कर कमलों से किया। इस अवसर पर अपने संबोधन के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि अस्पताल कैसे ग्रामीण क्षेत्र की व्यवस्था को अमूलचूल परिवर्तन करने में अपना योगदान दे सकते हैं, इसका उदाहरण प्रदेश के अलग अलग क्षेत्रों में बन रहे मेडिकल कॉलेज हैं। 1947 से 2017 तक 70 साल में केवल 12 मेडिकल कॉलेज यूपी में बन पाए थे। आज 45 जनपदों में मेडिकल कॉलेज बन चुके हैं, 20 जनपदों में इनका निर्माण अतिंम चरण में है और बाकी बचे जनपदों में भी मेडिकल कॉलेज निर्माण की कार्रवाई को युद्धस्तर पर पूरा किया जा रहा है। यही हाल देश का भी था, जब 1998 तक पूरा भारत केवल एक एम्स के भरोसे चल रहा था। अटल जी ने 6 नये एम्स इस देश को दिये। वहीं, प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में आज देशभर में एम्स की संख्या 22 हो चुकी है। सीएम योगी ने प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें अपने गांव में उत्तर प्रदेश आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय के निर्माण के लिए श्रेय दिया। हालांकि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यह भी कहा कि इस आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय का उद्घाटन नारियल फोड़कर कर दिया गया था, मगर इसके संचालन के लिए केवल एक लाख रुपए की टोकन मनी ही दी गई थी, जबकि इसकी जरूरत 500 करोड़ रुपयों की थी। मुख्यमंत्री ने इस बात पर हर्ष जताया कि यहां के आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय में लघु भारत के दर्शन होते हैं। उन्होंने कहा कि देशभर से यहां स्टूडेंट पढ़ने के लिए आ रहे हैं। साथ ही यहां पूरे भारत से कार्मिक कार्य कर रहे हैं। सीएम योगी ने बताया कि प्रदेश में 10 करोड़ लोगों के आयुष्मान कार्ड बनने हैं, जिसमें से 5 करोड़ लोगों के कार्ड बन चुके हैं।

लखनऊ से ही होती है प्रदेश के सभी एंबुलेंस की मॉनीटरिंग

मुख्यमंत्री ने स्वास्थ्य विभाग के डायल 108 और डायल 102 की कार्यप्रणाली में आए सुधार की चर्चा करते हुए कहा कि पहले रिस्पॉन्स टाइम जहां 45 मिनट से लेकर आधे घंटे का होता था वह घटकर 9 से 10 मिनट का हो चुका है। उन्होंने बताया कि अब लखनऊ से ही सभी एंबुलेंस की मॉनीटरिंग होती है। सीएम ने पिछली सरकार पर आरोप लगाया कि 2014 में प्रधानमंत्री मोदी ने यूपी को 150 कार्डियक वैन देने की पहल की थी, मगर तत्कालीन प्रदेश सरकार ने नहीं लिया। 2017 में उनकी सरकार बनने के बाद एक महीने के अंदर प्रदेश को 150 एडवांस लाइफ सपोर्ट एंबुलेंस मिली, इसके बाद 100 और एडवांस एंबुलेंस हमें प्राप्त हुई। इसके बाद हर जनपद में चार-चार एडवांस लाइफ सपोर्ट एंबुलेंस प्रदान की गई हैं। इससे हजारों-हजार लोगों को लाभ मिला है। इस अवसर पर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, राज्यमंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह, सांसद रामशंकर कठेरिया, इटावा सदर विधायक सरिता भदौरिया, प्रमुख सचिव स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा पार्थसारथी सेन शर्मा, विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो डॉ प्रभात कुमार सिंह, पूर्व सांसद रघुराज सिंह शक्य, बीजेपी जिलाध्यक्ष संजीव राजपूत, विवि के फैकल्टी मेम्बर्स और छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

निष्पक्ष एवं पारदर्शी ढंग से चयनित हुए अभ्यर्थियों को सौंपे नियुक्ति पत्र

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने उत्तर प्रदेश आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय में निष्पक्ष एवं पारदर्शी ढंग से चयनित हुए अभ्यर्थियों को अपने कर कमलों से नियुक्ति पत्र प्रदान किया। इसमें सिद्धार्थनगर (यूपी) के अमर पांडेय, पुलगाम (जम्मू कश्मीर) के आदिल अयूब को टेक्निकल असिस्टेंट कार्डियोलॉजी, सीतापुर (यूपी) कुमारी उत्कर्षिनी को डायटीशियन, रोहतक (हरियाण) के भुपेश मलिक और भुनेश्वर (ओडिशा) के मनीष चौधरी को ओटी असिस्टेंट, दिल्ली से कृति त्यागी और मोहम्मद उवैस को डायलिसिस टेक्नीशियन, जयपुर (राजस्थान) से राकेश कुमार जाट को ओटी टेक्निशियन, इटावा (यूपी) से विंध्या को रेडियोलॉजी टेक्नीशियन, उन्नाव (यूपी) से कुमारी अपराजिता तिवारी को रेडियालॉजी टेक्नीशियन शामिल रहे। इसके अलावा अन्तरराष्ट्रीय मानक के अनुरूप गुणवत्ता में उत्कृष्ट कार्य के लिए कलेक्ट्रेट इटावा को मिले आईएसओ 9001-2015 प्रमाण पत्र को मुख्यमंत्री ने जिलाधिकारी अवनीश राय को प्रदान किया।

नागरिकों की आत्मनिर्भरता से ही विकसित भारत का संकल्प पूरा होगाः भूपेन्द्र चौधरी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी बुधवार को राजधानी लखनऊ के तुलसी उद्यान, गीता पल्ली में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लाइव संबोधन के साथ जुड़े। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नारी शक्ति वंदन अभियान का समापन पश्चिम बंगाल से करते हुए महिला सशक्तिकरण से राष्ट्र के सशक्तिकरण का मंत्र दिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन को लाइव प्रसारण के माध्यम से देश के कोने-कोने में बड़ी संख्या में लोगो ने सुना। लखनऊ में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी के साथ प्रदेश उपाध्यक्ष त्रयम्बक त्रिपाठी, प्रदेश महामंत्री सुभाष यदुवंश, महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी तथा नम्रता पाठक, प्रदेश मीडिया प्रभारी मनीष दीक्षित तथा प्रदेश मीडिया सहप्रभारी हिमांशु दुबे सहित बड़ी संख्या में पार्टी के पदाधिकारी तथा मातृशक्ति के रूप में माँ, बहनें उपस्थित रहीं।

प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कार्यक्रम में उपस्थित मातृशक्ति को नमन करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 2047 तक भारत को विकसित भारत बनाने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहे है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में दस वर्षों में बनाई गई कार्ययोजना के क्रियान्वयन से भारत आजादी के 100वें वर्ष में विकसित भारत होगा और विश्व का नेतृत्व करेगा। देश के सभी नागरिकों की आत्मनिर्भरता से ही विकसित भारत का संकल्प पूरा होगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नारियों के सशक्तिकरण से राष्ट्र के सशक्तिकरण की परिकल्पना को साकार रूप दिया है। यही कारण है कि केन्द्र सरकार की प्रधानमंत्री आवास, उज्ज्वला, जनधन खाता जैसी तमाम योजनायें महिला सशक्तिकरण के लिए समर्पित है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत शौचालयों के निर्माण से खुले में शौच जैसी समाजिक बुराई से देश मुक्त हुआ है।

उन्होंने कहा कि मोदी ने हरियाणा से बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं अभियान को प्रारम्भ किया और बेटियों की क्षमताओं, परिश्रम तथा नेतृत्व से देश आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि नारी शक्ति वंदन अधिनियम से मातृशक्ति को संसद एवं विधानसभाओं में निश्चित प्रतिनिधित्व से आधी आबादी पूरे अधिकारों के साथ देश का नेतृत्व करेगी। प्रदेश में योगी के नेतृत्व में भाजपा सरकार में मां, बहन, बेटियां निर्भय है और प्रदेश महिला सशक्तिकरण के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। चौधरी ने कहा कि देश की 140 करोड़ जनता मोदी जी का परिवार है और देश के प्रत्येक नागरिक के जीवन की खुशहाली मोदी जी की गारंटी है।

भाजपा सरकार देश की गंगा-जमुनी तहजीब को नष्ट कर रहीः अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि इस बार लोकसभा चुनाव संविधान, लोकतंत्र, किसानों और नौजवानों के भविष्य को बचाने का चुनाव है। चुनाव में एक तरफ समाजवादी पार्टी और सहयोगी दल हैं, जो बाबा साहब के संविधान और देश के लोकतंत्र को बचाने की लड़ाई लड़ रहे हैं, दूसरी तरफ भाजपा है जो संविधान और लोकतंत्र को खत्म करना चाहती है। बाबा साहब ने जो संविधान दिया है वह सभी को बराबरी का हक देता है। गरीबों को आगे बढ़ने का अवसर देता है लेकिन भाजपा भेदभाव करती है। देश की गंगा-जमुनी तहजीब को नष्ट कर रही है। अखिलेश ने कहा कि भाजपा सरकार में प्रतियोगी परीक्षाओं के पेपर लीक होते है। भाजपा सरकार की नीयत युवाओं को नौकरी देने की नहीं है। यह सरकार परीक्षा का दिखावा करती रही है। भाजपा ने बेरोजगारी को रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचा दिया है।

औद्योगिक आपदा से बचाव के लिए योगी सरकार बना रही प्रभावी रणनीति

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर इकोनामी बनाने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने इंडस्ट्री को आकर्षित करने के लिए कई नई नीतियां बनाई, जिसमें इंडस्ट्री को तमाम तरह की सहूलियतें, सब्सिडी समेत तमाम सुविधाएं दी जा रही हैं। योगी सरकार की इस पहल को देखते हुए देश और विदेश की नामचीन कंपनियां उत्तर प्रदेश का रुख कर रही हैं। इसको देखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ औद्योगिक आपदाओं से निपटने, जनहानि को रोकने और इंडस्ट्री को सुरक्षित करने के लिए राहत विभाग को लगातार आवश्यक दिशा निर्देश दे रहे हैं। इसी क्रम में राहत विभाग की ओर से 7 मार्च यानी गुरुवार को मॉल एवेन्यू स्थित होटल लेबुआ में एक दिवसीय कांफ्रेंस का आयोजन किया जा रहा है, इसमें विषय विशेषज्ञ बढ़ते शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण प्रदेश में केमिकल, बायोलॉजिकल, रेडियोलॉजिकल, न्यूक्लियर (सीबीआरएनआई) तथा औद्योगिक आपदाओं से निपटने के लिए गहन मंथन करेंगे। प्रमुख सचिव राजस्व पी गुरु प्रसाद ने बताया कि मुखमंत्री योगीनाथ के निर्देश पर एक दिवसीय औद्योगिक आपदाओं के न्यूनीकरण एवं प्रबंधन पर कांफ्रेंस का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में इण्डस्ट्रियल,केमिकल, बायोलॉजिकल, रेडियोलॉजिकल तथा न्यूक्लियर आपदाएं घटित होने की संभावनाओं को कम करने एवं आकस्मिक स्थिति में बचाव कार्य पर मंथन किया जाएगा। इसमें विभाग के लोग, कई संस्थाओं के वरिष्ठ प्रतिनिधि, औद्योगिक संगठन तथा अन्य स्टेकहोल्डर्स सहित तमाम विशेषज्ञ शामिल होंगे।

राहत आयुक्त जीएस नवीन कुमार ने बताया कि प्रदेश में इण्डस्ट्रियल, केमिकल, बायोलॉजिकल, रेडियोलॉजिकल तथा न्यूक्लियर आपदाओं का खतरा कभी भी आ सकता है। ऐसे में इन आपदाओं से निपटने के लिए योगी सरकार काफी गंभीर है। यही वजह है कि औद्योगिक संस्थानों को इन आपदाओं से सुरक्षित करने, जागरूक करने एवं विभाग को पहले से तैयार रहने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण के साथ इस तरह के आयोजन सुनिश्चित किए जाते हैं। इसी के तहत कांफ्रेंस में औद्योगिक व सीबीआरएनआई आपदाओं के न्यूनीकरण, रोकथाम और प्रबंधन, रासायनिक और औद्योगिक दुर्घटनाओं से जुड़ी समस्याओं के समाधान व निराकरण पर विचार-विमर्श किया जाएगा। विशेषज्ञ इन विषयों पर मंथन के साथ इन आपदाओं से निपटने के लिए बेहतर प्रयास पर अपने विचार प्रकट करेंगे।

महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार बेहद संवेदनशीलः केशव

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान व स्वावलंबन मोदी की गारंटी है।डबल इंजन सरकार द्वारा आधी आबादी को पूरा अधिकार दिया जा रहा है। महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार बेहद संवेदनशील है।

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि महिलाओं को और अधिक सबल व सक्षम बनाने के लिए नये संसद भवन में सबसे पहले नारी शक्ति वन्दन अधिनियम को मंजूरी दी गई है। प्रधानमंत्री के स्वयं सहायता समूहों की दीदियों को आन लाइन सम्बोधन कार्यक्रम के अवसर पर बुधवार को केशव प्रसाद मौर्य मोहनलालगंज ब्लाक में आयोजित कार्यक्रम में स्वयं सहायता समूहों को सम्बोधित कर रहे थे। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य सहित स्वयं सहायता समूहों ने मौजूद रहकर प्रधानमंत्री के सम्बोधन को सुना। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने विकास खण्ड के विभिन्न स्वयं सहायता समूहों द्वारा किए गए उल्लेखनीय व उत्कृष्ट कार्यो के लिए प्रमाण पत्र वितरित कर दीदियों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने स्वयं सहायता समूहों को सम्बोधित किया व स्वयं सहायता समूहों के विचारों को भी साझा किया। महिला सशक्तिकरण व स्वावलंबन के लिए केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा उठाए गये क्रान्तिकारी कदमों व सरकार द्वारा लिये गये साहसिक व ऐतिहासिक फैसलों की जानकारी उप मुख्यमंत्री ने अपने सम्बोधन में दिया। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि देश में 4 करोड़ से अधिक व प्रदेश में लगभग 56 लाख पक्के मकान गरीबों को दिए गए हैं, इसमें 75 प्रतिशत से अधिक आवास महिलाओं के नाम पर हैं। देश में 10 करोड़ से अधिक नि:शुल्क गैस कनेक्शन महिलाओं को दिये गये हैं।कहा कि विधानसभाओ व लोकसभा में महिलाओं को 33 प्रतिशत प्रतिनिधित्व दिलाया जायेगा। कहा कि देश में 80 करोड़ लोगों को व प्रदेश में लगभग 16 करोड़ लोगों को प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत राशन दिया जा रहा है, आगे भी 5 साल तक दिया जाता रहेगा। कहा कि देश को 100 साल आगे ले जाने व विकसित भारत बनाने के लिए मोदी जी के नेतृत्व में तेजी से काम हो रहा है। उन्होंने उपस्थित सभी समूहों का आह्वान किया कि वह नमो ऐप जरूर डाउनलोड करें, इससे महत्वपूर्ण जानकारियां हासिल होती रहेंगी। उन्होंने बी सी सखी व विद्युत सखियों सहित अन्य सखियों के कार्यों की चर्चा करते हुए कहा कि इससे न केवल महिलाओं का आजीविका संवर्धन हो रहा है बल्कि महिलाओं की अपनी पहचान बनी है, महिलाओं का समाज में सम्मान भी बढ़ा है। कहा कि स्वयं सहायता समूह अब राष्ट्र सहायता समूह बनकर उभर रहे हैं। प्रधानमंत्री द्वारा देश में 3 करोड़ दीदियों को लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य रखा गया है और इस दिशा में बहुत तेजी के साथ काम हो रहा है। जब लखपति दीदी गांव -गांव में होंगी, तब देश की तस्वीर व तकदीर बदली नजर आयेगी। जो बहने हस्तकला में माहिर हैं, हुनरमंद है, उन्हें आगे बढ़ाने व उनके प्रोत्साहन के लिए पी एम विश्वकर्मा योजना लागू की गयी है। 5lवों की बहनों के लिए नमो ड्रोन दीदी योजना लाई गयी है, जिसके तहत दीदियों को खेती में ड्रोन का उपयोग करने की ट्रेनिंग दी जा रही है, इससे महिलाओं की अतिरिक्त आमदनी होगी। कहा कि नारी शक्ति व मां भारती के उज्जवल भविष्य के लिए सरकार प्रतिबद्ध व संकल्पबद्ध होकर कार्य कर रही है।

सपा व बसपा के पूर्व विधायक समेत कई नेता भाजपा में शामिल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी, प्रदेश के उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक के समक्ष बुधवार को पार्टी के राज्य मुख्यालय पर सपा के पूर्व विधायक संजय गर्ग (सहारनपुर), बसपा के पूर्व विधायक रामकुमार गौतम (गाजीपुर), पूर्व विधायक सुरेन्द्र नाथ सिंह (बलिया), नगर पालिका अध्यक्ष अरविन्द यादव (जालौन), सपा से नगर पंचायत अध्यक्ष राजकिशोरी (महोबा), नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिमा गौतम (लखीमपुर), नगर पंचायत अध्यक्ष प्रिंस कुमार वर्मा (बलरामपुर), नगर पंचायत अध्यक्ष सुनीता मलिक (बागपत), ब्लाक प्रमुख मजहरून्निशां (संतकबीर नगर), जिला पंचायत सदस्य लीलाधर दुबे 'कुल्लू' (ललितपुर), प्रेमाबाई अहिरवार (ललितपुर), नरेन्द्र झा (ललितपुर), हिमांशु त्रिपाठी (फतेहपुर), अमरेन्द्र भारद्वाज (लखनऊ), पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष वंदना पाठक (झांसी), सपा की पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष नीरू पटेल (बरेली), पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष मधु शिवहरे (हमीरपुर), बसपा के पूर्व झांसी कमीश्नरी अध्यक्ष व पूर्व विधानसभा प्रत्याशी तथा जालौन से बसपा के पांच बार जिलाध्यक्ष रहे श्री मूलशरण कुशवाहा, कांग्रेस के पूर्व लोकसभा प्रत्याशी डा. चन्द्रेश कुमार उपाध्याय (सिद्धार्थनगर), सपा के पूर्व विधानसभा प्रत्याशी केशव बाबू शिवहरे (हमीरपुर), सपा के पूर्व विधानसभा प्रत्याशी मुन्ना लाल रजक (ललितपुर), सपा के पूर्व विधान परिषद प्रत्याशी प्रमोद कुमार सिंह पटेल (मीरजापुर), बसपा के पूर्व विधानसभा प्रत्याशी डा. पीयूष कुमार यादव (आजमगढ़), पूर्व अध्यक्ष नगर पंचायत गिरधारी लाल सोनकर (गोरखपुर), बड़ी संख्या में अपने समर्थकों के साथ भाजपा परिवार में शामिल हुए। इस दौरान प्रदेश उपाध्यक्ष कान्ताकर्दम तथा प्रदेश मीडिया सहप्रभारी हिमांशु दुबे उपस्थित रहे। संचालन प्रदेश उपाध्यक्ष बृज बहादुर ने किया। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने भाजपा परिवार में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रवाद तथा सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास की नीति पर चलने वाला राजनैतिक दल है।

भाजपा ने नारी सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया : रामवीर कठेरिया

● नारी शक्ति बंदन कार्यक्रम में उमडी महिलाओं व भाजपा नेताओं की भीड़

नारी शक्ति बंदन वर्चुअल कार्यक्रम को देखते भाजपा नेता।

संवाददाता। गुरसहायगंज (कन्नौज)

नगर पालिका परिषद में नारी शक्ति बंदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें दर्जनों महिलाओं सहित भाजपा नेताओं ने प्रतिभाग कर वर्चुअल कार्यक्रम में वरिष्ठ भाजपा नेताओं के विचारों को सुना व देखा। इस दौरान भाजपा जिला महामंत्री रामवीर कठेरिया ने कहा कि भाजपा सरकार नें नारी सशक्तिकरण को बढावा दिया है।

बुधवार को स्थानीय नगर पालिका परिषद में आयोजित नारी शक्ति बंदन के वर्चुअल कार्यक्रम में देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित अन्य वक्ताओं ने भाजपा सरकार द्वारा नारी शक्ति को स्वावलम्बी एवं आत्मनिर्भर बनानें की योजनाओं का विस्तृत रुप से उल्लेख किया। कार्यक्रम के उपरान्त भाजपा जिला महामंत्री रामवीर कठेरिया नें कहा कि भाजपा सरकार द्वारा नारी हित में शौचालय योजना, उज्जवला योजना, तीन तलाक, प्रधानमंत्री आवास योजना, महिला हेल्पलाईन नम्बर सहित अन्य योजनाओं का क्रियान्वयन कर नारी शक्ति को स्वावलम्बी बनाकर समाज की मुख्य धारा में जोडने का कार्य किया है। इस दौरान भाजपा नगर अध्यक्ष धर्मेन्द्र कौशल, भाजपा महिला नगर अध्यक्ष अर्चना गुप्ता, भाजपा नेत्री बीना चौहान, भूरा कठेरिया, विजय दुवे, संजीव गुप्ता, अमन कठेरिया, दीपक सिंह सहित मीना, प्रीती, राखी, सुनीता, अनीता सहित तमाम कार्यकर्ता मौजूद रहे।

महिलाओं ने देखा शक्ति वंदन कार्यक्रम का लाइव प्रसारण

गोला गोकर्णनाथ खीरी । नगर पालिका परिसर सभागार में मुख्य अतिथि विजय शुक्ला रिंकू चेयरमैन नगर पालिका परिषद गोला के सानिध्य में शक्ति वंदन अभियान के निमित्त प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को समूह की बहने, आशा बहनोंएवं लाभार्थी बहनों ने लाइव प्रसारण के माध्यम से सुना गया। इस अवसर पर,गीता विश्वकर्मा नगर अध्यक्ष महिला मोर्चा, सीमा सक्सेना जिला उपाध्यक्ष महिला मोर्चा,आरती भदौरिया जिला मंत्री महिला मोर्चा, नगर उपाध्यक्ष रेखा मिश्रा, सीमा वर्मा, जिला उपाध्यक्ष विनोद वर्मा, अशोका सक्सेना, नगर महामंत्री राजेश राठौर, नगर अध्यक्ष/कार्यक्रम संयोजक शत्रोहन मिश्रा, विजय मिश्रा, धीरज बाजपेयी, विमलेश वर्मा, सुनील मिश्रा, राहुल बाल्मीकि ,रजत गुप्ता, वैजनाथ अग्निहोत्री सहित सैकड़ों की संख्या में महिलाएं उपस्थित रही।

भाजपा ने किया नारि शक्ति वंदन कार्यक्रम का आयोजन

संडीला(हरदोई)। नारि शक्ति वंदन अभिनंदन कार्यक्रम के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बंगाल में दिए गए भाषण का प्रसारण किया गया। नगर पालिका परिषद सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में क्षेत्रीय विधायक अलका अर्कवंशी, अधिशासी अधिकारी विजेता गुप्ता, भाजपा नगर अध्यक्ष नीतीश जायसवाल के अलावा बड़ी संख्या में महिलाओं की उपिस्थति रही। इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि नारि शक्ति को समाज में आगे बढ़ाने के लिए भाजपा ने बहुत प्रयास किया है। उनके मान सम्मान की रक्षा के साथ साथ उनको लोकसभा और विधानसभा में आरक्षण की भी व्यवस्था की है। इसके अलावा आगामी लोकसभा चुनाव में पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिया जा रहा है।

युवराज दत्त महाविद्यालय में कौशल विकास पर कार्यशाला आयोजित, दिया गया प्रशिक्षण

लखीमपुर-खीरी। युवराज दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय में कौशल विकास व रोजगार संभावनाओं को दृष्टिगत कौशल विकास पर एक कार्यशाला का आयोजन बुधवार को किया गया। यह आयोजन महाविद्यालय व डिजाइनिंग गेटवे के संयुक्त तत्वाधान में किया गया। इस कार्यशाला में फैशन डिजाइनिंग, इंटीरियर डिजाइनिंग, फोटोग्राफी, डिजिटल मार्केटिंग, वेब डिजाइनिंग, डेटा एनलिसिस जैसे विषयों में विद्यार्थियों को जानकारी उपलब्ध कराई गई। डिजाइन गेटवे के निदेशक तरंग सिंघल ने कहा कि कौशल विकास व इसके रोजगार में महत्व को देखते हुए डिजाइनिंग के प्रति नवयुवकों व नवयुवतियों में जागरूकता बढ़ी है और छोटे शहरों में और अधिक जागरूक करने की आवश्यकता है। युवा व पेशेवर दोनों व स्वयं को अद्यतन रखने व नये कौशलों को सीखने के महत्त्व को सरल व रुचिपूर्ण तरीके से समझाया कि कौशल विकास की क्या आवश्यकता है। इस कार्यशाला में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर हेमन्त कुमार पाल ने अपने उद्बोधन में कहा कि नई शिक्षा नीति में कौशल विकास पाठ्यकम का हिस्सा भी है और फैशन डिजाइनिंग व इंटीरियर डिजाइनिंग, ग्राफिक डिजाइनिंग जैसे प्रोफेशनल कोर्सेज विद्यार्थियो को आत्मनिर्भर बनाने व रोजगार के लिए नये अवसर प्रदान करते हैं। डिजाइनिंग गेटवे की टीम की कैरियर सलाहकार अर्पिता वर्मा, ग्राफिक डिजाइनर अर्चना मोहन, फैशन डिजाइनिंग शिखर सक्सेना और जरीन सादिक ने विभिन्न रिकल आधारित कोर्सज को वित्तीय सहायता और उत्पादकता बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण बताया। इस कार्यकम के आयोजन में प्रो. नीलम त्रिवेदी व प्रो. ज्योति पंत की सकिय भूमिका रही। कार्यकम में महाविद्यालय के प्रो. संजय कुमार, प्रो. विशाल द्विवेदी, प्रो. एसके पाण्डेय, डॉ. इष्टविभु प्रो. सत्यनाम, प्रो. मनोज मिश्रा, सतेन्द्र पाल सिंह, डॉ. ओम प्रकाश सिंह, मोहम्मद आमिर, देशराज, विजय प्रताप, बृजेश कुमार, दीपक बाजपेई, मानवेन्द्र यादव, सौरभ कुमार व महाविद्यालय के विभिन्न संकायों के विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रही।

मुकदमा वापस लेने के दबाव के चलते पिता ने फांसी लगाकर जान दी

● दो चचेरी बहनों के रेप के बाद आत्महत्या करने का मामला

संवाददाता। हमीरपुर

सिसोलर क्षेत्र के एक गांव में दो चचेरी बहनों के साथ हुये सामूहिक दुष्कर्म के बाद आत्महत्या कर लेने के मामले में दबंगो द्वारा पिता पर मुकदमा वापस लेने का दबाव बनाने पर पिता ने बुधवार को पेड़ में फंदा डालकर फांसी लगा ली। इस घटना से पुलिस बिभाग में हलचल मच गयी है। पुलिस के मुताबिक सिसोलर क्षेत्र के एक गांव में एक सप्ताह पहले मजदूरी कर रही सोलह वर्षीय व चौदह वर्षीय दो चचेरी बहनो के साथ घाटमपुर के बरौली ईट भट्ठे में बलात्कार करने के बाद बीडियों बनाकर नेट मीडिया में प्रसारित किया गया था जिससे दोनो बहनो ने 27 फरवरी को आत्महत्या कर ली थी। उनके शव पेड से लटके पाये गये थे। मामले में कानपुर नगर के घाटमपुर पुलिस ने भट्ठा के मजदूरों के ठेकेदार समेत तीन लोगो को जेल भेजा था। घटना के बाद सोलह वर्षीय किशोरी का पिता बहुत ही डिप्रेशन में रहने लगा था मजदूरों का ठेकेदार जो गांव का था भट्टे का मालिक के चहेते पीड़ित से बराबर मुकदमा वापस लेने का दबाव बनाता था। जिससे उसने बुधवार को गांव के बाहर जाकर पेड़ से लटक कर फांसी लगा ली। मृतक के लड़के ने पुलिस अधिकारियों को बताया कि मंगलवार को ठेकेदार की पत्नी ने गांव आकर हंगामा काटा था। कल से उसके पिता गुमशुम रहने लगे थे आज उसने फांसी लगाकर जान दे दी है। पुलिस का कहना है कि फिलहाल इस मामले में जांच की जा रही है। जांच के बाद कार्यवाही की जायेगी घटना ने नया मोड ले लिया है।

रूट डाइवर्जन से मोरम घाट संचालकों को सताने लगी तगड़े नुकसान की चिंता

● नऊवाबाग से राधानगर की ओर नहीं मुड़ेंगे खाली भारी वाहन, लोडेड ट्रक ही इस रूट से गुजरेंगे

● पेट्रोल पम्प व्यवसाय भी होगा प्रभावित, ट्रांसपोर्टरों ने उठाए सवाल

फतेहपुर। जिला प्रशासन के हालिया रूट डाइवर्जन आदेश से जनपद में सरकारी राजस्व को काफी नुकसान पहुंचने की अटकलें तेज हो गई हैं। साथ ही जनपद के मोरम घाट संचालकों को तगड़ा नुकसान भी संभावित है, इसके अलावा स्थानीय पेट्रोल पम्प व्यवसाय भी प्रभावित होने की बात कहीं जा रही हैं। लोडेड ट्रक अब ही इस रूट से गुजरेंगे।उल्लेखनीय है कि सैकड़ों करोड़ की लागत वाले बांदा बाईपास के निर्माण के छ: माह के अंदर ही ध्वस्त हो जाने और वर्षों बाद भी इस नवनिर्मित बाईपास की जांच न होने से क्षेत्रीय लोग शासन-प्रशासन को कठघरे में खड़ा करते रहे हैं। नतीजन नऊवाबाग से राधानगर के मध्य सिस्टम को हलाकान करने वाला जाम प्राय: लगता है और घंटों छोटे-बड़े वाहन फंसे रहते हैं। पिछलें दिनों सूबे के कृषि मंत्री सूर्यप्रताप शाही इस जाम में फंस गये तो उन्होंने स्थानीय एक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी की जमकर क्लास ली और इस समस्या का स्थाई समाधान कराने के निर्देश दिये। खबर है कि एक वरिष्ठ मंत्री के जनपद में फंसने और क्लास लगने के बाद जिला प्रशासन ने आनन-फानन में रूट डाइवर्जन का फरमान जारी कर दिया गया।नई व्यवस्था के तहत मोरम-गिट्टी आदि खनिज लेकर इस जनपद से गुजरने वाले भारी वाहन लखनऊ, रायबरेली आदि जनपदो में अन-लोड़िंग के बाद नई व्यवस्था के तहत वापसी में नऊवाबाग राधानगर की ओर न मुड़कर जीटी रोड होते हुए बिंदकी वाया कुंवरपुर पहुँचेंगे, वहाँ से जोनिहा, बंदवा, चिल्ला होते हुए बांदा जायेंगे, इनमें कुछ वाहन बंदवा से बहुआ की ओर मुड सकते हैं। सोचनें वाली बात यह है कि जिला प्रशासन ने अपना परिवहन तंत्र सुधारने के बजाए नया रूट डायवर्जन का जो फरमान प्रभावी किया है, उससे से भारी वाहनों को 45-50 किलोमीटर की न सिर्फ अतिरिक्त दूरी तय करनी पड़ेगी बल्कि कुंवरपुर रोड़ की जटिलताओं से भी दो-चार होना पड़ेगा। दूसरी ओर नये रूट डायवर्जन से भारी वाहनों को जनपद के प्रमुख मोरम खनन केन्द्र लिलरा व कौउहन पहुंचने में अतिरिक्त सफर दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

रिक्शा में सवार महिलाओं ने महिला का पर्स किया गायब,दो हिरासत में

मौदहा, हमीरपुर। सरकारी अस्पताल से बड़ा चौराहा की ओर ई- रिक्शा में सवार होकर जा रही महिला के झोले में पड़े पर्स को रिक्शा में सवार अज्ञात महिलाओं ने पार कर दिया। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने दो महिलाओं को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरु कर दी है। पुलिस के मुताबिक क्षेत्र के कम्हरिया गांव निवासी तसनीम बानों पत्नी शफीक अहमद ने मंगलवार को वह सरकारी अस्पताल से ईलाज कराने के बाद ई रिक्शा में सवार होकर बड़ा चौराहा की ओर जा रही थी जिसमें और भी अज्ञात महिलाएं बैठीं थीं। जब वह रिक्शे से उतरकर कम्हरिया की आटो में बैठी और अपना झोला देखा तो उसका पर्स गायब था जिसमें कान के सोने के बाला तथा नकद दो हजार रूपये और रेडमी का मोबाइल पड़ा था। वहीं घटना की लिखित तहरीर पीड़ित महिला ने कोतवाली पुलिस को सौंपकर अज्ञात महिलाओं के खिलाफ कानूनी कार्यवाही करने तथा उसका सामान बरामद कराने की मांग की है।

क्विक न्यूज

नुक्कड़ नाटक से भ्रूण हत्या व पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

फतेहपुर। डॉ. बीआर अंबेडकर राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के सप्त दिवसीय विशेष शिविर के छठवें दिन स्वयंसेविकाओं ने नुक्कड़ नाटक के माध्यम से अभिग्रहीत ग्रामवासियों को भ्रूण हत्या निषेध व पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया। प्राथमिक विद्यालय गढ़ीवा के बच्चों ने भी नुक्कड़ नाटक को प्रस्तुत किया। अधिक संख्या में लोग नुक्कड़ नाटक देखने पहुँचे तथा नाटक की प्रशंसा भी की। नुक्कड़ नाटक के बाद स्वयं सेविकाओं ने मतदाता को जागरूक करने के लिये वॉल पेंटिंग भी की। राष्ट्रीय सेवा योजना के बौद्धिक सत्र में पंजाब नेशनल बैंक वर्मा चौराहा के शाखा प्रबन्धक मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने छात्राओं को ऑनलाइन बैंकिंग के बारे में जागरूक करते हुये कहा कि हमें सुरक्षा के साथ ऑनलाइन बैंकिंग का उपयोग करना चाहिए। किसी भी परिस्थिति में अंजान व्यक्ति के साथ खाते से संबंधित कोई भी जानकारी साझा नहीं करनी चाहिए।

साइबर सेल ने ठगी पीड़ित के वापस कराए पौने चार लाख

फतेहपुर। शहर क्षेत्र के वीआईपी रोड स्थित ओमकार कालोनी में रहने वाले एक व्यक्ति को साइबर ठगों ने चूना लगाते हुए नौ लाख रूपए आनलाइन ट्रांसफर कर लिए। जब उन्हें ठगी की जानकारी हुई तो उन्होने एसपी से गुहार लगाई। एसपी के निर्देशन में साइबर सेल टीम ने तत्काल कार्रवाई करते हुए ठगी पीड़ित के 03 लाख 70 हजार रूपए खाते में वापस कराए। बताते चलें कि 13 फरवरी को अनुराग उत्तम पुत्र अनिल कुमार उत्तम निवासी ईसेपुर आलमपुर हाल पता ओमकार नगर वीआईपी रोड थाना कोतवाली नगर ने पुलिस कार्यालय में उपस्थित होकर पुलिस अधीक्षक को संबोधित प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर बताया कि आनलाइन ट्रेडिंग करने की बात बताकर उससे करीब नौ लाख रूपया आनलाइन माध्यम से ट्रांसफर करा लिए। कोई लाभ नहीं दिया। एसपी ने साइबर क्राइम पुलिस टीम को त्वरित कार्यवाही हेतु आदेशित किया जिस पर तत्काल कार्यवाही करते हुए आवेदक से ट्रांसफर हुए रूपयों का विवरण प्राप्त करते हुए तत्काल पोर्टल पर शिकायत दर्ज की।

मानसिक विक्षिप्त पति के सूखे कुएं में कूदने के बाद पत्नी ने भी लगा दी छलांग

कुरारा(हमीरपुर)। पत्नी से कहासुनी के बाद एक मानसिक विक्षिप्त पति गांव में ही सूखे कुएं में कूद कर आत्महत्या का प्रयास किया।पति को बचाने के लिए कुएं में पत्नी ने भी छलांग लगा दी। ग्रामीणों ने रस्सी की मदद से दोनों को बाहर निकाला। थाना क्षेत्र के परसी का डेरा गांव निवासी हंसकुमार निषाद अपनी पत्नी सुनीता से बुधवार को किसी बात पर कुछ कहासुनी हो गई थी। जिससे नाराज हंसकुमार वही गांव में ही पास में बने एक सूखे कुएं में जाकर कूद गया। वही पास में मौजूद कुछ लोगो ने जब उसे कूदते हुए देखा तो शोर मचाया। शोर सुन हंसकुमार की पत्नी सुनीता भी वहां पहुची और अपने पति को देख उसे बचाने के लिए उसने भी कुएं में छलांग लगा दी। ग्रामीणों ने जल्दी से रस्सी का इंतजाम कर रस्सी को कुएं में फेंका तब सुनीता ने अपने पति को रस्सी के सहारे बाहर निकाला।

पुलिस ने सीमा सुरक्षा बल के साथ नगर में किया पैदल मार्च

बिन्दकी (फतेहपुर)। आगामी लोकसभा सामान्य निर्वाचन के दृष्टिगत पुलिस क्षेत्राधिकारी सुशील दुबे बिन्दकी, इंस्पेक्टर क्राइम श्याम प्रकाश पाण्डेय, सशस्त्र सीमा सुरक्षा बल के कम्पनी कमांडर पवन कुमार द्वारा पुलिस बल एवं सशस्त्र बल के साथ कोतवाली क्षेत्रांर्तगत एरिया डोमिनेशन किया गया। कस्बा क्षेत्र में भ्रमण किया तथा निर्भीक एवं स्वतंत्र मतदान करने हेतु लोगों को जागरूक किया गया। पुलिस के साथ भारी सुरक्षा बल देखकर एकबारगी नगर के लोग आशंकित हो उठे किंतु जब पता चला कि यह तो उन्हें ही सुरक्षा का अहसास कराने के लिए है तो राहत की सांस ली। सुरक्षा बलों का यह पैदल मार्च नगर बिंदकी के प्रमुख मार्गो व मुख्य बाजार से गुजरा।

फसल की क्षति की सूचना पहुंचाई

बांदा। अतिवृष्टि से जनपद बांदा की तहसील बबेरू, नरैनी एवं पैलानी के कुल 41 राजस्व ग्रामों के 6322हे0 में फसल की क्षति होने की सूचना सम्बन्धित तहसीलों द्वारा उपलब्ध करायी गयी थी। किसानों की फसलों की हुयी क्षतिपूर्ति का आंकलन कर मु0-9,72,30,244/-रू0 (मु0 नौ करोड़ बहत्तर लाख तीस हजार दो सौ चौवालिस रू0) धनावंटन उपलब्ध कराये जाने हेतु राहत आयुक्त महोदय से मांग की गयी थी, जिसके कम में राहत आयुक्त कार्यालय द्वारा उक्त धनराशि जनपद को उपलब्ध करा दी गयी है। आज दिनांक 06.03.2024 को तहसील पैलानी के सभागार में 87 किसानों को क्षतिपूर्ति का वितरण श्री रामकेश निषाद, मा0 राज्य मंत्री, जल शक्ति विभाग, उ0प्र0 द्वारा किया गया तथा तहसील बबेरू में श्री सुनील पटेल, अध्यक्ष, जिला पंचायत बाँदा द्वारा एवं तहसील नरैनी में श्रीमती ओममणि वर्मा, मा0 विधायक नरैनी द्वारा किसानों को क्षतिपूर्ति का वितरण किया गया।

बाइक सवार युवक की ट्रैक्टर की टक्कर से मौत

फर्रुखाबाद। ट्रैक्टर की टक्कर से बाइक सवार युवक विक्रम राजपूत की मौत हो जाने पर परिवार में हाहाकार मच गया। विक्रम थाना जहानगंज के ग्राम बंथल शाहपुर निवासी विश्वनाथ राजपूत का 28 वर्षीय पुत्र था। विश्वनाथ ने बताया कि विक्रम अपनी बहन प्रतिमा के घर दनिया हुसैनपुर जा रहा था। 8 दिन पहले वहां किसी की मृत्यु हो गई थी। संकिसा रोड पर नीम करोरी की तरफ से आ रहे ट्रैक्टर चालक ने आलोक ईट भट्ठे के पास विक्रम की बाइक में टक्कर मार दी। 108 नंबर एंबुलेंस से घायल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मोहम्मदाबाद ले जाया गया। डॉ सनी मिश्रा ने विक्रम को मृत घोषित कर दिया।पुलिस ने टैक्टर चालक को हिरासत में लेकर टैक्टर को कब्जे में ले लिया। विक्रम की शादी 5 वर्ष पहले महालक्ष्मी से हुई थी विक्रम का एक चार वर्षीय पुत्र सार्थक है। विक्रम दिगी में ओला गाड़ी चलाता था 4 दिन पहले ही वह गांव आया था। विक्रम की मौत पर मां देवकी पत्नी महालक्ष्मी का रो.रोकर बुरा हाल हो गया।

लाइन मैन की पोल गिरने से हुई मौत

कायमगंज फर्रुखाबाद । कोतवाली क्षेत्र के गांव भटासा निवासी प्रेमचंद जाटव का 21 वर्षीय पुत्र अंकुल ठेकेदारी में दिहाड़ी मजदूरी कर बंच केबिल डालने का कार्य करता है परिजनों ने 12000 रूपये किलोमीटर के हिसाब से बंच केबिल का दिहाड़ी दी जाती है । आज वह उलियापुर गांव में पोल पर चढ़कर काम कर रहा था तथा बंच केबिल डालने के लिए पोल पर चढ़ा हुआ था जबकि पोल नीचे से गलकर टूटने की कगार पर था। मृतक अकुल का भाई श्रीकृष्ण ने बताया कि वह अपने भाई के साथ कार्य करता है भाई को गले हुए पोल पर चढ़ने के लिए मना भी किया था पर अंकुल नही माना और पोल पर चढ़ गया जैसे ही बंच केबिल पोल पर डाली वैसे ही पोल गले हुए स्थान से टूट गया जिससे पोल पर चढ़ा हुआ युवक ऊपर से नीचे गिरकर गंभीर रूप से घायल होगया घायल अवस्था मे अंकुल को इलाज के लिए सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां डाक्टर अमरेश ने अंकुल को मृत घोषित कर दिया मृतक अंकुल के तीन भाई व एक बहन है मृतक की शादी दो साल पहले जौनपुर से हुई थी मृतक के एक बर्ष की बेटी भी है।

रामपाल मौर्य पीजी कालेज में स्मार्ट फोन वितरित

फतेहपुर। सुल्तानपुर घोष स्थित रामपाल मौर्य पीजी कॉलेज में बुधवार को महाविद्यालय के कार्यकारी प्रबंधक योगेंद्र नाथ मौर्य के मुख्य आतिथ्य एवं डॉ. ऊषा श्रीवास्तव की अध्यक्षता में बीए के लगभग 250 छात्र-छात्राओं को स्मार्टफोन वितरित किया। इस अवसर पर देवीदीन मौर्य, आवेश सिंह, धर्मराज मौर्य, आदित्य कुमार, सोनी सिंह, नसरीन सिद्दीकी, प्रीति सिंह, निकिता अवस्थी, राजेश यादव, साफिया बानो, सुजीत सिंह, गौरीशंकर पटेल, राजेंद्र कुमार मौर्य, विकास मौर्य, अमित कुमार आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन बिन्दा प्रसाद मौर्य एवं आभार डॉ. श्रीनाथ मौर्य ने व्यक्त किया।

जिलाधिकारी ने किया सितवनपुर पिथू गौशाला का निरीक्षण

फर्रुखाबाद। जिलाधिकारी डॉ. वीके सिंह द्वारा सितवनपुर पिथू गौशाला का निरीक्षण किया गया निरीक्षण में गौशाला में अत्यंत गंदगी पाई गई सभी व्यवस्थाये , अविवस्थित पाई गई गौवंश दुर्बल पाये गयेएगौशाला में 521 गौवंश पाये गये जिनमे 08 दुधारू है गौशाला में 1केयरटेकर व 14 गौपालकों की नियुक्ति बताई गई सही तरह से साफ़ सफाई न होने पर जिलाधिकारी द्वारा नाराजगी जताई गई। एबी डी ओ को निर्देश दिया कि पंचायत सचिव से स्पष्टीकरण लिया जाए कि लापरवाही में क्यो न निलंबित कर दिया जाये । जिलाधिकारी द्वारा उपस्थिति पंजिका से उपस्थिति का मिलान किया गया जिलाधिकारी द्वारा दिसंबर महीने के खर्चे का हिसाब चेक किया गयाएगौशाला के मैनेजर द्वारा कोई भी कार्य सही ढंग से नही किया जा रहा है ।प्रधान द्वारा बताया गया कि गौशाला में रोज 25 से 26 कुंतल भूसा खर्च हो रहा है,बी डी ओ ने बताया कि उनके क्षेत्र में कोई भी आवारा जानवर छुट्टा नही घूम रहा है। जिलाधिकारी द्वारा गौशाला की खराब स्थिति पर सी वी ओ, व बी डी ओ से स्पष्टीकरण तलब किया गया । डी डी ओ को निर्देशित किया कि सभी बी डी ओ व ई ओ से ये प्रमाणपत्र लिया जाए कि उनके क्षेत्र में कोई भी खुला गौवंश नही है । सभी को गौशाला मैं रखा गया है ए गायो को चारा सही से दिया जाये। गौशाला में कुल 550 बीधे जमीन है जिससे20 बीघे पर शेड व 95 बीघे में चारा बोया गया है बाकी खाली है। जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि गौशाला की खाली पड़ी जमीन पर चारा, जौ बरसीम नैपियर घास उगाई जाये। जिसका उपयोग गौशाला में किया जाये जो शेष बचे उसको उपजिलाधिकारी, सी वी ओ व बी डी ओ की समिति की निगरानी में बाजार में बेंचा जाये। जिससे गौशाला की आय बढ़ाई जा सके गौवंश के गोबर व पेशाव के सही इस्तेमाल के निर्देश दिए एवं गौशाला की रंगाई पुताई कराने के निर्देश भी दिए जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि सभी व्यवस्थाओं को 15 दिन में ठीक कर लिया जाये।

विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना के लाभार्थियों को बांटी किट

फ तेहपुर। प्रधानमंत्री विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना का लाभार्थियों को भाजपा जिलाध्यक्ष मुखलाल पाल द्वारा किट वितरण की बुधवार को भाजपा जिला कार्यालय में विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना के लाभार्थियों को किट का वितरण किया गया। जिलाध्यक्ष मुखलाल पाल द्वारा नौ लाभार्थियों को सिलाई मशीन, तीन को कार पेंटर, नाई के चार व लोहार के एक लाभार्थी को किट का वितरण किया। इस दौरान कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष मुखलाल पाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सबका साथ सबका विश्वास का नारा देने के साथ ही हर परिवार को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिये पात्रों को ट्रेनिंग व आवश्यक औजारों की उपलब्धता कराकर सम्मान जनक आय के स्त्रोत बनाने का कार्य किया गया है। बताया कि केंद्र व प्रदेश सरकार द्वारा युवाओं एवं महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिये अनेकों रोजगार परक योजनाएं संचालित की जा रही है। बताया कि लोकसभा चुनाव में जनता एक बार फिर से भाजपा सरकार बनाने का काम करेगी। इस मौके पर मनोज शुक्ला, राजा सिंह कछवाहा, देवनाथ धाकड़े, अभिषेक शुक्ला, अमित शिवहरे, रितेश गुप्ता, बृजेश सोनी, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष ज्योति प्रवीण, रिंकू लोहारी, मनोज शुक्ला, सुनील कुमार समाजसेवी, विवेक कुमार श्रीवास्तव, मनोज शुक्ला आदि रहे।

रेलवे स्टेशन कायमगंज गाड़ी संख्या 05379 पर तीन बच्चे मिले

फर्रुखाबाद। रेलवे स्टेशन कायमगंज गाड़ी संख्या 05379 पर तीन बच्चे मिले हैं जिनकी उम्र व नाम मुस्कान दो वर्ष राधा 3 वर्ष रीना 5 वर्ष लगभग की है बच्चे अपने माता-पिता का नाम अंजू पिता का नाम दुर्गविजय बता रहे हैं बच्चे फर्रुखाबाद से अपनी मम्मी के साथ कायमगंज आए थे इसके बाद मम्मी के द्वारा छोड़कर जाना बताया गया है बच्चे अपना घर का पता नहीं बता पा रहे हैं बच्चों को आरपीएफके द्वारा फर्रुखाबाद लाया गया तथा चाइल्ड हेल्पलाइन टीम के द्वारा बाल संरक्षण के ऑफिस पेश किया गया संबंधित कार्रवाई के बाद बच्चों को समक्ष पेश किया जा रहा है संबंधित बच्चों के संबंध में किसी भी थाने पर कोई भी सूचना प्राप्त होती है तो थाना रेलवे स्टेशन सूचित करें।

विधायक ने किया उद्घाटन प्रधानमंत्री जन आरोग्य मंदिर

लखीमपुर खीरी। बुधवार को सीएचसी मोहम्मदी में धौरहरा सांसद /प्रदेश उपाध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी रेखा अरुण वर्मा व मोहम्मदी भाजपा विधायक लोकेंद्र प्रताप सिंह द्वारा 13 प्रधानमंत्री जन आरोग्य मंदिर और सीएचसी मोहम्मदी व सीएचसी पसगवां सहित तीन पीएचसी पर कुल 58 बेड़ो की अतिरिक्त व्यवस्था का लोकार्पण किया गया। इस दौरान उनके साथ सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता भी मौजूद रहे। लोकार्पण कार्यक्रम में बोलते हुए धौरहरा सांसद /प्रदेश उपाध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी रेखा अरुण वर्मा ने कहा कि डबल इंजन की सरकार ने जो वादे किए थे वह सभी निभा कर दिखाए हैं। बिजली पानी और सड़क के साथ ही स्वास्थ्य सेवाओं को भी बेहतर किया गया है। गांव-गांव तक आम जनमानस को स्वास्थ्य सेवाएं मिल रही हैं। प्रधानमंत्री जन आरोग्य मंदिर इसकी एक मिसाल बनेंगे। भाजपा विधायक लोकेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं पर विशेष ध्यान दिया है। आबादी के बढ़ने के साथ ही स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ाया गया है। जिस तरह से सीएचसी मोहम्मदी और सीएचसी पसगवां में 20-20 बेड के अतिरिक्त बेड़ो की व्यवस्था की गई है। इस प्रकार पीएचसी हरनाजाट, औरंगाबाद और उचौलिया में 6-6 बेड की अतिरिक्त व्यवस्था की गई है। जिससे भर्ती होने वाले मरीजों को बेड की कमी का सामना न करना पड़े और उन्हें उनके क्षेत्र में ही इलाज मिल जाए। सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता ने बताया कि किए गए कार्य की अनुमानित लागत 1.5 करोड़ रुपए है। सभी प्रधानमंत्री जन आरोग्य मंदिरों पर जल्द स्वास्थ्य सेवाएं मिल रही हैं, शासन की मंशा के अनुरूप स्वास्थ्य विभाग निरंतर गुणवत्ता परक स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रही है।

नहीं शुरू हुआ विजयीपुर गाजीपुर मार्ग का निमार्ण कार्य

फतेहपुर। पीडब्ल्यूडी विभाग दावा कर रहा है कि गाजीपुर से विजयीपुर रोड का निर्माण कार्य चालू कर दिया गया है। कागजों में तस्वीरों में जीएसबी से खाली होते हुए ट्रक को विभाग दिखा रहा है। विभाग ने पुन: एक साजिश सोंच समझकर की है। दो चार ट्रक जीएसबी गिराते हुए दिखा कर विभाग जीएसबी के नाम पर करोड़ों रुपए का बजट गायब करेगा। पुन: 10 दिन बाद आचार संहिता लगनी है। चुनावी माहौल रहेगा। इसी का फायदा उठाते हुए विभाग करोड़ों रुपए गायब करने की चाल में है। कोई भी संस्था दो दिन में न ही नया प्लांट तैयार कर पाती है न ही मशीनरी खरीद के ले आती है। रेंट में मशीनरी ढूंढने में भी दो से चार दिन का समय लगता है। विभाग ने इतनी जल्दी इसीलिए दावा किया था कि तीन मार्च से कार्य एक साथ तीन जगह से चालू कर दिया जाएगा कि चालू करने के नाम पर दो-चार करोड़ का बिल बन जाएगा।

श्रीनगर में कई विकास योजनाओं का शुभारंभ करेंगे मोदी

भाषा। नई दिल्ली

जम्मू-कश्मीर को विशेष अधिकार देने वाले संविधान के अनुच्छेद 370 के अधिकतर प्रावधानों को खत्म किए जाने के बाद प्रधानमंत्री बृहस्पतिवार को अपनी पहली कश्मीर यात्रा के दौरान श्रीनगर में कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे तथा एक जनसभा को संबोधित करेंगे। भाजपा नीत केंद्र सरकार ने पांच अगस्त 2019 को अनुच्छेद 370 के अधिकतर प्रावधानों को निरस्त कर दिया था और राज्य को दो केंद्र शासित प्रदेशों जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में विभाजित कर दिया था।

प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने बुधवार को एक बयान में कहा कि मोदी कृषि-अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन देने के लिए लगभग 5,000 करोड़ रुपए के समग्र कृषि विकास कार्यक्रम (एचएडीपी) की शुरुआत करेंगे।एचएडीपी एक एकीकृत कार्यक्रम है जिसमें जम्मू कश्मीर में कृषि-अर्थव्यवस्था के तीन प्रमुख क्षेत्रों अर्थात बागवानी, कृषि और पशुधन पालन में गतिविधियों के पूर्ण परिदृश्य को सम्मिलित किया गया है। इस कार्यक्रम द्वारा समर्पित दक्ष किसान पोर्टल के माध्यम से लगभग 2.5 लाख किसानों को कौशल विकास प्रशिक्षण दिए जाने की आशा है। कार्यक्रम के अंतर्गत, लगभग 2,000 किसान खिदमत घर स्थापित किए जाएंगे और कृषक समुदाय के कल्याण के लिए मजबूत मूल्य शृंखलाओं की स्थापना की जाएगी। बयान के अनुसार इस कार्यक्रम से रोजगार सृजन होगा जिससे जम्मू-कश्मीर के लाखों सीमांत परिवार लाभान्वित होंगे। मोदी स्वदेश दर्शन और प्रसाद (तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक, विरासत संवर्धन अभियान) योजना के अंतर्गत।,400 करोड़ रुपए से अधिक राशि की पर्यटन क्षेत्र संबंधी कई परियोजनाओं की शुरुआत भी करेंगे। इसमें हजरतबल तीर्थ का एकीकृत विकास , श्रीनगर परियोजना भी शामिल है। प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्र को समर्पित की जाने वाली अन्य परियोजनाओं में मेघालय के पूर्वोत्तर सर्किट में विकसित की गईं पर्यटन सुविधाएं, बिहार और राजस्थान में आध्यात्मिक सर्किट, बिहार में ग्रामीण एवं तीर्थंकर सर्किट, जोगुलम्बा गडवाल जिला, तेलंगाना में जोगुलम्बा देवी मंदिर का विकास और मध्य प्रदेश में अमरकंटक मंदिर का विकास सम्मिलित है।पीएमओ ने कहा कि तीर्थयात्रियों और पर्यटकों के लिए विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे और सुविधाओं के निर्माण एवं उनके समग्र आध्यात्मिक अनुभव की गुणवत्ता में सुधार के प्रयास स्वरूप हजरतबल तीर्थ का एकीकृत विकास परियोजना क्रियान्वित की गई है।

परियोजना के प्रमुख तत्वों में तीर्थस्थल की चारदीवारी के निर्माण सहित पूरे क्षेत्र का विकास शामिल है। इनमें हजरतबल तीर्थ परिसर की रोशनीअ तीर्थस्थल के चारों ओर घाटों और पथों का सुधारअ सूफी व्याख्या केंद्र का निर्माणअ पर्यटक सुविधा केंद्र का निर्माणअ संकेतक की स्थापनाअ बहुस्तरीय मंजिला कार पार्किंगअ सार्वजनिक सुविधा ब्लॉक और तीर्थस्थल के प्रवेश द्वार का निर्माण शामिल हैं। प्रधानमंत्री लगभग 43 परियोजनाओं की शुरुआत भी करेंगे जिनसे देश में तीर्थयात्रा और पर्यटक स्थलों की एक विस्तृत शृंखला विकसित होगी।इनमें आंध्र प्रदेश के काकीनाडा जिले में अन्नवरम मंदिर, तमिलनाडु के तंजावुर और मयिलादुथुराई जिले और पुडुचेरी के कराईकल जिले में नवग्रह मंदिर, कर्नाटक के मैसूर जिले में श्री चामुंडेश्वरी देवी मंदिर, राजस्थान के बीकानेर जिले में करणी माता मंदिर, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिले में मां चिंतपूर्णी मंदिर, गोवा में बेसिलिका ऑफ बॉम जीसस चर्च जैसे महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल शामिल हैं।

परियोजनाओं में अरुणाचल प्रदेश में मेचुका एडवेंचर पार्क, गुंजी, पिथौरागढ़, उत्तराखंड में ग्रामीण पर्यटन क्लस्टर अनुभवअ अनंतगिरि वन, अनंतगिरि, इकोटूरिज्म जोनअ तेलंगाना में इकोटूरिज्म जोनअ कपूरथला में इकोटूरिज्म का अनुभव, लेह में जूली लेह जैव विविधता पार्क जैसे विभिन्न अन्य स्थलों का विकास भी शामिल है।कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री चुनौती आधारित गंतव्य विकास (सीबीडीडी) योजना के तहत चयनित 42 पर्यटन स्थलों की घोषणा करेंगे।पीएमओ ने कहा कि केंद्रीय बजट 2023-24 के दौरान घोषित की गई अभिनव योजना का उद्देश्य पर्यटन स्थलों के विकास को उत्प्रेरित करके पूर्ण रूप से पर्यटक अनुभव प्रदान करना है।

पत्रकार अनुचित श्रम आचरण अधिनियम के तहत कर्मचारी नहीं, उन्हें विशेष दर्जा प्राप्तः हाई कोर्ट

भाषा। मुंबई

बम्बई उच्च न्यायालय ने कहा है कि श्रमजीवी पत्रकार महाराष्ट्र मजदूर संगठनों की मान्यता और अनुचित श्रम प्रथाओं की रोकथाम (एमआरटीयू व पीयूएलपी) अधिनियम के तहत कर्मचारियों की परिभाषा में नहीं आते हैं, क्योंकि उन्हें एक विशेष दर्जा प्राप्त है। न्यायमूर्ति नितिन जामदार और न्यायमूर्ति संदीप मार्ने की खंडपीठ ने 29 फरवरी के अपने आदेश में कहा कि नतीजतन, एमआरटीयू व पीयूएलपी अधिनियम के तहत एक श्रमजीवी पत्रकार द्वारा दायर की गई शिकायत एक औद्योगिक अदालत के समक्ष सुनवाई योग्य नहीं होगी। खंडपीठ ने इस बात पर जोर दिया कि पत्रकारों को श्रमजीवी पत्रकार अधिनियम के प्रावधानों के तहत एक विशेष दर्जा प्राप्त है। इसलिए वह एमआरटीयू और पीयूएलपी अधिनियम के बजाय औद्योगिक विवाद अधिनियम के माध्यम से अपने विवादों का निपटारा करा सकते हैं। यह निर्णय उच्च न्यायालय के एकल पीठ द्वारा खंडपीठ के पास भेजा गया था। एकल पीठ ने पाया था कि एमआरटीयू और पीयूएलपी अधिनियम के तहत शिकायत दर्ज करने के लिए श्रमजीवी पत्रकारों को कर्मचारी या कामगार माने जाने के संबंध में विरोधाभासी निर्णय थे। यह फैसला दो श्रमजीवी पत्रकारों द्वारा अपने संबंधित अखबार प्रतिष्ठानों के खिलाफ दायर दो याचिकाओं पर पारित किया गया था। याचिकाकर्ताओं में से एक को उसके अखबार मालिक ने बर्खास्त कर दिया था जबकि दूसरे का तबादला कर दिया गया उच्च न्यायालय ने श्रमजीवी पत्रकार अधिनियन, एमआरटीयू और पीयूएलपी अधिनियम को ध्यान में रखते हुए दोनों श्रमजीवी पत्रकार और अखबार प्रतिष्ठानों की दलीलों पर विचार किया। उच्च न्यायालय ने विचार करने के बाद अंततः श्रमजीवी पत्रकार अधिनियम के तहत श्रमजीवी पत्रकारों को दिए गए विशेषाधिकारों को बरकरार रखा और उनके विवादों को औद्योगिक विवाद अधिनियम में उल्लेखित प्रावधानों के अनुसार निपटारा करने की आवश्यकता पर जोर दिया। पीठ ने कहा कि श्रमजीवी पत्रकार अधिनियम, 1955 ने पहले ही औद्योगिक विवाद अधिनियम के तहत विवाद समाधान के लिए एक तंत्र स्थापित कर दिया है। उच्च न्यायालय इस बात पर गौर कर रहा था कि श्रमजीवी पत्रकार अधिनियम के विशेष प्रावधानों के तहत आने वाले श्रमजीवी पत्रकारों को एमआरटीयू और पीयूएलपी अधिनियम के तहत कर्मचारी माना जा सकता है या नहीं। यह संबंधित अधिनियम एक कर्मचारी को एक कामगार के रूप में परिभाषित करता है।

सीबीआई जांच की मांग वाली जनहित याचिका को चुनौती दी पवार ने

मुंबई। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के संस्थापक शरद पवार ने पुणे के लवासा में एक निजी हिल स्टेशन का निर्माण करने की कथित अवैध अनुमति देने के लिए उनके, उनकी बेटी सुप्रिया सुले और महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री अजित पवार के खिलाफ सीबीआई जांच की मांग वाली जनहित याचिका को बंबई उच्च न्यायालय में चुनौती दी है। राकांपा (शरदचंद्र पवार) अध्यक्ष ने अधिवक्ता जोएल कार्लोस के माध्यम से दायर आवेदन में एक वकील की जनहित याचिका में प्रतिवादी बनाए जाने की मांग की है ताकि वह याचिका के खिलाफ अपनी दलील पेश कर सकें। अधिवक्ता नानासाहेब जाधव ने पिछले साल पीआईएल दायर कर अनुरोध किया था कि केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) को कथित अनियमितताओं के मामले में तीनों के खिलाफ और राज्य सरकार के कुछ अधिकारियों के खिलाफ मामला दर्ज करने का निर्देश दिया जाए।

यौन उत्पीड़न और अवैध धर्मांतरण के दोषी को आजीवन कारावास और जुर्माने की सजा

बुलंदशहर (उप्र)। बुलंदशहर जिले की एक अदालत ने यौन उत्पीड़न और अवैध धर्मांतरण के मामले में एक व्यक्ति को बुधवार को दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास और जुर्माने की सजा सुनाई।अपर पुलिस अधीक्षक (अराध) राकेश कुमार मिश्रा ने अभियोजन पक्ष के हवाले से बताया कि हापुड़ जिले के निवासी अनीस अहमद ने साल 2022 में अपना नाम बदलकर थाना गुलावठी क्षेत्र के अंतर्गत रहने वाली एक दलित महिला को शादी का झांसा देकर उससे शारीरिक संबंध बनाए थे और उसका धर्म परिवर्तन कराया था। उन्होंने बताया कि इस मामले में उसके खिलाफ भारतीय दंड संहिता, अवैध धर्मांतरण प्रतिषेध अधिनियम और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम की सुसंगत धाराओं में मुकदमा दर्ज कराया गया था। मिश्रा ने बताया कि इस मामले में बुधवार को विशेष न्यायाधीश विजय पाल की अदालत ने अहमद को दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास और चार लाख छह हजार रुपए के जुर्माने की सजा सुनाई है।

संप्रग सरकार के समय मुद्रास्फीति दहाई में थी, हम 5% के नीचे लाएः शाह

भाषा। मुंबई

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने बुधवार को कहा कि उनकी सरकार ने मुद्रास्फीति को पांच प्रतिशत से नीचे रखा हुआ है जबकि कांग्रेस की अगुवाई वाली पिछली सरकार के समय यह दहाई अंक में पहुंच गई थी। शाह ने यहां इंडिया ग्लोबल फोरम के वार्षिक निवेश शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि 2014 से पहले भारतीय अर्थव्यवस्था की हालत नाजुक थी, मुद्रास्फीति ऊंचे स्तर पर थी और राजकोषीय घाटा भी नियंत्रण से बाहर था। उन्होंने कहा कि संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) सरकार के समय औसत मुद्रास्फीति 8.2 प्रतिशत थी और उसके शासनकाल के अंतिम तीन साल में तो यह दहाई अंक तक पहुंच गई थी। उन्होंने कहा, कांग्रेस की अगुवाई वाली संप्रग सरकार के समय मुद्रास्फीति दहाई में थी लेकिन हमारी सरकार ने इसे पांच प्रतिशत से नीचे रोक दिया है। संप्रग सरकार के समय 12 लाख करोड़ रुपए के विभिन्न घोटालों से देश का विश्वास हिल गया था और साठगांठ वाला (क्रॉनी) पूंजीवाद अपने चरम पर था। उन्होंने कहा कि पिछले 10 वर्षों में हुई प्रगति की तुलना संप्रग सरकार के शासनकाल से की जानी चाहिए। उन्होंने कहा, जबतक आप यह नहीं जानते कि गड्ढा कितना गहरा है, आप प्रगति को नहीं समझ सकते हैं। उन्होंने कहा, संप्रग सरकार के 10 साल देश की वृद्धि गाथा से लगभग नदारद थे। आप उन वर्षों को खोज ही नहीं सकते हैं। वृद्धि के नाम पर उन 10 वर्षों में कुछ भी नहीं हुआ था। ऐसे हालात में मोदी जी ने देश की बागडोर संभाली थी। शाह ने कहा, भारत अब एक आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर देश है, जिसने खुद को निष्क्रिय सरकार से गतिशील सरकार में, प्रतिगामी से प्रगतिशील विकास में और नाजुक अर्थव्यवस्था से शीर्ष अर्थव्यवस्था में बदल दिया है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि आज भारत एक नीति-संचालित देश के रूप में उभरा है। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस साल के अंत तक भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार चार लाख करोड़ डॉलर तक पहुंच जाएगा। उन्होंने आगामी लोकसभा चुनाव के संदर्भ में कहा, हम अपनी सरकार के पिछले 10 वर्षों के प्रदर्शन और अगले 25 वर्षों के रोडमैप के साथ चुनाव में उतर रहे हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को दूरदर्शी प्रधानमंत्री बताते हुए कहा कि वर्ष 2047 में आजादी के सौ साल पूरा होने तक भारत पूरी तरह से विकसित, आत्मनिर्भर और दुनिया की शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं में से एक होगा। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि वर्ष 2025 तक भारत का अपना अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है।

अनैतिक मुकदमेबाजी पर पूर्व पति को एक लाख रुपए चुकाए तलाकशुदा महिला : उच्च न्यायालय

भाषा। इंदौर

मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय ने एक तलाकशुदा महिला द्वारा अपने पूर्व पति और बुजुर्ग सास-ससुर के खिलाफ अनैतिक मुकदमेबाजी जारी रखकर अदालत का वक्त बर्बाद किए जाने पर नाराजगी जताई है और चेतावनी के तौर पर एक लाख रुपए का हर्जाना भी लगाया। अदालत ने पाया कि इंदौर निवासी महिला ने आपसी सहमति वाले तलाक का वचन भंग करते हुए अपने पूर्व पति और उसके बुजुर्ग माता-पिता के खिलाफ पुराना मामला वापस नहीं लिया और कानूनी प्रक्रिया का दुरुपयोग किया। अदालत ने दहेज के लिए उत्पीड़न, मारपीट और महिला की रजामंदी के बिना गर्भपात सरीखे आरोपों में दर्ज मामले को रद्द करते हुए तलाकशुदा महिला को आदेश दिया है कि वह अपने पूर्व पति को एक लाख रुपए चुकाए। उच्च न्यायालय की इंदौर पीठ के न्यायमूर्ति सुबोध अभ्यंकर ने कहा, एक लाख रुपए चुकाए जाने का यह आदेश केवल अनैतिक मुकदमेबाजों को चेतावनी देने के लिए जारी किया गया है ताकि वे अदालतों की आंखों में धूल न झोंक सकें। अदालतें गंभीर मुकदमे सुनती हैं और उनका कीमती समय किसी भी तरह बर्बाद करने की इजाजत नहीं दी जा सकती। एकल पीठ ने महिला के पूर्व पति और उसके बुजुर्ग माता-पिता की दायर याचिका एक मार्च को मंजूर करते हुए करते हुए अपने आदेश में यह टिप्पणी की। अदालत ने रिकॉर्ड के हवाले से कहा कि याचिकाकर्ता पुरुष और प्रतिवादी महिला का दो फरवरी 2023 को आपसी सहमति से तलाक हो चुका है और इसके एवज में महिला को उसके पूर्व पति द्वारा 50 लाख रुपए भी दिए जा चुके हैं।

कांग्रेस के घोषणा पत्र का मसौदा मल्लिकार्जुन खरगे को सौंपा गया

भाषा। नई दिल्ली

कांग्रेस की घोषणा पत्र समिति ने घोषणा पत्र का मसौदा बुधवार को पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को सौंप दिया। समिति के प्रमुख पी चिदंबरम एवं इसके कुछ अन्य सदस्यों ने खरगे को घोषणा पत्र का मसौदा सौंपा। खरगे ने एक्स पर पोस्ट किया, "हरित क्रांति और श्वेत क्रांति से लेकर सार्वजनिक उपक्रमों के निर्माण तक, दूरसंचार एवं आईटी क्रांति से उदारीकरण तक, समावेशी शासन से अधिकार आधारित प्रतिमान तक कांग्रेस हमेशा भारत के कल्याण और विकास के लिए प्रतिबद्ध रही है। उन्होंने कहा, "2024 के लोकसभा चुनावों के लिए "न्यायै पर आधारित हमारे घोषणापत्र का मसौदा तैयार है और आज कांग्रेस घोषणापत्र समिति द्वारा मुझे प्रस्तुत किया गया। कांग्रेस कार्यसमिति के समक्ष इसे अनुमोदन के लिए रखा जाएगा। कांग्रेस का घोषणा पत्र न्याय के पांच स्तंभों पर केंद्रित रहने वाला है और जिसमें पार्टी युवाओं को प्रशिक्षण के साथ मानदेय देने, पेपर लीक के खिलाफ सख्त कानून बनाने, जाति जनगणना कराने तथा अग्निपथ योजना को खत्म करने जैसे कई बड़े वादे कर सकती है। पूर्व पूर्व वित्त मंत्री पी चिदंबरम की अध्यक्षता वाली घोषणा पत्र समिति ने चुनाव मुद्दों के संदर्भ में लंबी मंत्रणा की है। पार्टी की घोषणापत्र समिति में प्रियंका गांधी वाड्रा, शशि थरूर, जयराम रमेश और आनंद शर्मा जैसे वरिष्ठ नेता शामिल हैं। समिति के प्रमुख सदस्यों ने मंगलवार दोपहर पार्टी मुख्यालय में बैठक कर दस्तावेज़ के मसौदे को अंतिम रूप दिया था। सूत्रों ने कहा कि पार्टी का घोषणापत्र युवाओं, महिलाओं, गरीबों और किसानों को सशक्त बनाने पर केंद्रित होगा। उन्होंने कहा कि पार्टी पेपर लीक के खतरे से निपटने के लिए एक योजना पर विचार कर रही है और सरकारी भर्तियों में पारदर्शिता लाने के लिए अपना दृष्टिकोण पेश करने की संभावना है।

उदयनिधि स्टालिन, शेखर बाबू और ए राजा के खिलाफ अधिकार पृच्छा याचिकाएं खारिज

भाषा। चेन्नई

● हिंदू राष्ट्रवादी संगठन के सदस्यों की ओर दायर की गई याचिका

मद्रास उच्च न्यायालय ने तमिलनाडु के मंत्रियों-उदयनिधि स्टालिन और पी के शेखर बाबू एवं सांसद ए राजा के खिलाफ एक हिंदू राष्ट्रवादी संगठन के सदस्यों की ओर दायर की गई याचिकाओं पर अधिकार पृच्छा रिट जारी करने से बुधवार को इनकार कर दिया। एक हिंदू राष्ट्रवादी संगठन के सदस्यों ने इन नेताओं द्वारा सनातन धर्म के विरुद्ध कथित रूप से टिप्पणी करने के बाद पद पर बने रहने के उनके अधिकार पर सवाल उठाए थे। अधिकार पृच्छा याचिकाओं में सवाल किया गया था कि किस अधिकार से वे सरकारी पदों पर बने हुए हैं।न्यायमूर्ति अनीता सुमंत ने हिंदू मुन्नानी के दो पदाधिकारियों तथा एक अन्य व्यक्ति की ओर से दायर याचिकाओं का निस्तारण कर दिया। इन याचिकाओं में प्रश्न उठाया गया कि जब द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) के इन नेताओं ने सनातन धर्म विरोधी बैठक में हिस्सा लिया और धार्मिक रीति-रिवाजों की व्यवस्था के खिलाफ कथित रूप से भाषण दिया तो वे किस हैसियत से सरकारी पदों पर बने हुए हैं। हिंदू मुन्नानी का पदाधिकारी होने का दावा करने वाले टी मनोहर और दो अन्य ने ए याचिकाएं दायर की हैं। इन याचिकाओं को खारिज करते हुए न्यायमूर्ति सुमंत ने हालांकि टिप्पणी की कि उंचे पदों पर आसीन व्यक्तियों को अधिक जिम्मेदारी से बर्ताव करना चाहिए तथा कोई बयान देने से पहले ऐतिहासिक घटनाओं का सत्यापन करना चाहिए।

अपहरण मामले में पूर्व सांसद धनंजय सिंह को सात साल कैद की सजा

भाषा। जौनपुर (उप्र)

जौनपुर की विशेष सांसद-विधायक अदालत ने अपहरण और रंगदारी मांगने के मामले में बुधवार को बाहुबली पूर्व सांसद धनंजय सिंह और उनके एक सहयोगी को सात-सात साल की कैद और जुर्माने की सजा सुनाई। इस सजा के बाद धनंजय अब आगामी लोकसभा चुनाव नहीं लड़ सकेंगे। जिला शासकीय अधिवक्ता सतीश पांडेय ने यहां बताया कि 10 मई 2020 को नमामि गंगे के परियोजना प्रबंधक के अपहरण, रंगदारी मांगने, षड्यंत्र रचने तथा अपशब्द कहने और धमकी देने के मामले में विशेष सांसद-विधायक अदालत के न्यायाधीश शरद कुमार त्रिपाठी ने पूर्व सांसद धनंजय सिंह और उनके सहयोगी संतोष विक्रम को मंगलवार को दोषी ठहराया था। अदालत ने बुधवार को उन्हें सात-सात साल की कैद और 75-75 हजार रुपए जुर्माने की सजा सुनाई है।यह सजा सुनाए जाने के बाद धनंजय लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम के तहत अब चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य हो गए हैं।पांडेय ने बताया कि मुजफ्फरनगर निवासी अभिनव सिंघल ने 10 मई 2020 को लाइनबाजार थाने में अपहरण, रंगदारी तथा अन्य धाराओं में धनंजय सिंह और उनके साथी संतोष विक्रम पर भारतीय दंड संहिता की धारा 364, 386, 504, 506 तथा 120 बी के तहत मुकदमा दर्ज कराया था। मुकदमे में आरोप लगाया गया था कि संतोष विक्रम दो साथियों के साथ सिंघल का अपहरण कर उसे पूर्व सांसद धनंजय सिंह के घर ले गया था जहां धनंजय सिंह पिस्तौल लेकर आए और अपशब्द तथा धमकी देते हुए रंगदारी मांगी।उन्होंने बताया कि इस मामले में धनंजय और संतोष विक्रम को गिरफ्तार किया गया था। बाद में उच्च न्यायालय से उन्हें जमानत मिल गई थी। पांडेय ने बताया कि सीसीटीवी फुटेज, सीडीआर, व्हॉट्सऐप संदेश और गवाहों के बयान के आधार पर आरोपियों के खिलाफ अपराध साबित हुआ है।सजा का ऐलान होते ही न्यायालय परिसर में जमा हुए धनंजय सिंह के तमाम समर्थक मायूस हो गए। धनंजय सिंह ने 2024 का लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए पूरी तैयारी की थी। वह पहले राजग के घटक दल जनता दल-यूनाइटेड के टिकट पर जौनपुर लोकसभा सीट से चुनाव लड़ना चाहते थे लेकिन मगर भाजपा ने महाराष्ट्र के पूर्व गृहराज्य मंत्री कृपाशंकर सिंह को अपना प्रत्याशी घोषित कर दिया ।

पेज 1 का शेष

संदेशखाली की...

वो हर बुरे वक्त में हमारा साथ देते हैं। मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि अप्रैल महीने से उनके वेतन में 750 रुपये की बढ़ोतरी की गई है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को 8,250 रुपये मिलते हैं। उनके वेतन में 750 रुपये (अप्रैल से) की बढ़ोतरी की गई है। आईसीडीएस सहायकों को लगभग 6000 रुपये मिलते हैं। 1 अप्रैल से उनके वेतन में 500 रुपये की बढ़ोतरी की गई है। दूसरी ओर, घोष ने प्रधानमंत्री पर पलटवार करते हुए उन्हें याद दिलाया कि कैसे 'गुजरात में भाजपा के लोगों ने बिलकिस बानो के बलात्कारियों को माला पहनाई थी।' उन्होंने आगे कहा, प्रधानमंत्री ने हाथरस और उन्नाव के पीड़ितों के लिए कोई शब्द नहीं कहा। उनके पास उन महिला पहलवानों के पक्ष में भी कहने को कुछ नहीं था जो भाजपा के एक सांसद द्वारा यौन उत्पीड़न के खिलाफ शिकायत कर रही थीं।

भाजपा की....

सहमति तक पहुंचने के लिए कई दिनों से गहन बातचीत कर रहे हैं। वंचित बहुजन अघाड़ी (वीबीए) के प्रकाश अंबेडकर भी सीट-बंटवारे की बातचीत का हिस्सा होंगे। प्रमुख राज्य उत्तर प्रदेश और दिल्ली के लिए इंडिया गठबंधन रणनीति के हिस्से के रूप में सीट बंटवारे की घोषणा पहले ही की जा चुकी है और महाराष्ट्र और झारखंड के लिए इस सप्ताह के अंत तक घोषणा की जानी है। लोकसभा चुनाव से पहले देश के युवाओं को लुभाने की कोशिश करते हुए, कांग्रेस पहली बार लोकसभा चुनाव के लिए अपने चुनावी वादे के तहत उन्हें रोजगार का अधिकार प्रदान करेगी। पार्टी की घोषणापत्र समिति, जिसके अध्यक्ष पूर्व वित्त मंत्री पी.चिदंबरम हैं और इसमें प्रियंका गांधी वाड्रा, शशि थरूर और आनंद शर्मा जैसे वरिष्ठ नेता शामिल हैं, ने मंगलवार को एक मैराथन बैठक के बाद घोषणापत्र पर मुहर लगा दी है और अगले सप्ताह चुनाव की तारीखों की घोषणा के बाद इसका इसका ऐलान किया जाएगा।

मेट्रो के....

आरआरटीएस कॉरिडोर के कवरेज को उसके प्रारंभिक परिचालन प्राथमिकता खंड से आगे तक बढ़ाता है। आरआरटीएस की डिज़ाइन गति 180 किमी प्रति घंटे और संचालन गति 160 किमी प्रति घंटे है। वहीं 6 किलोमीटर लंबे कॉरिडोर पर आगरा मेट्रो सेवाएं गुरुवार से यात्रियों के लिए ताज महल ईस्ट स्टेशन, कैप्टन शुभम गुप्ता स्टेशन, फतेहाबाद रोड स्टेशन, ताज महल स्टेशन और मनकामेश्वर मंदिर स्टेशन पर स्टॉप के साथ उपलब्ध होंगी। ताजमहल स्टेशन पर हरी झंडी दिखाने के समारोह में बोलते हुए, आदित्यनाथ ने कहा कि आगरा मेट्रो स्थानीय लोगों और शहर में आने वाले पर्यटकों को विश्व स्तरीय सार्वजनिक परिवहन प्रदान करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा, 'आगरा उत्तर प्रदेश के सबसे पुराने शहरों में से एक है। यह ब्रज भूमि का हिस्सा है। यह शहर छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता और वीरता की कहानियों से जुड़ा है।' आदित्यनाथ ने आगरा मेट्रो के पहले चरण को समय पर पूरा करने के लिए उत्तर प्रदेश मेट्रो रेल कॉरपोरेशन (यूपीएमआरसी) की सराहना की और कहा कि यह निर्धारित समय से नौ महीने पहले चालू हो गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मोदी ने 7 दिसंबर, 2020 को मेट्रो की आधारशिला रखी थी और यह 23 महीने में बनकर तैयार हुई, साथ ही उन्होंने परियोजना की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए यूपीएमआरसी की सराहना की।

अभयारण्य में अवैध निर्माण पर सुप्रीम कोर्ट सख्त

पीटीआई। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने उत्तराखंड के कॉर्बेट बाघ अभयारण्य (सीटीआर) में अवैध निर्माण और पेड़ों की कटाई को मंजूरी देने के लिए राज्य के पूर्व वन मंत्री एवं कांग्रेस नेता हरक सिंह रावत तथा पूर्व मंडल वन अधिकारी किशन चंद को बुधवार को कड़ी फटकार लगाई। न्यायमूर्ति बी. आर. गवई की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि यह वह मामला है जहां नौकरशाहों और नेताओं ने जन विश्वास के सिद्धांत को कचरे के डिब्बे में डाल दिया है। रावत 2021 में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत सरकार में वन मंत्री थे और अब कांग्रेस में हैं। उन्हें 2022 के राज्य विधानसभा चुनावों से पहले भाजपा ने निष्कासित कर दिया था, जिसके बाद वह कांग्रेस में शामिल हो गए।

पीठ ने कहा, चूंकि मामले की जांच सीबीआई द्वारा लंबित है, इसलिए हम इस मामले पर और कोई टिप्पणी नहीं करेंगे। हमें लगता है कि यह कार्य केवल दो व्यक्तियों द्वारा नहीं किया जा सकता है...और भी कई लोग शामिल रहे होंगे। पीठ में न्यायमूर्ति पी के मिश्रा और न्यायमूर्ति संदीप मेहता भी थे। उच्चतम न्यायालय ने मामले की जांच कर रहे केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) को तीन माह के भीतर स्थिति रिपोर्ट सौंपने के आदेश दिए। शीर्ष अदालत ने कहा कि राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) द्वारा चंद को गंभीर अनियमितताओं में शामिल पाए जाने के बाद भी, रावत ने न केवल निलंबन के लिए सचिव (वन) की सिफारिश को खारिज कर दिया, बल्कि लैंसडाउन डिवीजन में उनकी प्रस्तावित पोस्टिंग को भी उचित ठहराया।

पीठ ने कहा, उन्होंने (रावत और चंद) कानून की घोर अवहेलना की और पर्यटन को बढ़ावा देने की आड़ में व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए इमारतें बनाने के वास्ते बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई में संलिप्त रहे। अदालत का फैसला पर्यावरण कार्यकर्ता और वकील गौरव बंसल द्वारा दायर एक याचिका पर आया, जिसमें पाखरो टाइगर सफारी में अवैध निर्माण के साथ-साथ हजारों पेड़ों की अवैध कटाई के कारण लैंसडाउन वन प्रभाग में बाघों के पर्यावास को नष्ट करने और बाघों की संख्या में गिरावट का आरोप लगाया गया था। शीर्ष अदालत ने कहा कि वह कानूनी प्रावधानों को पूरी तरह ताक पर रख देने की रावत और चंद की धृष्टता से चकित है। उच्चतम न्यायालय की केंद्रीय अधिकार प्राप्त समिति ने पूर्व में सीटीआर के कालागढ़ वन प्रभाग के पाखरो और मोरघट्टी वन क्षेत्रों में 2021 में बाघ सफारी के संबंध में निर्माण सहित विभिन्न अवैध गतिविधियों के लिए रावत और चंद को जिम्मेदार ठहराया था।

इसने उत्तराखंड सतर्कता विभाग को अनियमितताओं में शामिल वन अधिकारियों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही जारी रखने के लिए हरी झंडी भी दे दी थी। रॉयल बंगाल टाइगर के लिए प्रसिद्ध सीटीआर मानसून के दौरान पर्यटकों के लिए बंद रहता है और अक्टूबर-नवंबर में खुलता है। पीठ ने कहा कि जो सफारी पहले से मौजूद हैं और पाखरो में निर्माणाधीन हैं, उनमें दखल नहीं दिया जाएगा। पीठ ने कहा, हालांकि, जहां तक पाखरो में सफारी का सवाल है, हम उत्तराखंड राज्य को टाइगर सफारी के आसपास एक बचाव केंद्र को स्थानांतरित करने या स्थापित करने का निर्देश देते हैं।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर होगा समारोह

श्रावस्ती। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर शुक्रवार को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान परिसर में समारोह का आयोजन किया जाएगा। इसमें वैज्ञानिक व्याख्यान, विज्ञान पुतुल महोत्सव और महिलाओं द्वारा इनोवेशन के क्षेत्र में किए गए कार्यों पर फिल्म शो भी शामिल रहेगा। वेक्टर जन्य बीमारियों से बचाव हेतु जागरूकता कार्यक्रम का विशेष आयोजन भी होगा। भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की संस्था राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद तथा इंडियन साइंस कम्युनिकेशन सोसायटी के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित इस कार्यक्रम में कई विशेषज्ञ, महिला ग्राम प्रधान, स्वयं सहायता समूह की महिलाएं, विद्यार्थी, शिक्षक और पंचायती राज विभाग के अधिकारी भाग लेंगे। स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिए वैज्ञानिक आधार पर सुझाव भी दिए जाएंगे। प्रख्यात विज्ञान संचारक डॉ. वीपी सिंह, पंचायती राज विभाग के जिला समन्वयक बृजेश पांडेय विशेष रूप से व्याख्यान देंगे।

लालू व उनका परिवार बिहार का सबसे बड़ा गुनहगार : मोदी

भाषा। बेतिया (बिहार)

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को कहा कि राष्ट्रीय जनता दल (राजद) प्रमुख लालू प्रसाद और उनका परिवार बिहार का सबसे बड़ा गुनहगार है और उन पर एक दशक से अधिक के कार्यकाल के दौरान राज्य में जंगल राज कायम करने का आरोप लगाया।पश्चिम चंपारण जिले के बेतिया में एक रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने आरोप लगाया कि राजद-कांग्रेस गठबंधन के कुशासन के परिणामस्वरूप बिहार के युवा बड़ी संख्या में पलायन करने के लिए मजबूर हुए और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के सत्ता संभालने के बाद ही राज्य में चीजें बेहतर दिखने लगीं। उन्होंने कहा, जंगल राज के लिए जिम्मेदार परिवार...वे बिहार के सबसे बड़े गुनहगार हैं। उनके कुशासन ने एक पूरी पीढ़ी के भविष्य को खतरे में डाल दिया। युवाओं को देश के अन्य हिस्सों में पलायन करने के लिए मजबूर होना पड़ा, जबकि केवल एक परिवार समृद्ध हुआ। मोदी ने प्रसाद के उनका कोई परिवार नहीं होने के कटाक्ष पर पलटवार करते हुए कहा, जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, बाबासाहेब आंबेडकर और कर्पूरी ठाकुर जैसे लोग जीवित होते तो ये लोग अपने स्वयं के परिवारों को बढ़ावा न देने के लिए उन पर भी हमला करते। उन्होंने कहा, मुझसे उनकी शिकायत यह है कि मेरा कोई परिवार नहीं है। मेरे लिए पूरा देश मेरा परिवार है और आज पूरा देश कह रहा है कि वह खुद को मोदी के परिवार के रूप में देखता है। राजद प्रमुख की टिप्पणी पर भाजपा नेताओं और समर्थकों ने प्रधानमंत्री के प्रति एकजुटता प्रकट करने के लिए अपने सोशल मीडिया खाते के नाम के साथ मोदी का परिवार भी जोड़ दिया।

द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) नेता ए राजा की विवादास्पद टिप्पणियों के स्पष्ट संदर्भ में प्रधानमंत्री ने कहा, पश्चिम चंपारण ऋषि वाल्मिकी की भूमि है, जहां देवी सीता ने शरण ली थी और लव-कुश का जन्म हुआ था। इंडिया गठबंधन के नेताओं द्वारा भगवान राम का जो अपमान किया जा रहा है, उसे यहां की जनता माफ नहीं करेगी। उन्होंने कहा, लोग इस बात पर भी ध्यान दे रहे हैं कि हमारी संस्कृति और परंपरा पर इस तरह के हमलों को कौन प्रोत्साहित कर रहा है। प्रधानमंत्री ने आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा के नेतृत्व वाले राजग के लिए 400 से अधिक सीट को लेकर कहा कि भारत को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने और लोगों को गरीबी के चंगुल से बाहर निकालने के लिए इसकी आवश्यकता है।

12,800 करोड़ रुपए की परियोजनाओं का अनावरण किया

बेतिया (बिहार)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को बिहार के पश्चिम चंपारण जिला मुख्यालय बेतिया में 12,800 करोड़ रुपए की विभिन्न विकास परियोजनाओं का अनावरण किया। प्रधानमंत्री ने बेतिया में एक समारोह के दौरान विकसित भारत-विकसित बिहार के तहत परियोजनाओं का अनावरण किया। कार्यक्रम में बिहार के राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर, उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और विजय कुमार सिन्हा, राज्य के शिक्षा मंत्री विजय कुमार चौधरी, कई केंद्रीय मंत्री मौजूद रहे। हालांकि, समारोह में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार मौजूद नही रहे। प्रधानमंत्री ने मुजफ्फरपुर-मोतिहारी तक 109 किलोमीटर लंबी इंडियन ऑयल की एलपीजी पाइपलाइन का उद्घाटन किया। यह न सिर्फ बिहार बल्कि पड़ोसी देश नेपाल के लोगों को भी रसोई ईंधन प्रदान करेगी। मोतिहारी में इंडियन ऑयल के एलपीजी बॉटलिंग संयंत्र और भंडारण डिपो का भी लोकार्पण किया। यह नेपाल को पेट्रोलियम उत्पादों के निर्यात के लिए एक रणनीतिक आपूर्ति बिंदु के रूप में भी कार्य करेगा। यह उत्तर बिहार के आठ जिले पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण, गोपालगंज, सीवान, मुजफ्फरपुर, शिवहर, सीतामढ़ी और मधुबनी को सेवा प्रदान करेगा। मोदी ने पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण, गोपालगंज, सीवान और देवरिया मे सिटी गैस वितरण परियोजना और एचपीसीएल बायोफ्यूल लिमिटेड के सुगौली और लौरिया मे अनाज आधारित इथेनॉल परियोजनाओं की आधारशिला भी रखी। उन्होंने राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-28ए के पिपराकोठी-मोतिहारी-रक्सौल खंड और राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-104 के शिवहर-सीतामढ़ी खंड के दो लेन का भी उद्घाटन किया। उन्होने दीघा-सोनेपुर रेल-सह-सड़क पुल के समानांतर गंगा पर छह-लेन केबल पुल और राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-19 बाईपास के बाकरपुर हाट-मानिकपुर खंड के चार-लेन की आधारशिला रखी।

राजनीति में कुछ भी संभव, सभी दरवाजे खुले हैं : विक्रमादित्य

भाषा। शिमला

हिमाचल प्रदेश के मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने बुधवार को कहा कि राजनीति में सभी दरवाजे खुले हैं। उन्होंने दल-बदल रोधी कानून के तहत विधानसभा सदस्यता से अयोग्य ठहराए गए राज्य के छह बागी कांग्रेस विधायकों से मुलाकात करने के कुछ दिन बाद यह बात कही। कांग्रेस के छह बागियों ने पिछले हफ्ते राज्यसभा चुनाव में भाजपा उम्मीदवार के पक्ष में मतदान किया था, जिसके चलते कांग्रेस के उम्मीदवार की हार हुई थी। इससे राज्य में राजनीतिक संकट पैदा हो गया था और पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व को पर्यवेक्षकों की एक टीम भेजने के लिए मजबूर होना पड़ा। विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप सिंह पठानिया ने राज्य के बजट पर मतदान के लिए पार्टी व्हिप का कथित तौर पर उल्लंघन करने के लिए इन छह विधायकों को अयोग्य घोषित कर दिया था। बागियों के पार्टी में लौटने की संभावना के बारे में पूछे जाने पर लोक निर्माण विभाग मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने कहा, राजनीति में सब कुछ संभव है और सभी दरवाजे खुले हैं। सिंह ने हाल ही में पंचकुला में छह बागी विधायकों के साथ बातचीत के बाद नई दिल्ली में प्रियंका गांधी वाद्रा समेत वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं से मुलाकात की थी। उन्होंने यहां कहा, मुझे आधिकारिक तौर पर बागियों से मिलने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी और मैंने अपना कर्तव्य निभाया है। सिंह ने कहा, मौजूदा स्थिति से कांग्रेस आलाकमान को अवगत कराना मेरा नैतिक कर्तव्य था, जिसे मैंने पूरा कर दिया है और अब गेंद उनके पाले में है...। उन्होंने कहा, मैंने कांग्रेस के बागियों के विचारों से आलाकमान को और आलाकमान के विचारों से बागियों को अवगत करा दिया है। हिमाचल प्रदेश में सत्तारूढ़ कांग्रेस को झटका देते हुए भाजपा ने पिछले हफ्ते राज्य की एकमात्र राज्यसभा सीट जीत ली थी। भाजपा उम्मीदवार हर्ष महाजन केवल 25 विधायकों के समर्थन के साथ अल्पमत में थे। हालांकि कांग्रेस के 40 विधायकों में से छह और तीन निर्दलीय विधायकों ने महाजन के पक्ष में मतदान कर उन्हें विजेता बना दिया था।

कांग्रेस ने हिमाचल में क्रॉस-वोटिंग करने वाले सुधीर शर्मा को सचिव पद से हटाया

नई दिल्ली। कांग्रेस ने हिमाचल प्रदेश में राज्यसभा के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के पक्ष में क्रॉस-वोटिंग करने वाले अपने छह विधायकों में शामिल सुधीर शर्मा को बुधवार को पार्टी के सचिव पद से हटा दिया। पार्टी के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने सुधीर शर्मा को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव पद से तत्काल प्रभाव से हटा दिया है।शर्मा ने कांग्रेस के इस कदम पर कटाक्ष करते हुए एक्स पर पोस्ट किया, भार मुक्त तो ऐसे किया है जैसे सारा बोझ मेरे ही कंधों पर था। चिंता मिटी, चाहत गई, मनवा बेपरवाह, जिसको कुछ नहीं चाहिए, वो ही शहंशाह। हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला से ताल्लुक रखने वाले शर्मा प्रदेश के वरिष्ठ कांग्रेस नेताओ में शुमार किए जाते हैं और वह प्रदेश सरकार में मंत्री रहे हैं। हाल ही में उन्हें और पांच अन्य विधायकों को अयोग्य ठहराया गया।

त्रिपुरा में भाजपा नीत सरकार में शामिल होगी टिपरा मोथा: राजीव भट्टाचार्य

अगरतला। त्रिपुरा का मुख्य विपक्षी दल टिपरा मोथा लोकसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाली सरकार में शामिल होगा। यह दावा भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने बुधवार को किया। भाजपा की त्रिपुरा इकाई के अध्यक्ष राजीव भट्टाचार्य ने कहा कि 60 सदस्ईय विधानसभा में टिपरा मोथा के 13 विधायक हैं और उन्हें दो मंत्रिपद मिलने की संभावना है। यह घटनाक्रम त्रिपुरा के मूल लोगों के सभी मुद्दों को सौहार्दपूर्ण ढंग से हल करने के लिए नई दिल्ली में टिपरा मोथा, त्रिपुरा सरकार और केंद्र के बीच एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए जाने के कुछ दिनों बाद हुआ है। भट्टाचार्य ने कहा, संसदीय चुनाव से पहले टिपरा मोथा भाजपा-आईपीएफटी गठबंधन सरकार में शामिल होने के लिए तैयार है।

छिंदवाड़ा से सात कांग्रेस पार्षद भाजपा में शामिल

भाषा। भोपाल

कांग्रेस के दिग्गज नेता कमल नाथ को झटका देते हुए, मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा नगर निगम से उनकी पार्टी के सात पार्षद लोकसभा चुनाव से पहले सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल हो गए हैं।पार्षदों ने मंगलवार देर शाम राजधानी भोपाल में राज्य के शहरी विकास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के आवास पर अपने समर्थकों के साथ भाजपा का दामन थाम लिया।

इस दौरान उन्होंने फिर एक बार मोदी सरकार का नारा लगाया।भाजपा की एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि पार्षद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकास कार्यों से प्रभावित हैं।छिंदवाड़ा राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री कमल नाथ का गढ़ माना जाता है, जो वर्तमान में इस विधानसभा सीट से कांग्रेस विधायक हैं।यह घटनाक्रम ऐसे समय में हुआ है जब कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के नेतृत्व में भारत जोड़ो न्याय यात्रा राज्य से गुजर रही है।भाजपा की विज्ञप्ति में कहा गया है कि सत्तारूढ़ दल में शामिल होने वाले सात पार्षद रोशनी सल्लम, लीना तिरकम, संतोषी वाडिवार, दीपा मोहरे, जगदीश गोदरे, चंद्रभान ठाकरे और धनराज भावरकर हैं।कमल नाथ और उनके बेटे नकुल नाथ, जो छिंदवाड़ा से लोकसभा सदस्य हैं, के भविष्य के कदमों को लेकर पिछले कुछ समय से अटकलें लगाई जा रही हैं। हालांकि, दोनों ने कहा है कि उनका भाजपा में जाने का कोई इरादा नहीं है। 2019 के आम चुनाव में मध्य प्रदेश की कुल 29 लोकसभा सीटों में से भाजपा को 28 सीटें मिली थीं, जबकि कांग्रेस ने केवल छिंदवाड़ा सीट जीती।कमलनाथ ने छिंदवाड़ा लोकसभा सीट का नौ बार प्रतिनिधित्व किया है।

झारखंड की जामताड़ा जिला कांग्रेस कमेटी के प्रमुख भाजपा में शामिल

जमशेदपुर। झारखंड की जामताड़ा जिला कांग्रेस कमेटी के प्रमुख हरिमोहन मिश्रा ने इकाई के विभिन्न प्रकोष्ठों के वरिष्ठ नेताओं के साथ बुधवार को पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल हो गए। भाजपा की राज्य इकाई के प्रमुख बाबूलाल मरांडी ने मिश्रा और अन्य नेताओं का पार्टी में स्वागत किया। पूर्व मुख्यमंत्री मरांडी ने पत्रकारों से कहा, राज्य में झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार की स्थिति को कोई भी समझ सकता है, जहां एक सहयोगी दल कांग्रेस की जिला समिति के सदस्य नाता तोड़कर हमारी पार्टी में शामिल हो गए। मिश्रा के अलावा, भाजपा में शामिल हुए अन्य नेताओं में जिला एनएसयूआई अध्यक्ष विक्रांत सिंह और जिला महिला मोर्चा अध्यक्ष बेबी पासवान शामिल हैं।

गुजरात विधानसभा से एक और कांग्रेस विधायक ने दिया इस्तीफा, भाजपा में शामिल होंगे

अहमदाबाद। कांग्रेस विधायक अरविंद लदानी ने बुधवार को गुजरात विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया और अब वह सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल होंगे। गत तीन महीने में वह कांग्रेस के चौथे विधायक हैं जिन्होंने इस्तीफा दिया है। जूनागढ़ जिले के मनवदर से पहली बार विधायक चुने गए लदानी ने विधानसभा अध्यक्ष शंकर चौधरी को उनके गांधीनगर स्थित आधिकारिक आवास पर सौंपा। विधानसभा अध्यक्ष कार्यालय के मुताबिक चौधरी ने लदानी का इस्तीफा स्वीकार कर लिया है। लदानी ने कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुए जवाहर चावडा को 2022 के विधानसभा चुनाव में 3,400 मतों से हराया था। लदानी ने संवाददाताओं से बातचीत में कहा कि वह भाजपा में शामिल होंगे।

मुर्मू ने तेलंगाना में राष्ट्रपति निलयम में आगंतुक सुविधा केंद्र का उद्घाटन किया

भाषा। नई दिल्ली

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बुधवार को तेलंगाना के राष्ट्रपति निलयम में आगंतुक सुविधा केंद्र (वीएफसी) का डिजिटल तरीके से उद्घाटन किया। ए केंद्र लोगों को देश की समृद्ध विरासत से जोड़ने की दिशा में उठाया गया एक कदम है।राष्ट्रपति ने इस अवसर पर कहा कि राष्ट्रपति निलयम में अलग-अलग तरह के ऐतिहासिक आकर्षण हैं, जिनमें लकड़ी के झंडे की 120 फुट की ऐतिहासिक प्रतिकृति, जय हिंद बावड़ी, भूलभुलैया उद्यान, बच्चों का पार्क और रॉक गार्डन में शिव और नंदी बैल की मूर्तियां शामिल हैं।मुर्मू ने कहा कि ए उद्यान, आगंतुकों को देश की सांस्कृतिक समृद्धि से जुड़ने का अवसर प्रदान करेगा। राष्ट्रपति भवन द्वारा जारी एक बयान में मुर्मू के हवाले से कहा गया कि वीएफसी लोगों को देश की समृद्ध विरासत से जोड़ने की दिशा में उठाया गया एक और महत्वपूर्ण कदम है। राष्ट्रपति के दक्षिणी प्रवास को छोड़कर राष्ट्रपति निलयम पूरे वर्ष आम जनता के लिए खुला रहता है। आगंतुक ऑनलाइन बुक कर इस केंद्र का आनंद उठा सकते हैं।

भारत को अग्रणी देश बनाएं युवा : बिरला

भाषा। नई दिल्ली

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने बुधवार को युवाओं का आह्वान किया कि वे प्रौद्योगिकी, नवाचार, कृत्रिम मेधा (एआई), स्टार्ट-अप और इससे जुड़े क्षेत्रों में भारत को एक अग्रणी देश के रूप में स्थापित करने के लिए आगे आएं। उन्होंने राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव, 2024 के समापन समारोह में यह भी कहा कि युवाओं की ऊर्जा, उत्साह और दृढ़ संकल्प ही वैश्विक समृद्धि, नवाचार और सामाजिक सद्भाव का आधार है। इस समारोह में खेल एवं युवा मामलों के मंत्री अनुराग ठाकुर भी मौजूद थे। बिरला ने कार्यक्रम के वक्ताओं का उल्लेख करते हुए कहा, स्पष्ट सोच वाले कुशल वक्ताओं को देखकर उन्हें बहुत खुशी हुई और वह आश्वस्त हैं कि विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने की जिम्मेदारी बहुत सक्षम हाथों में है। लोकसभा अध्यक्ष ने इस बात का उल्लेख किया कि संसद के केंद्रीय कक्ष ने भारत की राष्ट्र-निर्माण की यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और यह कक्ष विदेशी अधीनता से आजाद होकर देश में लोकतंत्र और गणतंत्र की स्थापना का प्रतीक है। बिरला ने इस बात पर जोर दिया कि युवाओं की ऊर्जा, उत्साह और दृढ़ संकल्प से भारत भविष्य में विश्व मंच पर समृद्धि, नवाचार और सामाजिक सद्भाव का प्रतीक बन सकता है। उन्होंने कहा, तकनीकी प्रगति और नवाचार के वर्तमान युग में, युवाओं के लिए यह आवश्यक है कि वे आगे बढ़कर देश को प्रौद्योगिकी, नवाचार, कृत्रिम मेधा, स्टार्टअप और इससे जुड़े क्षेत्रों में भारत को एक अग्रणी देश के रूप में सुस्थापित करें।

नौसेना ने लक्षद्वीप में आईएनएस जटायु की शुरुआत की

भाषा। मिनिकॉय (लक्षद्वीप)

भारतीय नौसेना ने बुधवार को मिनिकॉय द्वीप पर अपने नए अड्डा आईएनएस जटायु की शुरुआत की, जो रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण लक्षद्वीप द्वीपों के भीतर उसकी परिचालन क्षमताओं को बढ़ाएगा। इस अड्डे से नौसेना टुकड़ी की परिचालन पहुंच बढ़ेगी और यह पश्चिमी अरब सागर में समुद्री डकैती और मादक द्रव्य रोधी अभियानों में भारतीय नौसेना के प्रयासों का सहयोग करेगा। नौसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार ने यहां आयोजित एक समारोह में नए अड्डे की शुरुआत की। आईएनएस जटायु को कमांडेंट व्रत बघेल की कमान में शामिल किया गया है। आईएनएस जटायु के सेवा की शुरुआत के बाद मिनिकॉय में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुमार ने कहा कि अड्डे का नाम रामायण के उस पात्र के नाम पर रखा गया है जिसने सीता के अपहरण को रोकने की कोशिश की थी। रामायण में जटायु ने सबसे पहले कदम उठाते हुए सीता जी के अपहरण को रोकने की कोशिश की। अपने जीवन को खतरे में डालकर, स्वयं से पहले सेवा का उदाहरण दिया। इसलिए इस इकाई का नाम जटायु रखना सुरक्षा निगरानी और निस्वार्थ सेवा प्रदान करने की भावना की एक उपयुक्त मान्यता है। नौसेना प्रमुख ने कहा कि जटायु द्वारा भगवान राम को दी गई जानकारी से हालात का पता चला और आगे विजई हुए। उन्होंने कहा, इसी तरह, हम उम्मीद करते हैं कि यह इकाई पूरे क्षेत्र में समुद्री क्षेत्र में चौकसी बनाए रखने के लिए भारतीय नौसेना को स्थितिजन्य जागरूकता प्रदान करेगी। हमारे राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए अंडमान में पूर्व में आईएनएस बाज और अब पश्चिम में आईएनएस जटायु आंख और कान के रूप में काम करेंगे। मौजूदा भू-राजनीतिक घटनाक्रम के बीच बढ़ी हुई निगरानी की तत्काल आवश्यकता को पहचानना महत्वपूर्ण है(

सीसीपीए ने सट्टेबाजी, जुए के विज्ञापनों के प्रति आगाह किया

नई दिल्ली। सट्टेबाजी और जुए से संबंधित विज्ञापनों के बढ़ते मामलों से चिंतित केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) ने बुधवार को एक परामर्श जारी कर मशहूर हस्तियों और प्रभावशाली लोगों (सेलिब्रिटीज) को इस तरह कर प्रचार गतिविधियों से दूर रहने की चेतावनी दी।केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण ने सभी अंशधारकों को चेतावनी दी कि सट्टेबाजी और जुए सहित अवैध गतिविधियों के समर्थन के लिए कड़ी कार्वाई की जाएगी। सट्टेबाजी और जुए जैसी अवैध गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले विज्ञापनों की बढ़ते मामलों को देखते हुए सीसीपीए ने एक व्यापक सलाह जारी की है।

मणिपुर में एनआरसी लागू करने की सिफारिश करेंगे: बीरेन सिंह

इंफाल। मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने बुधवार को कहा कि वह राज्य मे राष्ट्रीय नागरिक पंजी (एनआरसी) लागू करने के लिए केंद्र को सिफारिश भेजेंगे क्योंकि उनकी सरकार इसे अकेले नही कर सकती। सिंह के इस बयान के कुछ दिन पहले विधानसभा ने एक प्रस्ताव पारित किया था, जिसमें केंद्र सरकार से विशेष रूप से राज्य और राष्ट्र के हित मे राज्य मे एनआरसी लागू करने का आग्रह किया गया। सिंह ने एक कार्यक्रम से इतर संवाददाताओ से कहा, राज्य इसे (एनआरसी) लागू नही कर सकता। हमने सदन में एक प्रस्ताव लाया है। हम मणिपुर मे एनआरसी लागू करने के लिए जरूरी कदम उठाने को लेकर केंद्र सरकार को सिफारिश भेज रहे हैं। उन्होंने कहा कि आधार वर्ष 1961 होगा। राज्य मंत्रिमंडल ने 2022 में इनर लाइन परमिट (आईएलपी) के कार्यान्वयन के संबंध मे राज्य में अवैध आप्रवासन की पहचान करने के लिए 1961 को आधार के रूप में अपनाया।

इनोवेशन और डिज़ाइन को मिलेगा बढ़ावा

नई दिल्ली। नथिंग ने फोन को सभी खूबियों, इंजीनियरिंग दक्षता और डिजाइन कौशल के साथ उतारा है, यह यूजर्स की सभी जरूरतों को पूरा करते हुए रोजमर्रा के इस्तेमाल योग्य एक बेहतरीन स्मार्टफोन अनुभव प्रदान करेगा। यह ऐसे यूजर्स के लिए एक बेहद खास स्मार्टफोन है, जो हमेशा नए इनोवेशन और डिज़ाइन की तलाश में रहते हैं। इन ग्राहकों को हमेशा यह पता होता है कि उन्हें अपने स्मार्टफोन से क्या चाहिए और क्या नहीं चाहिए। नथिंग में एक पावरफुल यूनीक प्रोसेसर, एक 50 एम पी का एक असाधारण डुअल रियर कैमरा,ज्यादा ब्राइटनेस वाला फ्लेक्सिबल एमोलेड डिस्प्ले और एक आसान ओएस दिया गया है। नथिंग के सीईओ और कोफ उंडर कार्ल पे ने कहा यह हमारी प्रगति को गति देने का साल है, इस दिशा में हमारा पहला बड़ा कदम है।

कांग्रेस का गाली गैंग बन गया है विपक्षी गठबंधन: नक्वी

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री मुख्तार अब्बास नक्वी ने बुधवार को आरोप लगाया कि विपक्षी गठबंधन कांग्रेस का गाली गैंग बन गया है।पूर्व केंद्रीय मंत्री के कार्यालय की ओर से जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार, नक्वी ने उत्तर प्रदेश के रामपुर में एक कार्यक्रम मे यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व मे सरकार सुशासन और स्थायित्व के कीर्तिमान के साथ अपने दो सफल कार्यकाल पूरे कर तीसरे की तरफ बढ़ चुकी है। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने विपक्ष पर उस वक्त निशाना साधा है जब कुछ दिनों पहले ही राष्ट्रीय जनता दल के प्रमुख लालू प्रसाद ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को लेकर परिवार वाली टिप्पणी की थी। नक्वी ने आरोप लगाया कि इंडिया गठबंधन कांग्रेस का गाली गैंग है तथा यह हार की हताशा मे कुतर्क कर रहा है। उनका कहना था कि कांग्रेस हमेशा परिवार, प्रतिनियुक्ति या फिर रिमोट वाली सत्ता की सामंती सोच में लिप्त रही है।

अवधी संस्कृति का जश्न मनाने की तैयारी

नई दिल्ली। रेड एफ एम ने अपने नए आईपी द अवध कनेक्शन के लॉन्च की घोषणा की है, जो अवधी संस्कृति, संगीत एवं व्यंजनों का प्रतीक है। कार्यक्रम का आयोजन 9 मार्च 2024 को दोपहर 12 बजे से लखनऊ के संगीत नाटक अकादमी में किया जाएगा। भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध ब्राण्ड के रूप में, द अवध कनेक्शन शहर की सदियों पुरानी संस्कृति एवं कला का प्रतीक है। अवधी प्रतिभा के विभिन्न पहलू कार्यक्रम के आकर्षण का केन्द्र होंगे, जैसे सौरव एवं गौरव के साथ कथक, सृष्टि माथुर द्वारा ठुमरी, अदनान द्वारा फ्लुट्रोनिक्स, षडज द्वारा स्टोरीटेलिंग एवं म्युज़िक परफोर्मेन्स और शिंजिनी कुलकर्णी कथक उस्ताद पंडित बिरजू महाराज की पोती द्वारा कथक।

क्विक न्यूज

ईडी ने क्रिप्टो करेंसी ऐप मामले में चीन मूल के निदेशकों के खिलाफ आरोपपत्र दायर किया

नई दिल्ली। बिटकॉइन जैसी क्रिप्टोकरेंसी के नाम पर निवेशकों को कथित तौर पर ठगने से जुड़ी एक जांच में 299 इकाइयों के खिलाफ धनशोधन निवारण कानून के तहत आरोप-पत्र दायर किया गया है, जिनमें चीन मूल के 10 व्यक्ति भी शामिल हैं। प्रवर्तन निदेशालय ने बुधवार को यह जानकारी दी। संघीय एजेंसी ने एक बयान में कहा कि नगालैंड के दीमापुर की एक विशेष अदालत ने मंगलवार को धनशोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत दायर अभियोजन शिकायत पर संज्ञान लिया।इसमें कहा गया है कि चीन-नियंत्रित 76 इकाइयों सहित कुल 299 इकाइयों को आरोपी बनाया गया है। बयान के अनुसार, चीन-नियंत्रित 76 इकाइयों 10 निदेशक चीनी मूल के है और दो अन्य विदेशी नागरिकों द्वारा नियंत्रित है।प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) का धनशोधन का मामला कोहिमा पुलिस की साइबर अपराध इकाई की एक प्राथमिकी से उत्पन्न हुआ है। कोहिमा पुलिस ने बिटकॉइन और अन्य क्रिप्टोकरेंसी में निवेश से भारी रिटर्न का वादा करके निवेशकों को कथित तौर पर धोखा देने के लिए भारतीय दंड संहिता और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम के तहत विभिन्न लोगों पर मामला दर्ज किया था। पुलिस ने कहा था कि आरोपियों ने निवेशकों कौ धोखा देनै के लिएै एचपीजेड टोक्नै नाम से एक ऐप (मोबाइल-फोन ऐप्लिकेशन) का इस्तेमाल किया था।ईडी ने कहा कि अपराध की आय के शोधन के उद्देश्य सैै डमौ निदेशकों वाली विभिन्नै शेल इकाइयौ द्वारा बैंक खाते और मर्चेंट आईडी खोले गए थे। उसने दावा किया कि ए धनराशि अवैध ऑनलाइन गेमिंग, सट्टेबाजी और बिटकॉइन के लिए निवेश के वास्तै धोखाधड़ी सै प्राप्त की गई थी।ईडी ने कहा कि 57,000 रुपए के निवेश के लिए, तीन महीने तक प्रतिदिन 4,000 रुपए का रिटर्न देने का वादा किया गया था, लेकिन पैसे का भुगतान केवल एक बार किया गया और उसके बाद, आरोपियो द्वारा निवेशकों से फिर से धनराशि की मांग की गई।

आंध्र प्रदेश के कानून के तहत पशुधन उत्पाद है घी, बिक्री व खरीद पर लगाया जा सकता है शुल्क : न्यायालय

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने आंध्र प्रदेश के कानून के तहत घी को पशुधन उत्पाद करार देते हुए राज्य सरकार की 1994 की उस अधिसूचना को बरकरार रखा है जिसमें बाजार समितियों को इसकी बिक्री व खरीद पर शुल्क लगाने का अधिकार दिया गया है। घी की बिक्री व खरीद पर विपणन शुल्क लगाने से संबंधित प्रश्न के अलावा, शीर्ष अदालत को यह तय करना था कि क्या यह आंध्र प्रदेश (कृषि उपज और पशुधन) बाजार अधिनियम 1966 के प्रावधानों के तहत पशुधन उत्पाद है। न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया और न्यायमूर्ति एसवीएन भट्टी की पीठ ने कहा, यह तर्क निराधार है कि घी पशुधन उत्पाद नही है। इसके विपरीत यह तर्क कि घी वास्तव में पशुधन उत्पाद है, तार्किक रूप से सही है। अधिनियम की धारा 2(वी) के तहत पशुधन को परिभाषित किया गया है, जहां गाय और भैंस निर्विवाद रूप से पशुधन हैं। घी एक दुग्ध उत्पाद है, जो पशुधन से बना होता है। याचिकाकर्ता ने तर्क दिया था कि घी पशुधन उत्पाद नही है, क्योंकि यह सीधे तौर पर गाय और भैंस से नही मिलता। शीर्ष अदालत ने आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ संगम मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड की याचिका खारिज कर दी, जिसके साथ ही राज्य में बाजार समितियो के माध्यम से इसकी बिक्री व खरीद पर शुल्क लगाने का रास्ता साफ हो गया।

श्रद्धा आर्य मोस्ट स्टाइलिश वुमन बनीं

मुंबई। अपनी दिलचस्प कहानियों और दमदार किरदारों के साथ दर्शकों के दिलों में जगह बनाने के बाद ज़ी टीवी एक बार फिर अपने सालाना जलसे ज़ी रिश्ते अवॉर्ड्स के साथ दर्शकों के दिलों में उतर जाने को तैयार है। साल दर साल इस भव्य समारोह में एक्टर्स, डायरेक्टर्स, प्रोड्यूसर्स, क्रिएटिव टीम्स और टेक्नीशियन्स के बेहतरीन काम को सम्मानित करके उन गहरे रिश्तों का जश्न मनाया जाता रहा हैए जो दर्शकों और उनके पसंदीदा टीवी किरदारों के बीच बन गया है। चूंकि होली का त्यौहार भी करीब है,ए तो ऐसे में परिवारों के साथ होली मनाने के लिए ज़ी रिश्ते अवॉर्ड्स से बेहतर मंच और क्या हो सकता है। वहीं इस मौके पर ग्लैमरस एक्ट्रेस श्रद्धा आर्य ने भी मोस्ट स्टाइलिश वुमन का प्रतिष्ठित टाइटल जीतकर अपनी चमक बिखेरी। पॉपुलर शो कुंडली भाग्य में प्रीता के किरदार में उन्हें बहुत पसंद किया गया और इस अवॉर्ड ने स्टाइल आइकॉन के रूप में उनकी स्थिति और मजबूत कर दी है। फैशन को लेकर उनकी गज़ब की समझ और सुंदरता के चलते उन्हें फैंस से बहुत तारीफें मिली हैं। श्रद्धा आर्य ने कहा कि इस अवॉर्ड के लिए ज़ी टीवी और कुंडली भाग्य का शुक्रिया। मैं उन स्टाइलिस्ट्स की आभारी हूं जिन्होंने परफेक्ट कपड़े और ज्वेलरी चुनने में मेरा साथ दिया।

महिला दिवस पर ताकत दिखेगी

नोएडा। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर डी बीयर्स फॉरएवर मार्क अपने फॉरएवरमार्क सेटिंग कलेक्शन उतारा। डी बीयर्स अपने नेचुरल एवं एथिकल डायमंड्स के लिए पहचाने जाते हैं। डी बीयर्स की ज्वेलरी का यह अनूठा सेट महिलाओं की ताकत और उपलब्धियों का सम्मान करता हैए जो सौंदर्य और सशक्तिकरण का खास प्रतीक हैं। फॉरएवरमार्क सेटिंग ज्वेलरी अपनी सदाबहार अपील और प्रतिष्ठित शिल्प कौशल के लिए प्रसिद्ध है। डी बीयर्स फॉरएवरमार्क डायमंड के लुभावने आकर्षण को बढ़ाने के लिए हीरे के हर टुकड़े को बड़ी मेहनत एवं कौशल से तैयार किया गया है। फॉरएवरमार्क डायमंड की चमक और उसकी खास पहचान को बढ़ाने के लिएए नाजुक सेटिंग से लेकर जटिल डिटेल्स तकए ज्वेलरी के हर पहलू को बहुत बारीकी से तैयार किया गया है। डिटेल्स और गुणवत्ता पर सावधानीपूर्वक ध्यान देने साथए फॉरएवरमार्क सेटिंग ज्वेलरी विशेषज्ञता और चिरस्थायी गरिमा की मिसाल पेश करती है। जो इसे सदाबहार स्टाईल और शुद्धता का एक मूल्यवान प्रतीक बनाता है। यह शाहनजफरोड सहारागंज मॉल के सामने लखनऊ में उपलब्ध है। इन डायमंड्स का चयन खास सावधानी से किया जाता है और पर्यावरण का खयाल रखते हुएए बहुत ही जिम्मेदारी से इनकी सोर्सिंग की जाती है और आपके पास लाया जाता है। इस अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं की असाधारण उपलब्धियों और स्थायी विरासत का जश्न मनाने के लिए फॉरएवरमार्क से जुड़ें।

सीटों पर एमवीए के घटक दलों और वीबीए की बैठक

मुंबई। देश मे आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर महाराष्ट्र मे विपक्षी गठबंधन महा विकास आघाडी (एमवीए) के घटक दल कांग्रेस, शिवसेना (यूबीटी) और राकांपा (शरदचंद्र पवार) ने सीट बंटवारे के फॉर्मूले को अंतिम रूप देने के उद्देश्य से बुधवार को मुंबई में चर्चा की। तीनों गठबंधन सहयोगियो ने प्रकाश आंबेडकर के नेतृत्व वाले वंचित बहुजन आघाडी (वीबीए) को बातचीत के लिए आमंत्रित किया। शहर के बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स (बीकेसी) इलाके के एक निजी होटल मे आयोजित यह बैठक लगभग तीन घंटे तक चली। बैठक मे क्या बातचीत हुई इसका हालांकि तत्काल पता नही चल सका है। महाराष्ट्र मे लोकसभा की 48 सीटे है जो उत्तर प्रदेश की 80 सीटो के बाद सबसे ज्यादा लोकसभा सदस्यो को चुनने वाला राज्य है। एमवीए के घटक दल - कांग्रेस, उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना (यूबीटी) और शरद पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) समेत तीनों दलो के बीच सीट के बंटवारे पर सहमति बनाने के लिए कई दिनो से गहन बातचीत चल रही है। एमवीए की बैठक से पहले यहां मुंबई में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री बालासाहेब थोराट ने बातचीत के लिए आंबेडकर से अलग से मुलाकात की। आंबेडकर ने पहले ही सांगली और वर्धा लोकसभा क्षेत्रों के लिए अपने उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है, जहां आम तौर पर कांग्रेस चुनाव लड़ती है। वीबीए हालांकि 2019 के चुनाव में एक भी लोकसभा या विधानसभा सीट जीतने में असफल रही थी। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव मे अविभाजित शिवसेना ने 18 सीट जीती थी और वह इस बार इतनी ही सीटों पर चुनाव लड़ने पर अड़ी हुई है। शिवसेना (यूबीटी) के नेता संजय राउत ने पहले ही संकेत दिया है कि उनकी पार्टी कुछ सीट के आदान-प्रदान की इच्छा रखती है, लेकिन पार्टी द्वारा उन निर्वाचन क्षेत्रों की संख्या कम करने की संभावना नही है जहां से वह लड़ना चाहती है। राउत और राकांपा (शरदचंद्र पवार) के नेता एवं विधायक जितेंद्र आव्हाड ने सार्वजनिक रूप से आंबेडकर से अपील की है कि वे ऐसा कोई कदम न उठाएं जिससे भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को फायदा हो।

पाम ऑयल से शरीर को मिलता है पौष्टिक तत्व

नई दिल्ली। पाम ऑयल, बीटा, कैरोटीन और विटामिन ई.टोकोट्रिएनोल्स सहित पौष्टिक फॅट्स की संतुलित संरचना के साथ, कम मात्रा में सेवन करने पर स्वस्थ आहार में योगदान देता है। साबुन, शैंपू, मेकअप और लोशन जैसे लगभग 70 प्रतिशत पर्सनल केयर प्रोडक्ट में पाम ऑयल एक मूल घटक है। मार्जरीन, आइसक्रीम, चॉकलेट, डिटर्जेंट,इंस्टेंट नूडल्स, बायोडीजल, सौंदर्य प्रसाधन और खाना पकाने के ऑयल इन सभी में पाम ऑयल सर्वव्यापी है। मलेशियन पाम ऑयल काउंसिल-एमपीओसी ने यह दावा किया। एमपीओसी मलेशिया को प्रमाणित सस्टेनेबल पाम ऑयल में वैश्विक अग्रणी के रूप में स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है। समर्पित प्रयासों के माध्यम सेए एमपीओसी दुनिया भर में उपभोक्ताओं के लिए एक स्वस्थए स्थायी और नैतिक विकल्प के रूप में मलेशियन पाम ऑयल को बढ़ावा देने को प्राथमिकता देता हैए जो हितधारकों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने, बाजार पहुंच में सुधार और एमएसपीओ प्रमाणीकरण की स्वीकृति करके हासिल करता है। काउंसिल के पास चीन ,शंघाई, भारत मुंबई, मध्य पूर्व जेद्दा और इस्तांबुल,यूरोप रुसेल्स और रूस और अफ्रीका काहिरा और जोहान्सबर्गद्ध में क्षेत्रीय कार्यालयों का एक नेटवर्क है। कुआलालंपुर में अपने मुख्य कार्यालय और क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम स एमपीओसी नवीनतम मार्केट ट्रेंड्स और अवसरों की लगातार पहचान और लाभ उठाकर मलेशियन पाम ऑयल उद्योग के व्यापार विस्तार को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लोग लंबे समय से खाने में पाम ऑयल का इस्तेमाल करते आ रहे हैं, लेकिन हाल ही में, स्वास्थ्य के लिए अच्छा होने के कारण यह अधिक लोकप्रिय हो गया है। भारत जहां 1.3 अरब से अधिक लोग रहते हैं, पाम ऑयल का इस्तेमाल न केवल खाना पकाने के लिए बल्कि कई खाद्य पदार्थों और प्रोडक्ट में भी किया जाता है।

अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में ट्रंप-बाइडन होंगे आमने सामने

भाषा । वाशिंगटन

अमेरिका में भारतीय मूल की पूर्व गवर्नर निक्की हेली ने रिपब्लिकन पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी के लिए अपना प्रचार अभियान बुधवार को रोक दिया। उन्होंने यह निर्णय सुपर ट्यूजडे को 15 राज्यों की पार्टी प्राइमरी में हार के बाद लिया है। हेली के इस फैसले के साथ ही पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप रिपब्लिकन पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी हासिल करने की दौड़ में एकमात्र प्रमुख उम्मीदवार रह जाएंगे। इस तरह नवंबर में होने वाले चुनाव में ट्रंप के सामने मौजूदा राष्ट्रपति जो बाइडन होंगे।

सुपर ट्यूजडे की प्राइमरी के बाद ट्रंप (77) ने अपने एकमात्र रिपब्लिकन प्रतिद्वंद्वी हेली (52) पर मजबूत बढ़त बना ली जिन्होंने वर्मोंट प्रांत में जीत हासिल करके उन्हें पूर्ण बहुमत से वंचित कर दिया था। साउथ कैरोलाइना की पूर्व गवर्नर हेली ने बुधवार को कहा, अब मेरा प्रचार अभियान रोकने का समय आ गया है। उन्होंने कहा, मैं चाहती हूं कि अमेरिकियों की आवाज सुनी जाए। मैंने वही किया है। मुझे कोई पछतावा नहीं है। मैं अब उम्मीदवार नहीं रहूंगी, लेकिन मैं उन चीजों के लिए अपनी आवाज का इस्तेमाल करना बंद नहीं करूंगी जिनमें मैं विश्वास करती हूं। संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका की पूर्व राजदूत हेली तब ट्रंप की पहली मजबूत प्रतिद्वंद्वी के रूप में उभरी जब फरवरी 2023 में उन्होंने राष्ट्रपति पद के चुनावी दौड़ में शामिल होने

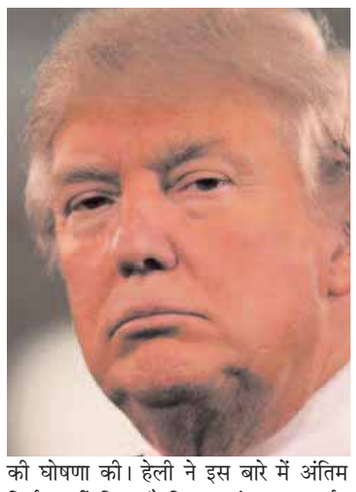

की घोषणा की। हेली ने इस बारे में अंतिम निर्णय नहीं लिया है कि वह ट्रंप का समर्थन करेंगी या नहीं।

हेली के करीबी लोगों की अलग-अलग राय है। कुछ लोगों का मानना है कि ट्रंप का समर्थन करना उनके लिए अच्छा होगा क्योंकि उन्हें एक टीम के रूप में देखा जाएगा। अन्य लोग उसका समर्थन करने का तीव्र विरोध करते हैं। अपने अभियान के दौरान, हेली ने रिपब्लिकन प्रेसिडेंशियल प्राइमरी जीतने वाली पहली महिला बनकर इतिहास रचा। वह डेमोक्रेटिक या रिपब्लिकन प्राइमरी में जीत हासिल करने वाली पहली भारतीय-अमेरिकी भी हैं। पिछले तीन अन्य भारतवंशी राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार-2016 में बॉबी जिंदल, 2020 में कमला हैरिस और 2024 में विवेक रामास्वामी-एक भी प्राइमरी जीतने में असफल रहे थे।

दूसरी ओर एक बार फिर से राष्ट्रपति पद पर काबिज होने की इच्छा रख रहे बाइडन(81) लगभग सभी डेमोक्रेट प्राइमरी राज्यों में जीत हासिल करने में कामयाब रहे। बाइडन को अमेरिकी सामोआ में पहली हार जेसन पामर के हाथों से मिली थी। पामर ने छोटे अमेरिकी क्षेत्र में जीत हासिल की, जहां 100 से भी कम लोग कॉकस में भाग लेते हैं। यह डेमोक्रेटिक नामांकन के लिए बाइडन की दावेदारी कमजोर नहीं होगी। सीएनएन की खबर के मुताबिक, जो बाइडन को प्राइमरी

हेली ने राष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी हासिल करने के अपने अभियान को निलंबित किया

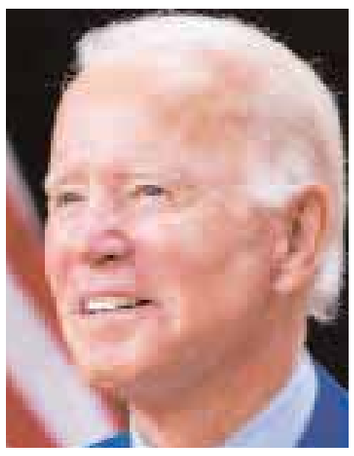

चुनाव में किसी मुश्किल चुनौती का सामना नहीं करना पड़ा और उन्होंने अभी तक सभी डेमोक्रेट प्राइमरी चुनावों में जीत हासिल की। सीएनएन ने उम्मीद जताई है कि बाइडन और ट्रंप के बीच नवंबर में एक बार फिर से आमना-सामना होने की उम्मीद है। सुपर ट्यूजडे राष्ट्रपति पद की प्राइमरी का एक महत्वपूर्ण चरण है जब प्रारंभिक मुकाबला समाप्त हो जाती हैं और कई राज्यों के मतदाता एक ही तारीख को होने वाली प्राइमरी में मतदान करते हैं। वर्मोंट को छोड़कर लगभग सभी नतीजे ट्रंप के पक्ष में आए हैं। वर्मोंट में भी जीत का अंतर लगभग एक प्रतिशत था।

फ्लोरिडा के पाम बीच पर ट्रंप ने लोगों को संबोधित करते हुए दावा किया कि हमारा देश बहुत विभाजित है, और जल्द ही इसे एकजुट करने का संकल्प लिया। उन्होंने अमेरिकी राजनीतिक व्यवस्था की तुलना तीसरी दुनिया के देशों से की। ट्रंप ने कहा, यहां कभी नहीं हुआ। ऐसा अन्य देशों में होता है, लेकिन वे तीसरी दुनिया के देश हैं। और कुछ मायनों में, हम तीसरी दुनिया के देश हैं।

ट्रंप ने फिर से शिकायतों की सूची दोहराई और इस बात पर जोर दिया कि देश बाइडन के नेतृत्व में अराजकता की ओर बढ़ रहा है और चुनावी शुचिता को लेकर संदेह पैदा कर रहा है। इससे पहले, बाइडन ने अपने प्रशासन के कार्यों के बारे में बताया, साथ ही चेतावनी दी कि ट्रंप के दूसरे कार्यकाल का मतलब अराजकता, विभाजन और अंधकार की वापसी होगा। बाइडन ने अपने प्रशासन के तहत नौकरियों, मुद्रास्फीति, दवाओं की कीमतों और बंदूक नियंत्रण पर हुई प्रगति को रेखांकित करते हुए कहा कि चार साल पहले, मैं डोनाल्ड ट्रंप द्वारा उस अमेरिका के अस्तित्व पर खतरा पैदा करने की वजह से चुनाव लड़ा जिस पर हम सभी विश्वास करते हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर ट्रंप की व्हाइट हाउस में वापसी होती है तो उनके प्रशासन द्वारा की गई प्रगति खतरे में पड़ जाएगी। सीएनएन ने साउथ कैरोलिना की पूर्व गवर्नर हेली के करीब के हवाले से कहा कि उन्होंने अबतक यह फैसला नहीं किया है कि राष्ट्रपति उम्मीदवारी की दौड़ से हटने पर अपने पूर्व बॉस ट्रंप का समर्थन करेंगी या नहीं लेकिन उनके अभियान को विषय पर बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है। हेली के करीबी लोगों की अलग-अलग राय है।

अमेरिका ने हूती विद्रोहियों की ओर से दागी मिसाइल, ड्रोन को मार गिराया

एपी । दुबई

अमेरिकी विध्वंसक ने यमन के हूती विद्रोहियों की ओर से लाल सागर में दागी गई मिसाइलों और बम ले जानी वाली ड्रोन नौकाओं को मार गिराया। अधिकारियों ने बुधवार सुबह यह जानकारी दी। हूती विद्रोहियों ने मंगलवार को ए हमले विध्वंसक यूएसएस कार्ने को निशाना बना कर किए थे। अमेरिकी सेना की मध्य कमान ने कहा कि हूती विद्रोहियों ने बम ले जाने वाले ड्रोन और एक पोत रोधी बैलिस्टिक मिसाइल से हमला किया। मध्य कमान के मुताबिक, हमले के जवाब में अमेरिका ने भी हवाई हमला किया और जहाज-रोधी तीन मिसाइलों और बम ले जाने वाली तीन ड्रोन नौकाओं को नष्ट कर दिया। हूती विद्रोहियों के प्रवक्ता ब्रिगेडियर जनरल याह्या सारी ने हमले की बात को स्वीकार किया और कहा कि दो अमेरिकी युद्ध पोतों को निशाना बनाया गया।

सारी ने कहा, युद्ध और गाजा पट्टी पर फलस्तीनी लोगों की घेराबंदी जारी रहने तक हम रुकेंगे नहीं। हमास और इजराइल के बीच जारी युद्ध के दौरान हूती विद्रोही हमास के प्रति एकजुटता दिखाते हुए पिछले वर्ष नवंबर से लाल सागर से गुजरने वाले वाणिज्यिक पोतों को निशाना बना रहे हैं। उनका कहना है कि जब तक युद्ध बंद नहीं हो जाता वे इस प्रकार के हमले जारी रखेंगे।

अमेरिका के नेतृत्व में डेढ़ महीने से अधिक वक्त तक हवाई हमलों के बावजूद हूती विद्रोहियों के हमले जारी हैं। इस बीच भारतीय नौसेना ने कुछ फुटेज जारी किए हैं, जिसमें आईएनएस कोलकाता के नौसैनिक एमएससी स्काई द्वितीय में आग पर काबू पाने के प्रयास करते दिखाई दे रहे हैं। हूती विद्राहियों ने सोमवार को अदन की खाड़ी में इस पोत को निशाना बनाया था। पोत के एक कंटेनर से धुआं निकलता हुआ दिखाई दे रहा है। स्विटजरलैंड की कंपनी मेडिटेरेनियन शिपिंग कंपनी ने कहा कि यह पोत सिंगापुर से जिबूती जा रहा था कि तभी हूती विद्रोहियों ने उस पर हमला कर दिया। कंपनी ने कहा, मिसाइल हमले से आग लग गई थी, जिस पर काबू पा लिया गया। इसमें चालक दल का कोई सदस्य हताहत नहीं हुआ है।

ताइवान की श्रम मंत्री ने भारतीय कामगारों के खिलाफ नस्ली टिप्पणी को लेकर माफी मांगी

भाषा । बीजिंगाताइप

ताइवान की श्रम मंत्री हसु मिंग चुन ने एक विशेष क्षेत्र के भारतीय कामगारों की भर्ती करने की अपनी सरकार की योजना को लेकर की गई अनुचित टिप्पणी के लिए माफी मांगी हैं।

भारतीय कामगारों को लेकर उनकी नस्ली टिप्पणी की कड़ी आलोचना हुई थी। ताइवान के विदेश मंत्रालय ने हाल में एक बयान जारी कर बताया था कि भारत और ताइवान के लोगों के बीच के संबंधों को बढ़ावा देने और ताइवान के उद्योगों में श्रम बल की कमी को दूर करने के लिए द्वीपीय देश ने 16 फरवरी को भारत के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इसके तहत भारतीय श्रमिकों की भर्ती की योजना है।

ताइवान सेंटल न्यूज एजेंसी (सीएनए) ने मंगलवार को खबर दी थी कि भर्ती योजना की रूपरेखा पेश करते हुए श्रम मंत्री ने ताइवान के एक टीवी चैनल के कार्यक्रम में कहा कि उनका मंत्रालय सबसे पहले पूर्वोत्तर भारत से कामगारों की भर्ती करेगा क्योंकि उनकी त्वचा का रंग और खान-पान की आदतें हमारे करीब हैं।

इसके साथ ही हसु ने कहा था कि वहां ज्यादातर लोग ईसाई हैं जो विनिर्माण, निर्माण और खेती में माहिर हैं। खबर के मुताबिक हसु ने कहा कि भर्ती की रणनीति विदेश मंत्रालय के आकलन

पर आधारित है।

उनकी टिप्पणियों की सत्तारूढ़ डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी के सांसद चेन कुआन-टिंग ने तीखी आलोचना की। उन्होंने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट किया, हसु की टिप्पणी की कड़ी आलोचना करता हूं, त्वचा का रंग और नस्ल प्रवासी कामगारों की भर्ती का आधार नहीं होना चाहिए।

टिंग ने एक वीडियो पोस्ट में कहा, संसद सदस्य होने के नाते मैं कहना चाहता हूं कि ताइवान सभी वयक्ति को महत्व देता है भले ही वे किसी भी नस्ल, संस्कृति या धर्म के हों। मेरा मजबूती से मानना है कि सभी पृष्ठभूमि के लोग सम्मान के हक्दार हैं और मैं इस सिद्धांत को ताइवान में कायम रखने को प्रतिबद्ध हूं। संसदीय सुनवाई के दौरान मंगलवार सुबह हसु ने अपनी अनुचित टिप्पणी के लिए माफी मांगी। सीएनए की खबर के मुताबिक उन्होंने कहा कि ताइवान की श्रम नीति चाहे वह स्थानीय कामगार के लिए हो या विदेशी कामगारों के लिए, समानता के आधार पर है और भेदभावपूर्ण नहीं है।

नवाज शरीफ की पीएमएल-एन पाकिस्तान संसद में सबसे बड़ी पार्टी बनीः खबर

भाषा । इस्लामाबाद

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान समर्थित सुन्नी इत्तेहाद काउंसिल (एसआईसी) को आरक्षित सीट आवंटित करने से इनकार किए जाने के बाद नेशनल असेंबली में नवाज शरीफ के नेतृत्व वाली पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) की सीट की संख्या बढ़कर 123 हो गई और यह सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन गई है। बुधवार को एक खबर में यह जानकारी दी।

पाकिस्तान चुनाव आयोग (ईसीपी) ने सोमवार को फैसला सुनाया कि इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) समर्थित एसआईसी संसद में महिलाओं और अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षित सीट के लिए योग्य नहीं है और उनके हिस्से की सीट अन्य पार्टियों को दी जानी चाहिए।

पीटीआई समर्थित लगभग सभी 93 सांसद महिला और अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षित सीटों पर हिस्सेदारी प्राप्त करने के लिए दक्षिण पंथी एसआईसी में शामिल हो गए थे।

नेशनल असेंबली की 336 सीट में से 266 पर ही मतदान कराया जाता है। अन्य 60 सीट महिलाओं के लिए और 10 अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षित हैं और ए जीतने वाले दलों को आनुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर आवंटित की जाती हैं।

डॉन अखबार की खबर के अनुसार पिछले माह हुए आम चुनाव में पीएमएल-एन ने शुरुआत में 75 सीट जीतीं थी और नौ निर्दलीय उम्मीदवार भी उनकी पार्टी में शामिल हो गए थे।

इसके साथ ही उसे महिलाओं के लिए आरक्षित 19 और अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षित चार सीट आवंटित की गई थीं, जिससे इसकी कुल संख्या 107 हो गई।

चुनाव आयोग द्वारा पीटीआई समर्थित एसआईसी को आरक्षित सीट आंवटित करने से इनकार किए जाने के बाद पीएमएल-एन को महिलाओं के लिए शेष 20 आरक्षित सीट में से 15 और अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षित शेष तीन सीट में से एक आवंटित की गई है।

खबर में कहा गया है कि इसके साथ ही इसकी सीट की संख्या 123 तक पहुंच गईं, जिससे यह सदन में सबसे बड़ी पार्टी बन गई है।

इसके साथ ही पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) की सीट की संख्या 68 से बढ़कर 73 हो गई है। पूर्व वित्त मंत्री बिलावल भुट्टो-जरदारी के नेतृत्व वाली पार्टी ने शुरुआत में 54 सीट जीतीं थी और उसे अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षित 12 और महिलाओं के लिए आरक्षित दो सीट आवंटित की गई थीं।

इसके बाद महिलाओं के लिए आरक्षित चार तथा अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षित एक और सीट आवंटित की गई हैं। इसी तरह कुछ अन्य पार्टी की सीट की संख्या बढ़ी हैं।

पाक सीनेट में इमरान, कुरैशी और अन्य नेताओं की रिहाई की मांग की गई

भाषा । इस्लामाबाद

जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी ने खान, उनकी पत्नी बुशरा, उनके करीबी सहयोगी शाह महमूद कुरैशी और अन्य नेताओं की रिहाई की मांग करते हुए सीनेट में एक प्रस्ताव दिया और कहा कि राजनीतिक प्रतिशोध ने देश की अर्थव्यवस्था और साख को बर्बाद कर दिया है।

पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के संस्थापक खान (71) और वरिष्ठ पार्टी नेता तथा पूर्व विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी (67) विभिन्न मामलों में रावलपिंडी की अडियाला जेल में बंद हैं।

डॉन अखबार की खबर के अनुसार पार्टी सीनेटर फलक नाज चितराली द्वारा दिए गए प्रस्ताव में पीटीआई के नेताओं की रिहाई की मांग की गई है और आरोप लगाया गया है कि उन्हें झूठे मामलों में दोषी करार दिया गया है।

प्रस्ताव कहता है, राजनीतिक प्रतिशोध ने देश की अर्थव्यवस्था और साख को बर्बाद कर दिया है। इसमें दिग्गज पीटीआई नेता डॉ यास्मीन राशिद, खान की पत्नी बुशरा बीबी और पार्टी की अन्य महिला नेताओं तथा पत्रकारों को भी रिहा करने की मांग की गई है।

पार्टी ने मंगलवार को ऐसा ही एक प्रस्ताव नेशनल असेंबली को दिया था। खान और उनकी पत्नी बुशरा बीबी को पिछले महीने एक मामले में सात साल के कारावास की सजा सुनाई गई थी।

पीटीआई के संस्थापक अध्यक्ष खान और उनकी पत्नी को जनवरी में सरकारी खजाने के उपहारों को अवैध तरीके से बेचने के आरोपों के लिए 14 साल कारावास की सजा सुनाई गई है।

दक्षिण चीन सागर विवाद को बिना किसी खतरे के हल किया जाएगा : आसियान

एपी । मेलबर्न

ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने दक्षिण चीन सागर में फिलीपीन और चीन के तटरक्षक बलों के बीच हुई भिड़ंत को असुरक्षित और अस्थिर व्यवहार करार देते हुए बुधवार को इस पर चिंता व्यक्त की और कहा कि क्षेत्र में विवाद को बिना किसी खतरे के हल किया जाएगा।

अल्बनीज का यह बयान ऐसे समय में आया है जब उनके देश की मेजबानी में दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संघ (आसियान) का तीन-दिवसीय शिखर सम्मेलन संपन्न हुआ। यद्यपि यह सम्मेलन विवादित दक्षिण चीन सागर में जारी घटनाओं को लेकर चीन को स्पष्ट रूप से कड़ा संदेश देने में विफल रहा। आसियान देशों के नेताओं ने विवादों को धमकियों के बजाय बातचीत के माध्यम से हल करने का आग्रह किया।

दरअसल, चीन के तटरक्षक बल के जहाजों ने मंगलवार को विवादित दक्षिण चीन सागर के तट पर फिलीपीन के जहाजों को रोका, जिससे मामूली भिड़ंत हो गई। फिलीपीन तटरक्षक बल के प्रवक्ता कोमोडोर जय तैरिएला ने बताया कि चीन के जहाजों ने फिलीपीन के दो जहाजों के खिलाफ खतरनाक गतिविधियों को अंजाम दिया, जिससे फिलीपीन तटरक्षक के एक जहाज और चीनी तटरक्षक बल के एक जहाज के बीच टक्कर हो गई। इसमें फिलीपीन तटरक्षक बल के चार सदस्य घायल हो गए।

फिलीपीन के जहाज को मामूली नुकसान पहुंचा है। हालांकि, इस संबंध में और जानकारी उपलब्ध नहीं है। लाओस के प्रधानमंत्री सोनेक्साय सिफांडोन के साथ शिखर सम्मेलन की सह-अध्यक्षता करने वाले अल्बनीज ने कहा कि मंगलवार की झड़प ऑस्ट्रेलिया के लिए बेहद चिंताजनक थी।

उन्होंने कहा, यह बहुत ही खतरनाक है और इससे आपसी तालमेल खराब होने का जोखिम पैदा होता है, जो बाद में स्थिति को भयावह बना सकता है। ऑस्ट्रेलिया ने द हेग (नीदरलैंड) में 2016 के मध्यस्थता फैसले का हवाला देते हुए शिखर सम्मेलन के अंत में आसियान घोषणा-पत्र को अपनाने के लिए फिलीपीन के दबाव का समर्थन किया था। इस घोषणा-पत्र में दक्षिण चीन सागर में बीजिंग के विशाल क्षेत्रीय दावों को अमान्य कर दिया गया है।

बुधवार देर रात जारी मेलबर्न घोषणा-पत्र में 2016 के फैसले का जिक्र नहीं किया गया है। यह शिखर सम्मेलन आसियान में ऑस्ट्रेलिया के पहले बाहरी भागीदार बनने के 50 वर्ष पूरे होने के अवसर पर इस ऑस्ट्रेलियाई शहर में आयोजित किया गया था।

क्विक न्यूज

जुल्फिकार अली भुट्टो के मामले में निष्पक्ष सुनवाई नहीं की गईः न्यायालय

इस्लामाबाद (भाषा): पाकिस्तान के उच्चतम न्यायालय ने बुधवार को कहा कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो को 1979 में सैन्य शासन ने फांसी दी थी, लेकिन उनके मामले में निष्पक्ष सुनवाई नहीं की गई थी। मुख्य न्यायाधीश काजी फैज ईसा ने पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के संस्थापक को दी गई मौत की सजा से संबंधित राष्ट्रपति के संदर्भ की सुनवाई के दौरान शीर्ष अदालत की नौ सदस्यीय पीठ की सर्वसम्मति वाली इस राय की जानकारी दी। दरअसल पूर्व राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी ने अपने ससुर भुट्टो को हत्या के एक मामले में उकसाने के लिए दोषी ठहराए जाने और 1979 में उन्हें दी गई फांसी की सजा मामले को दोबारा विचार के लिए 2011 को उच्चतम न्यायालय भेजा था,जिसके बाद न्यायालय ने यह फैसला सुनाया। न्यायमूर्ति ईसा ने कहा, लाहौर उच्च न्यायालय की ओर से मामले की कार्यवाही और पाकिस्तान के सर्वोच्च न्यायालय की अपील संविधान के अनुच्छेद चार और नौ में निहित निष्पक्ष सुनवाई और उचित प्रक्रिया के मौलिक अधिकार से मेल नहीं खाती....। शीर्ष अदालत ने हालांकि अपनी राय व्यक्त की, लेकिन यह भी कहा कि भुट्टो को सुनाई गई मौत की सजा को बदला नहीं जा सकता था क्योंकि इसकी इजाजत न तो संविधान देता और न ही कानून और इसलिए यह एक फैसले के तौर पर ही देखा जाएगा। उच्चतम न्यायालय इस पर अपनी विस्तार से राय बाद में जारी करेगा।

वेनेजुएलाः 28 जुलाई को होगा राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव

काराकस (एपी): वेनेजुएला में बहुप्रतीक्षित राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव 28 जुलाई को होगा। अधिकारियों ने मंगलवार को यह घोषणा की। शीर्ष पद के लिए यह चुनाव देश के दिवंगत तेजतर्रार नेता ह्यूगो शावेज की जयंती वाले दिन होगा हालांकि इसमें विपक्ष के प्रमुख उम्मीदवार के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय पर्यवेक्षकों के शामिल होने को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है। राष्ट्रपति निकोलस मादुरो के दोबारा चुनाव मैदान में उतरने की पूरी संभावना है। मादुरो की सरकार ने शुरू में अमेरिकी सरकार द्वारा समर्थित विपक्ष के एक गुट के साथ चुनाव के विवरण को लेकर बातचीत की थी लेकिन बीते दो महीनों में दोनों पक्षों के बीच मतभेद बढ़ गए हैं।

एलेक्सी नवनली की मौत प्राकृतिक कारणों से हुईः रूसी खुफिया सेवा के प्रमुख

मॉस्को (एपी): रूस की विदेशी खुफिया सेवा के प्रमुख ने मंगलवार को कहा कि विपक्षी नेता एलेक्सी नवनली की मौत प्राकृतिक कारणों से हुई। खुफिया प्रमुख का यह बयान राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के घोर आलोचक रहे नवलनी की मौत के बाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उठ रहे सवालों को शांत करने के प्रयास के तौर पर देखा जा रहा है। रूस में एसवीआर के नाम से जाने जानी वाली शीर्ष खुफिया एजेंसी, विदेशी खुफिया सेवा के निदेशक सर्गेई नारयश्किन ने रूस के सरकारी टेलीविजन में प्रसारित एक साक्षात्कार में यह बात कही। उन्होंने कहा, कभी न कभी जीवन का अंत तो होता ही है....। नवलनी की मौत प्राकृतिक कारणों से हुई। नवलनी (47) की मौत 16 फरवरी को खार्प शहर के पेनल कॉलोनी नंबर 3 में हुई थी।

हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण के लिए भारत के साथ हुए समझौते का नवीनीकरण नहीं करेगा मालदीव

माले (भाषा): मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने घोषणा की है कि उनका देश हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण के लिए भारत के साथ हुए समझौते का नवीनीकरण नहीं करेगा और यह सर्वेक्षण करने के लिए आवश्यक सुविधाएं और मशीन हासिल करने की योजना बनाई जा रही है। मुइज्जू ने यह भी घोषणा की कि उनका देश मालदीव के जल क्षेत्र के लिए चौबीस घंटे काम करने वाली निगरानी प्रणाली इसी महीने स्थापित करने के लिए काम कर रहा है ताकि बड़े क्षेत्र के बावजूद इसके विशेष आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) पर नियंत्रण सुनिश्चित किया जा सके। यह घटनाक्रम ऐसे समय हुआ है जब चीन नें मजबूतै द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देने के लिए मुफ्त सैन्य सहायता प्रदान करने के वास्ते मालदीव के साथ कुछ दिन पहले ही एक रक्षा सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। चीन समर्थक मुइज्जू के पिछले साल सत्ता संभालने के बाद से भारत-मालदीव संबंधों को झटका लगा है। नवंबर 2023 में शपथ लेने के कुछ घंटे बाद, मुइज्जू ने मालदीव की संप्रभुता सुनिश्चित करने का संकल्प लिया और पहले कदमों में भारत से अपने सभी सैनिकों को वापस बुलाने की मांग की।

नेपाल की त्रिशूली नदी में बस गिरने से सात लोगों की मौत

काठमांडू (भाषा): नेपाल के बागमती प्रांत में बुधवार तड़के एक यात्री बस के नदी में गिर जाने से एक महिला समेत कम से कम सात लोगों की मौत हो गई और 30 अन्य घायल हो गए। नेपाल के दैनिक समाचारपत्र द हिमालयन टाइम्स की खबर के मुताबिक काठमांडू जा रही यात्री बस पर घाटबेसी इलाके में चालक नियंत्रण नहीं रख सका और वह त्रिशूली नदी में गिर गई। धाडिंग जिला पुलिस कार्यालय के पुलिस अधीक्षक (एसपी) गौतम केसी के अनुसार इस दुर्घटना में एक महिला सहित कम से कम सात लोगों की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि दुर्घटना में कम से कम 30 यात्री घायल हो गए। इन लोगों को नेपाल पुलिस, सशस्त्र पुलिस बल और नेपाल सेना के साथ स्थानीय लोगों ने बचाया।

अहम प्रौद्योगिकियों में दक्षिण कोरिया के साथ साझेदारी का विस्तार चाहता है भारतः जयशंकर

भाषा । सियोल

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने बुधवार को कहा कि भारत, दक्षिण कोरिया के साथ अपने द्विपक्षीय संबंधों को और अधिक समसामयिक बनाने के लिए महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों, सेमीकंडक्टर और हरित हाइड्रोजन जैसे नए क्षेत्रों में रणनीतिक साझेदारी का विस्तार करना चाहता है।

जयशंकर ने अपने समकक्ष चो ताए-यूल के साथ 10वीं भारत-दक्षिण कोरिया संयुक्त आयोग बैठक (जेसीएम) की सह-अध्यक्षता के दौरान यह बात कही।

उन्होंने कहा कि दोनों पक्षों के बीच रक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और व्यापार के क्षेत्र में सहयोग पर व्यापक व सार्थक चर्चा हुई।

जयशंकर ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, आज (बुधवार को) सियोल में विदेश मंत्री चो ताए-यूल के साथ 10वीं भारत-दक्षिण कोरिया संयुक्त आयोग की बैठक की सह-अध्यक्षता की, जो व्यापक और सार्थक रही।

उन्होंने कहा कि बातचीत में द्विपक्षीय संबंधों में विस्तार, रक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, व्यापार में सहयोग, दोनों देशों की जनता का आवागमन और सांस्कृतिक सहयोग पर चर्चा हुई।

जयशंकर ने कहा, द्विपक्षीय सहयोग को आगे बढ़ाने पर भी चर्चा

हुई। हिंद-प्रशांत क्षेत्र के विकास, क्षेत्र में चुनौतियों के प्रति हमारी सहमति और आपसी हितों के क्षेत्रीय व वैश्विक मुद्दों को लेकर भी विचारों का आदान-प्रदान हुआ।

जयशंकर ने अपने संबोधन में कहा कि वर्ष 2015 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दक्षिण कोरिया के दौरे के वक्त द्विपक्षीय संबंध एक नई ऊंचाई तक पहुंचे थे।

विदेश मंत्री ने कहा, यह जरूरी है कि हम उसे बनाए रखें। बीते वर्षों में हम और मजबूत हुए हैं। हम वास्तव में एक-दूसरे के लिए महत्वपूर्ण भागीदार बन गए हैं और हमारा द्विपक्षीय आदान-प्रदान, व्यापार, निवेश, रक्षा और विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग में तेजी से वृद्धि हुई है और हमने सहयोग के पारंपरिक क्षेत्रों में गतिशीलता बनाए रखी है।

उन्होंने कहा, अब हम अपने संबंधों को और अधिक समसामयिक बनाने के लिए महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों, सेमीकंडक्टर, हरित हाइड्रोजन, मानव संसाधन गतिशीलता, परमाणु सहयोग आदि नए क्षेत्रों में विस्तार करने में रुचि लेंगे।

उन्होंने कहा कि दोनों देशों ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर विचारों में बढ़ती समानता देखी है।

उन्होंने कहा, हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर ध्यान केन्द्रित करना अहम है...।

जयशंकर ने कहा कि उन्होंने बहुत आशावादी होकर और उम्मीद के साथ संयुक्त आयोग का रुख किया है। उन्होंने कहा, मैं जानता हूं कि हमारे बीच अच्छा मित्रभाव है। हमारी चुनौती इसे व्यावहारिक परिणामों में तब्दील करना है।

उन्होंने कहा, हमारे नेता पिछले साल हिरोशिमा और नई दिल्ली में दो बार मिल चुके हैं। मुझे लगता है कि उनकी चर्चाओं ने हमें आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया है।

जयशंकर ने दिसंबर में विदेश मंत्री पद पर नियुक्ति के लिए चो को बधाई भी दी।

अश्विन के 100वें मैच को यादगार बनाने उतरेगा भारत

● पांचवां और अंतिम टेस्ट आज से , जीत के साथ स्वदेश लौटना चाहेगा इंग्लैंड

भाषा । धर्मशाला

पिछले तीन मैच में जीत से श्रृंखला में अजेय बढ़त हासिल करने वाली भारतीय टीम इंग्लैंड के खिलाफ गुरुवार से यहां शुरू होने वाले पांचवें और अंतिम टेस्ट क्रिकेट मैच को अपने स्टार ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन के लिए यादगार बनाने की कोशिश करेगी जिनका यह 100वां टेस्ट मैच होगा। इंग्लैंड के विकेटकीपर बल्लेबाज जॉनी बेयरस्टो का भी यह 100वां टेस्ट मैच होगा और उनकी टीम भी जीत के साथ अपने अभियान का समापन करने के लिए प्रतिबद्ध है। भारत ने रांची में चौथा टेस्ट मैच जीत कर घरेलू धरती पर अपना शानदार रिकार्ड बरकरार रखा और अब उसकी निगाह श्रृंखला में 4-। से जीत दर्ज करके विश्व टेस्ट चैंपियनशिप में अपने शीर्ष स्थान को मजबूती प्रदान करने पर टिकी है। यहां की पिच और मौसम को देखकर इंग्लैंड को घरेलू धरती पर खेलने का अहसास हो रहा है। मैच के पहले दो दिन तापमान 10 डिग्री सेल्सियस तक रहने की संभावना है जबकि सप्ताहांत में इसमें कुछ बढ़ोतरी होगी। मैच की पूर्व संध्या पर पिच सपाट नजर आ रही है लेकिन नमी के कारण सभी दिन शुरू में तेज गेंदबाजों को भी मदद मिलने की उम्मीद है। इस मैदान पर अमूमन तेज गेंदबाजों को मदद मिलती रही है लेकिन स्पिनरों की भूमिका को भी कम करके नहीं आंका जा सकता है। अभी तक यहां केवल एक टेस्ट मैच खेला गया है। यह मैच 2017 में खेला गया था जिसमें भारत की ऑस्ट्रेलिया पर जीत में स्पिनरों ने अहम भूमिका निभाई थी। हाल में यहां खेले गए रणजी ट्रॉफी के मैचों में टीमों ने कई बार 300 रन से अधिक का स्कोर बनाया। बड़ौदा ने एक मैच में 482 रन बनाए जो वर्तमान सत्र में इस मैदान पर सबसे बड़ा स्कोर है। भारत का हालांकि दो तेज गेंदबाजों और तीन स्पिनरों के साथ ही उतरने की संभावना है। जसप्रीत बुमराह की वापसी से भारतीय तेज गेंदबाजी आक्रमण मजबूत हुआ है। उनके साथ मोहम्मद सिराज तेज गेंदबाजी विभाग का जिम्मा संभालेंगे जबकि अश्विन, रविंद्र जडेजा और कुलदीप यादव के कंधों पर स्पिन विभाग की जिम्मेदारी होगी।

मां ने अस्पताल से कहा था, टेस्ट मैच चल रहा है तुम्हें वापस जाना चाहिए: अश्विन

धर्मशाला। चेन्नई के एक अस्पताल की गहन चिकित्सा इकाई (आईसीयू) में लेटी चित्रा रविचंद्रन बार-बार बेहोश हो रही थी, लेकिन जब उन्होने बेटे रविचंद्रन अश्विन को अपने बिस्तर के पास देखा तो उनके मन मे बस एक ही सवाल था, तुम यहां क्यो आए? अनिल कुंबले के बाद 500 टेस्ट विकेट लेने वाले दूसरे भारतीय गेंदबाज बनने के कुछ घंटो बाद, मां के बीमार होने होने पर अश्विन राजकोट मे इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे मैच के बीच में चेन्नई अपने घर वापस चले गए। अश्विन की मां अचेत हो गई थी और उन्हें अस्पताल के आईसीयू में भर्ती करना पड़ा था।अश्विन ने अपने 100वें टेस्ट की पूर्व संध्या पर ईएसपीएन क्रिकइन्फो से कहा, जब मैं अस्पताल पहुँचा, तो मेरी माँ लगातार होश में आने के बाद बेहोश हो जा रही थी। मुझे वहां देखने के बाद उन्होंने पहली चीज मुझसे पूछी, तुम क्यो आए ? अगली बार जब वह होश मे आई तो उसने कहा, मुझे लगता है कि तुम्हें वापस जाना चाहिए क्योंकि टेस्ट मैच चल रहा है। इस ऑफ स्पिनर ने अपने माता-पिता रविचंद्रन और चित्रा के त्याग को भावनात्मक रूप से याद करते हुए कहा कि दोनों ने उन्हे क्रिकेटर बनाने के लिए कई कुर्बानियां दी है। इस 37 साल के गेंदबाज ने कहा, मेरा पूरा परिवार क्रिकेट और मेरे करियर को सुविधाजनक बनाने के लिए बना है।

मूनी और वोलवार्ट का अर्धशतक

● गुजरात जाइंट्स के पांच विकेट पर 199 रन

भाषा । नई दिल्ली

सलामी बल्लेबाजों कप्तान बेथ मूनी और लॉरा वोलवार्ट के अर्धशतक और दोनों के बीच शतकीय साझेदारी से गुजरात जाइंट्स ने महिला प्रीमियर लीग टी20 टूर्नामेंट में बुधवार को यहां रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर के खिलाफ पांच विकेट पर 199 रन बनाए।मूनी ने 51 गेंद में 12 चौके और एक छक्के की मदद से नाबाद 85 रन की पारी खेलने के अलावा लॉरा (45 गेंद में 76 रन, 13 चौके) के साथ पहले विकेट के लिए 140 रन की साझेदारी भी की। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर की गेंदबाजों को विकेटों के लिए जूझना पड़ा। सोफी मोलिन्यु (32रन पर एक विकेट) और जॉर्जिया वेयरहैम (36 रन पर एक विकेट) के अलावा उसकी किसी गेंदबाज को विकेट नहीं मिला। गुजरात की तीन बल्लेबाज रन आउट हुईं।मूनी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया और लॉरा वोलवार्ट के साथ मिलकर टीम को शानदार शुरुआत दिलाई। दोनों ने पावर प्ले में बिना विकेट खोए 59 रन बनाए।वोलवार्ट ने सोफी डिवाइन के पारी के पहले ओवर में दो चौकों के साथ शुरुआत की और फिर सोफी मोलिन्यु के ओवर में भी दो चौके मारे। मूनी ने भी रेणुका सिंह पर दो चौके जड़े। मूनी ने एकता बिष्ट का स्वागत लगातार दो चौकों के साथ किया। लॉरा ने 10वें ओवर में एलिस पैरी पर लगातार तीन चौकों के साथ सिर्फ 32 गेंद में अर्धशतक पूरा किया और इसी ओवर में टीम के रनों का शतक भी पूरा किया। यह टीम की महिला प्रीमियर लीग में पहली शतकीय साझेदारी है। मूनी ने मोलिन्यु की गेंद को बैकवर्ड प्वाइंट पर खेला और रन के लिए दौड़ पड़ीं। लॉरा के हालांकि बल्लेबाजी छोर पर पहुंचने से पहले बिष्ट के थ्रो पर विकेटकीपर रिचा घोष ने उन्हें रन आउट कर दिया। मूनी ने भी इस बीच मोलिन्यु की गेंद पर तीन रन के साथ 32 गेंद में अर्धशतक पूरा किया।ूनी ने सोफी डिवाइन पर पारी का पहला छक्का जड़ा और फिर उनकी और बिष्ट की गेंद को बाउंड्री के दर्शन कराए।फोएबे लिचफील्ड भी 19वें ओवर में 17 गेंद में 18 रन बनाने के बाद रन आउट हुई। जॉर्जिया वेयरहैम ने अगली गेंद पर एश्लेग गार्डनर (00) को पवेलियन भेजा।

इस्माइल ने महिला क्रिकेट में सबसे तेज गेंद फेंकी

नई दिल्ली। दक्षिण अफ्रीका की तेज गेंदबाज शबनीम इस्माइल ने महिला क्रिकेट में अब तक की सबसे तेज गेंद फेंककर नया इतिहास रचा।गेंद की रफ्तार नापने वाली मशीन स्पीड गन के आने के बाद यह पहला अवसर है जबकि महिला क्रिकेट में किसी गेंदबाज ने 130 किमी से अधिक की रफ्तार से गेंद की। महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) में मुंबई इंडियंस की तरफ से खेलते हुए इस्माइल ने यहां दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ मैच के दौरान 132.1 किमी (80.08 मील) प्रति घंटे की रफ्तार से गेंद करके नया रिकॉर्ड बनाया।

इंग्लैंड टीम के सदस्यों ने दलाई लामा से मुलाकात की

धर्मशाला। भारत दौरे पर आई इंग्लैड टीम के कुछ सदस्यों ने भारत के खिलाफ अंतिम टेस्ट की पूर्व संध्या पर बुधवार को तिब्बती आध्यात्मिक धर्म गुरू दलाई लामा से उनके मैक्लोडगंज स्थित आवास पर मुलाकात की। इंग्लैड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने शांति के लिए नोबेल पुरस्कार विजेता दलाई लामा के साथ टीम के सदस्यों की एक तस्वीर पोस्ट की। ईसीबी ने अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर कहा, माननीय दलाई लामा से मिलना एक अविश्वसनीय सम्मान है।

गौरिका ने छह अंडर कार्ड खेला, अमनदीप शीर्ष पर

गुरूग्राम। गौरिका बिश्नोई हीरो महिला पेशेवर गोल्फ टूर (डब्ल्यूपीजीटी) के पांचवे चरण के दूसरे दौर में बुधवार को यहां छह अंडर 66 का कार्ड खेलने के बाद तालिका में शीर्ष पर काबिज अमनदीप द्राल से दूरी को पाटने में सफल रही। गौरिका ने इस दौरान आखिरी नौ होल में पांच बर्डी लगाई। पहले दौर में उन्होंने दो अंडर 70 का कार्ड खेला था जिससे दो दौर के बाद उनका कुल स्कोर आठ अंडर 136 है।

क्रिकेटर अभिषेक शर्मा से पूछताछ की

सूरत। पुलिस ने मॉडल तान्या सिंह की संदिग्ध आत्महत्या के मामले में गुजरात के सूरत शहर में इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के क्रिकेटर अभिषेक शर्मा से लगभग चार घंटे तक पूछताछ की। एक अधिकारी ने बुधवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि अभिषेक का सात महीने पहले तक तान्या से रिश्ता था। उनसे मंगलवार को पूछताछ की गई।

भारत हॉकी टीम 27 जुलाई को न्यूजीलैंड से भिड़ेगी

लुसाने। भारतीय पुरुष हॉकी टीम पेरिस ओलंपिक में अपने पहले मुकाबले में 27 जुलाई को न्यूजीलैंड से भिड़ेगी। बुधवार को यहां पेरिस ओलंपिक की हॉकी स्पर्धा का कार्यक्रम जारी किया गया। तोक्यो ओलंपिक के कांस्य पदक विजेता भारत को पूल बी में रखा गया है।

केवल वास्तविक पहलवानों का ही ट्रायल्स

नई दिल्ली। भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) ने स्पष्ट किया है कि वह 10 मार्च से शुरू होने वाले दो दिवसीय चयन ट्रायल्स में केवल उन्ही पहलवानों को भाग लेने की अनुमति देगा जो अपने मूल राज्य का प्रतिनिधित्व करेंगे। डब्ल्यूएफआई ने इसके अलावा पहलवानों को एक से अधिक वजन वर्गों में प्रतिस्पर्धा करने की अनुमति देने का भी फैसला किया है।

पीएसजी चैंपियंस लीग के क्वार्टर फाइनल में

सैन सेबेस्टियन (स्पेन)। किलियन एमबापे के दो गोल की मदद से पेरिस सेंट जर्मेन (पीएसजी) ने रीयाल सोसिडाड को 2-। से हराकर चैंपियंस लीग फुटबाल टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

विदर्भ रणजी ट्रॉफी के फाइनल में, अब मुकाबला मुंबई से

भाषा । नागपुर

तेज गेंदबाज आदित्य ठाकरे और यश ठाकुर की शानदार गेंदबाजी से विदर्भ ने बुधवार को यहां मध्य प्रदेश को 62 रन से हराकर रणजी ट्रॉफी क्रिकेट टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बनाई जहां उसका सामना 41 बार के चैंपियन मुंबई से होगा। मध्य प्रदेश ने मैच के पांचवें और अंतिम दिन सुबह अपनी दूसरी पारी 6 विकेट पर 228 रन से आगे बढ़ाई। तब वह लक्ष्य से 93 रन पीछे था लेकिन ठाकरे और ठाकुर (दोनों दो-दो विकेट) की तेज गेंदबाजी के सामने उसके पुछल्ले बल्लेबाज नहीं चल पाए और उसकी पूरी टीम 81.3 ओवर में 258 रन पर आउट हो गई। यह तीसरा अवसर है जबकि विदर्भ ने रणजी ट्रॉफी के फाइनल में प्रवेश किया। इससे पहले दोनों अवसरों पर वह चैंपियन बना था। उसने 2017-18 में दिल्ली और 2018-19 में सौराष्ट्र को हराया था। मध्य प्रदेश 2021-22 का रणजी चैंपियन है। उसके सामने 321 रन का लक्ष्य था तथा 6 विकेट गंवाने के बावजूद उसके पास जीत हासिल करने का मौका था।

फिट और उपलब्ध होने पर घरेलू क्रिकेट खेलना महत्वपूर्ण है: रोहित

भाषा । धर्मशाला

भारतीय कप्तान रोहित शर्मा चाहते हैं कि राष्ट्रीय टीम में जगह नहीं बनाने वाले खिलाड़ी खुद को घरेलू क्रिकेट के लिए उपलब्ध रखें, बशर्ते भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) की मेडिकल टीम ने उन्हें अनफिट घोषित नहीं किया हो। एक प्रारूप पर दूसरे को प्राथमिकता देने वाले खिलाड़ियों को कड़ा संदेश देते हुए बीसीसीआई ने सभी अनुबंधित क्रिकेटरों को घरेलू क्रिकेट को प्राथमिकता देने की सलाह दी थी और रणजी ट्रॉफी खेलने के बोर्ड के निर्देशों की अनदेखी करने पर 2023 एकदिवसीय विश्व कप टीम में शामिल खिलाड़ियों इशान किशन और श्रेयस अय्यर को केंद्रीय अनुबंधित खिलाड़ियों के पूल से बाहर कर दिया था। इंग्लैंड के खिलाफ अंतिम टेस्ट से पूर्व रोहित ने स्पष्ट किया कि यह कदम सभी खिलाड़ियों पर लागू होता है और यह सिर्फ कुछ खिलाड़ियों के लिए नहीं है। रोहित ने कहा, इस बारे में लंबे समय से चर्चा चल रही है। जब खिलाड़ी उपलब्ध होंगे तो उन्हें खुद को घरेलू क्रिकेट खेलने के लिए उपलब्ध कराना होगा जब तक कि उन्हें चिकित्सा समूह से प्रमाण पत्र नहीं मिल जाए उन्हें आराम की जरूरत है या वे घरेलू क्रिकेट में हिस्सा नहीं लेंगे। लेकिन अगर आप उपलब्ध हैं, अगर आप फिट हैं, अगर आप ठीक हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि हम जाएं और खेलें। यह सिर्फ कुछ क्रिकेटरों के लिए नहीं है, यह हर किसी के लिए है कि वे सुनिश्चित करें कि जब भी आप उपलब्ध हों, और ठीक हैं, आप घरेलू क्रिकेट खेलें। रोहित धर्मशाला टेस्ट की तैयारी में व्यस्त हैं लेकिन फिर भी उन्हें रणजी ट्रॉफी के सेमीफाइनल को देखने का समय मिला है जिसमें उनकी अपनी घरेलू टीम मुंबई ने भाग लिया था।

अश्विन की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है, उनके जैसे खिलाड़ी दुर्लभ हैं

धर्मशाला। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने अपना 100वां टेस्ट मैच खेलने की तैयारी में लगे रविचंद्रन अश्विन को दुर्लभ प्रतिभा का खिलाड़ी करार देते हुए बुधवार को यहां कहा कि इस ऑफ स्पिनर की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम होगी।भारत पांच मैच की श्रृंखला में पहले ही 3-। से अजेय बढ़त हासिल कर चुका है तथा इंग्लैड के खिलाफ गुरुवार से यहां शुरू होने वाले पांचवां और अंतिम टेस्ट मैच के परिणाम का श्रृंखला के नतीजे पर कोई असर नही पड़ेगा। लेकिन यह मैच अश्विन और इंग्लैंड के बल्लेबाज जॉनी बेयरस्टो का 100वां टेस्ट मैच होगा जिससे यह महत्वपूर्ण बन गया है।रोहित ने मैच की पूर्व संध्या पर संवाददाताओ से कहा, किसी भी खिलाड़ी के लिए 100 टेस्ट मैच खेलना बड़ी उपलब्धि होती है। वह हमारे लिए मैच विजेता खिलाड़ी रहा है।

सरकारी नौकरी के लिए पात्र होंगे खेलो इंडिया के पदक विजेता

भाषा । नई दिल्ली

खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने बुधवार को कहा कि संशोधित मानदंडों के बाद खेलो इंडिया के पदक विजेता भी अब सरकारी नौकरी पाने के लिए पात्र होंगे। ठाकुर ने कहा कि यह कदम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मजबूत खेल पारिस्थितिकी तंत्र, जमीनी स्तर पर प्रतिभाओं को निखारने तथा खेल को एक आकर्षक और व्यवहार्य करियर विकल्प में बदलने के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए उठाया गया है। उन्होंने कहा कि कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग ने खेल मंत्रालय के परामर्श से सरकारी नौकरी चाहने वाले खिलाड़ियों के लिए पात्रता मानदंडों में संशोधन किया है। ठाकुर ने एक्स पर अपनी पोस्ट में कहा, खेलो इंडिया खेलों (युवा, विश्वविद्यालय, पैरा और शीतकालीन) के पदक विजेता खिलाड़ी अब सरकारी नौकरी पाने के पात्र होंगे। इसके साथ ही विभिन्न खेलों में समावेशिता सुनिश्चित करने के लिए खेलों और आयोजनों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है।

इंडियन वेल्स के अंतिम राउंड में हारे सुमित नागल

इंडियन वेल्स (अमेरिका)। भारतीय टेनिस स्टार सुमित नागल इंडियन वेल्स मास्टर्स टूर्नामेंट के अंतिम क्वालीफाइंग दौर मे दक्षिण कोरिया के सियोंग चान होंग को कड़ी चुनौती पेश करने के बावजूद हार गए। मंगलवार को खेले गए इस मैच मे 26 वर्षीय नागल को 6-2, 2-6, 6-7 (4-7) से हार का सामना करना पड़ा। इससे पहले नागल ने क्वालीफाइंग के पहले दौर में वाइल्ड कार्ड से प्रवेश पाने वाले अमेरिका के खिलाड़ी स्टीफन डोस्टानिक को सीधे सेटो मे 6-2, 6-2 से हराया था। क्वालीफाइंग के दूसरे दौर में हारने के बावजूद नागल को 10 रैंकिंग अंक और 14400 अमेरिकी डॉलर की पुरस्कार राशि मिली। नागल इस साल के शुरू मे ऑस्ट्रेलियाई ओपन के दूसरे दौर में पहुंचे थे। उन्होने चेन्नई चैलेंजर्स का खिताब जीता था।

नागपुर आईटीएफ : सहजा प्री-क्वार्टर फाइनल में पहुंची

नागपुर। पांचवी वरीयता प्राप्त भारतीय टेनिस खिलाड़ी सहजा यमलापल्ली ने बुधवार को यहां हमवतन वैदेही चौधरी को हराकर डब्ल्यू35 नागपुर आईटीएफ महिला चैंपियनशिप के प्री-क्वार्टर फाइनल मे प्रवेश किया। सहजा ने एमएसएलटीए टेनिस अकादमी क्ले कोर्ट में एक घंटे 46 मिनट तक चले मुकाबले मे वैदेही को 3-6, 6-।, 6-। से शिकस्त दी। सहजा अंतिम-16 मे वाइल्ड कार्ड धारी सोनल पाटिल से भिड़ेंगी। भारत की चार अन्य खिलाड़ियों को हालांकि अंतिम 32 चरण में हार का सामना करना पड़ा। श्रीवल्ली भामिदिपति रूस की अनास्तासिया जोलोटारेवा के हाथों 3-6, 6-।, 4-6 से हारकर बाहर हो गई। आकांक्षा निटुरे को रोमानिया की मारिया बारा ने।-6, 3-6 से हराया, जबकि दक्षिण कोरिया की गैर वरीयता प्राप्त डेयोन बैक ने भारतीय क्वालीफायर अंजलि राठी को 6-।, 6-। से हराकर अंतिम 16 में जगह बनाई।

मैरीकॉम महिलाओं को करेंगी प्रेरित

मुंबई। भारत के प्रमुख इंश्योरटेक ब्राण्ड इंश्योरेंस देखो ने हाल ही में एक नई पहल स्वरा शी विल राइज़ अगेनशुरू की है। यह पहल महिलाओं को अपने कॅरियर ब्रेक से वापसी करने पर फोकस करती है। इंश्योरेंसदेखो का मुख्यालय गुरुग्राम में है। इस कंपनी ने जानी-मानी बाक्सर मैरी कॉम को कार्यक्रम का शुभारंभ करने के लिए आमंत्रित किया। इस पहल का मकसद कॅरियर से कम से कम एक साल का ब्रेक लेने वाली महिलाओं को वर्कफोर्स में लौटने के लिए प्रेरित करना है। यह उन महिलाओं को समान अवसरए अधिकार और पारिश्रमिक उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य कर रहा है। साथ ही इस बात का पूरा ध्यान रखा जा रहा है कि वर्कप्लेस पर उनके साथ उचित व्यवहार किया जाए और उन्हें सही पहचान मिल सके। बॉक्सिंग के अपने सफर में कॅरियर से ब्रेक लेकर वापसी करने वालीए मैरी कॉम इसका सटीक उदाहरण हैं। स्वराष् शब्द का अर्थ हैए वह फिर खड़ी होगी और यह महिलाओं को काम वापसी के सफर में मदद करने की ब्राण्ड की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। भारत निर्माण के इस मिशन मेंए इंश्योरेंसदेखो भारत के 98 प्रतिशत पिन कोड में उपलब्ध है और हर मिनट 10 लोगों को बीमित कर रहा है। दिव्या मोहन सीएचआरओ इंश्योरेंस देखो का कहना है किहमने अलग-अलग क्षेत्रों की महिलाओं से बात की, जिन्होंने कॅरियर ब्रेक के बाद दोबारा काम शुरू करने के दौरान आने वाली चुनौतियों के बारे में बताया। अंकित अग्रवाल सीईओ एवं फाउंडर इंश्योरेंसदेखो का कहना है कि आज की प्रतिस्पर्धी दुनिया में आगे बढ़ने को लेकर दृढ़निश्चयी हैं। हमारी टीम में कई ऐसी महिलाएं हैं जोकि मांए पत्नी और बेटियों की भूमिका निभा रही हैं, ये सारी ही महिलाएं बेहद प्रतिभाशाली हैं।

कल्पना क्रिकेट फाउंडेशन की 5 विकेट से जीत

लखनऊ। सम्यक त्रिवेदी-3 विकेट की अगुवाई में उम्दा गेंदबाजी की बदौलत कल्पना क्रिकेट फाउंडेशन ने द्वितीय तारा देवी मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट में खेले गए मुकाबले में आशीष नेहरा क्रिकेट अकादमी को 5 विकेट से हराकर पूरे अंक हासिल किए। गियर क्रिकेट ग्राउंड पर आशीष नेहरा क्रिकेट अकादमी ने टॉस जीतकर निर्धारित 40 ओवर के मैच में पहले बल्लेबाजी का फैसला लिया लेकिन टीम 32ण्4 ओवर में 129 रन ही बना सकी। टीम ने 29 रन के स्कोर पर तीन विकेट गंवा दिए थे। आकाश यादव ने सबसे ज्यादा 33 रन बनाए। सम्यक त्रिवेदी ने 35 रन देकर 3 विकेट हासिल किए। जवाब में कल्पना क्रिकेट फाउंडेशन ने 31ण्4 ओवर में 5 विकेट पर 130 रन बनाकर जीत हासिल की। सलामी बल्लेबाज सम्यक त्रिवेदी 8 रन ही बना सके। हालांकि उनके जोड़ीदार द्रव्य कुमार कुशवाहा ने 86 गेंदों पर 4 चौकों व एक छक्के की सहायता से नाबाद 50 रन की अर्धशतकीय पारी खेलते हुए टीम को जीत की मंजिल तक पहुंचाया।

गुकेश प्रज्ञानानंदा को ड्रॉ पर रोकने में सफल रहे

प्राग। भारतीय ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञानानंदा बुधवार को यहां प्राग मास्टर्स शतरंज टूर्नामेंट के सातवे दौर मे हमवतन डी गुकेश के खिलाफ बेहतर स्थिति होने के बाद भी जीत दर्ज करने में विफल रहे। सफेद मोहरो से खेलते हुए प्रज्ञानानंदा गुकेश को हराने के बहुत करीब आ गए लेकिन आखिर मे उन्हें अंक बाटने के लिए सहमत होना पड़ा। मुकाबले मे 37वी चाल के बाद प्रज्ञानानंदा के पास जीत दर्ज करने का मौका था लेकिन गुकेश मजबूत मानसिकता दिखाते हुए इसे 91वी चाल तक खिंचने मे सफल रहे। दिन के एक और रोमांचक मुकाबले मे उज्बेकिस्तान के नोदिरबेक अब्दुसत्तारोव ने जर्मनी के विंसेट को हराकर तालिका मे शीर्ष पर अपनी स्थिति मजबूत की। अब्दुसत्तारोव को पिछले दौर मे प्रज्ञाननंदा ने हराया था। राउंड रोबिन आधार पर खेले जा रहे 10 खिलाड़ियों के इस टूर्नामेंट मे अब दो और दौर बचे है। भारतीय खिलाड़ी विदित गुजराती की वापसी की संभावनाओ को एक और झटका लगा जब वह ईरान के परहम माघसूदलू से हार गए। अब्दुसत्तारोव के पांच अंक है जबकि दूसरे स्थान पर काबिज माघसूदलू उनसे आधा अंक पीछे है।

पदार्पण टेस्ट में तेंदुलकर और द्रविड़ जैसे खिलाड़ियों को देखना सपने जैसा था: विलियमसन

क्राइस्टचर्च। अपना 100वां टेस्ट मैच खेलने के लिए तैयार न्यूजीलैड के स्टार बल्लेबाज केन विलियमसन ने बुधवार को उस पल को याद किया जब 2010 मे अहमदाबाद मे पदार्पण टेस्ट मैच मे वह सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़ और वीवीएस लक्ष्मण जैसे महान खिलाड़ियों से घिरे हुए थे। विलियमसन ने कहा किजिन खिलाड़ियो को देखते हुए वह बड़े हुए थे उनके सामने खेलने का मौका मिलना किसी सपने के सच होने जैसा था। ड्रॉ पर छूटे इस टेस्ट मैच मे न्यूजीलैड के लिए पहली पारी मे 131 रन बनाकर विलियमसन ने अपने टेस्ट करियर का शानदार आगाज किया था। वह शुक्रवार से यहां ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शुरू होने वाली दो मैचो की श्रृंखला के दूसरे मैच मे 100 टेस्ट शतको का आंकड़ा पूरा करेंगे।

एआईएफएफ अध्यक्ष ने भ्रष्टाचार का आरोप लगाने वाले पूर्व प्रमुख विधि सलाहकार को नोटिस भेजा

नई दिल्ली। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) के अध्यक्ष कल्याण चौबे ने संगठन के पूर्व प्रमुख विधि सलाहकार नीलांजन भट्टाचार्जी को अपने खिलाफ भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाने के लिए कानूनी नोटिस भेजा है। भट्टाचार्जी ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लिखे पत्र मे दावा किया कि चौबे ने गैर-पारदर्शी निविदा प्रक्रिया के तहत भ्रष्टाचार किया। उन्होंने यह भी आरोप लगाया था कि चौबे ने महासंघ के कोष का व्यक्तिगत इस्तेमाल किया। चौबे ने पहले ही इन आरोपों को निराधार बताते हुए कहा था कि भट्टाचार्जी का मकसद उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाना था

श्रीकांत ने चेन के खिलाफ उलटफेर किया

● फ्रेंच ओपन बैडमिंटन: प्रणय हारे

भाषा । पेरिस

भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी किदांबी श्रीकांत बुधवार को यहां चीनी ताइपे के चोउ टिएन चेन पर शानदार जीत के साथ फ्रेंच ओपन के पुरुष एकल के दूसरे दौर में पहुंच गए, लेकिन एचएस प्रणय इस सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट के पहले दौर में ही बाहर हो गए। पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे दुनिया के 24वें नंबर के खिलाड़ी श्रीकांत की चेन के खिलाफ सात मैचों में यह तीसरी जीत है। उन्होंने 66 मिनट तक चले मुकाबले को 21-15, 20-22, 21-8 से अपने नाम किया। साल 2021 विश्व चैम्पियनशिप के रजत पदक विजेता श्रीकांत का सामना दूसरे दौर में चीन के विश्व रैंकिंग में 17वें स्थान पर काबिज खिलाड़ी लू गुआंग जू से होगा। गुआंग ने भारत के एचएस प्रणय के अभियान को 21-17, 21-17 से हराकर खत्म किया। श्रीकांत ने मुकाबले की शुरुआत में पिछड़ने के बाद शानदार वापसी की। उन्होंने 5-7 से पिछड़ने के बाद अगले 17 अंकों में से 14 अंक जीतकर पहला गेम अपने नाम किया। चेन ने दूसरे गेम में पलटवार किया और कड़ी मशक्कत के बाद मुकाबले को तीसरे और निर्णायक गेम तक खींचने में सफल रहे। श्रीकांत ने तीसरे गेम में अपनी लय वापस हासिल की और 7-5 से बढ़त बनाने के बाद लगातार नौ अंक लेकर चेन को काफी पीछे छोड़ दिया। ताइवान के खिलाड़ी ने इसके बाद तीन अंक जुटाए लेकिन भारतीय खिलाड़ी ने शेष पांच अंक लेकर मुकाबला अपने नाम किया। इसके बगल वाले कोर्ट पर गुआंग जू के खिलाफ प्रणय के खेल में निरंतरता की कमी दिखी। वह शुरुआती गेम में बढ़त बनाने के बाद पिछड़ गए। प्रणय ने एक बार फिर से वापसी करते हुए 11-8 की बढ़त बनाई। दोनों खिलाड़ी के बीच इसके बाद रोचक मुकाबला चला जिसमें गुआंग जू ने स्कोर को 16-16 से बराबर किया और फिर प्रणय के लचर खेल का फायदा उठाते हुए पहला गेम जीत लिया। प्रणय दूसरे गेम में भी पिछड़ रहे थे। शुरुआत में 0-3 से पिछड़ने के बाद वह स्कोर को 6-6 करने में सफल रहे। उन्होंने इस दौरान गुआंग जू के खिलाफ कुछ शानदार स्मैश लगाए।

स्टोक्स ने धर्मशाला की पिच को बल्लेबाजी के अनुकूल बताया

धर्मशाला। इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने धर्मशाला की पिच को पूरी तरह से बल्लेबाजी के अनुकूल बताया और यही मुख्य कारण है कि उन्होंने भारत के खिलाफ गुरुवार से यहां शुरू होने वाले पांचवें और अंतिम टेस्ट के लिए एक अतिरिक्त तेज गेंदबाज को टीम में नहीं चुना। धर्मशाला में साल के इस समय में सामान्य से अधिक ठंड होती है जिससे तेज गेंदबाजों की दिलचस्पी बनी रहती है लेकिन पिच पर कोई घास नहीं छोड़े जाने के कारण इंग्लैंड के बल्लेबाजों को बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद है। इंग्लैंड ने अंतिम एकादश में एकमात्र बदलाव करते हुए ओली रोबिन्सन की जगह मार्क वुड को टीम में शामिल किया है। स्टोक्स ने मैच से पूर्व प्रेस कांफ्रेंस में कहा, यहां पहुंचने से पहले हम सोच रहे थे कि आक्रमण में तीन तेज गेंदबाज और एक स्पिनर शामिल होगा।

जायसवाल बल्लेबाजों की आईसीसी टेस्ट रैंकिंग में शीर्ष 10 में

दुबई। भारत के युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल इंग्लैंड के खिलाफ मौजूदा घरेलू श्रृंखला में शानदार प्रदर्शन के दम पर बुधवार को अपने करियर में पहली बार टेस्ट बल्लेबाजों की आईसीसी रैंकिंग में शीर्ष 10 में पहुंच गए। वर्ष 2023 में टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करने वाले जायसवाल 727 रेटिंग अंक के साथ दो स्थान की छलांग लगाकर 10वें स्थान पर हैं। इंग्लैंड के खिलाफ बल्ले से जबरदस्त फॉर्म में चल रहे जायसवाल ने एक टेस्ट श्रृंखला में 600 या इससे अधिक रन बनाने वाले भारतीय बल्लेबाजों के विशिष्ट क्लब में शामिल होकर इतिहास रच दिया है। वह यह उपलब्धि हासिल करने वाले बाएं हाथ के एकमात्र बल्लेबाज हैं। बाइस साल के जायसवाल सुनील गावस्कर, दिलीप सरदेसाई, राहुल द्रविड़ और विराट कोहली के साथ टेस्ट श्रृंखला में 600 रन का आंकड़ा पार करने वाले केवल पांचवें भारतीय हैं। जायसवाल ने अब तक चार टेस्ट मैच में 93.57 की औसत से 655 रन बनाए हैं जिसमें दो अर्धशतक और दो दोहरे शतक शामिल हैं। उनकी नजरें अब एक टेस्ट श्रृंखला में किसी भी भारतीय बल्लेबाज द्वारा सबसे अधिक रन (774) के महान सुनील गावस्कर के रिकॉर्ड को तोड़ने पर टिकी हैं। इंग्लैंड के खिलाफ राजकोट में तीसरे टेस्ट में 131 रन की शानदार पारी खेलने वाले रोहित शर्मा को 11वें स्थान पर पहुंच गए हैं।

निशांत की ओलंपिक क्वालीफायर में जीत से शुरुआत

शिव , अंकुशिता हारे

भाषा । बस्तो अर्सिजयो (इटली)

विश्व चैंपियनशिप के कांस्य पदक विजेता निशांत देव ने बुधवार को यहां ब्रिटेन के मुक्केबाज लुईस रिचर्डसन के खिलाफ 3-। की रोमांचक जीत दर्ज करके पहले ओलंपिक मुक्केबाजी क्वालीफायर में अपने अभियान की शानदार शुरुआत की। अनुभवी शिव थापा और युवा महिला विश्व चैंपियन अंकुशिता बोरो को हालांकि पहले दौर में ही हार का सामना करना पड़ा। पुरुषों के 71 किग्रा भार वर्ग में निशांत ने राष्ट्रमंडल खेलों के कांस्य पदक विजेता रिचर्डसन के खिलाफ शुरू से ही आक्रामक रवैया अपनाया और पहले राउंड में 4-। से जीत दर्ज की। यह 23 वर्षीय भारतीय मुक्केबाज दूसरे राउंड में अपने प्रतिद्वंद्वी पर पूरी तरह हावी हो गया और उन्होंने अपने दाहिने हाथ से कुछ जोरदार मुक्के जमाए। निशांत ने इस राउंड को 5-0 से जीता। निशांत ने तीसरे राउंड में अपनी बढ़त को बरकरार रखने के लिए रक्षात्मक रवैया अपनाया तथा आखिर में विभाजित फैसले से जीत हासिल की। एशियाई चैंपियनशिप में छह बार के पदक विजेता शिव थापा (63.5 किग्रा) उज्बेकिस्तान के मौजूदा विश्व चैंपियन रुस्लान अब्दुल्लाव से हार गए। रुस्लान ने अपनी ख्याति के अनुरूप प्रदर्शन किया। उन्होंने शुरू से ही आक्रामक रवैया अपनाकर भारतीय मुक्केबाज को रक्षात्मक होने के लिए मजबूर कर दिया। शिव थापा की यह रणनीति हालांकि ज्यादा देर तक नहीं चली क्योंकि रुस्लान ने आक्रमण जारी रखा था। रेफरी ने पहले राउंड में ही मुकाबला रोककर उज्बेकिस्तान के मुक्केबाज को विजेता घोषित कर दिया। अंकुशिता बोरो को महिलाओं के 66 किग्रा में फ्रांस की सोनविको एमिली ने 3-2 से हराया, जिससे ओलंपिक क्वालीफायर में भारत का निराशाजनक प्रदर्शन जारी रहा। अब तक नौ में से छह भारतीय मुक्केबाज टूर्नामेंट के पहले दौर में ही बाहर हो गए हैं। इससे पहले मंगलवार को मौजूदा राष्ट्रीय चैंपियन लक्ष्य चाहर (80 किग्रा) ईरान के 2021 के एशियाई चैंपियनशिप के रजत पदक विजेता गेश्लाघी मेसम से हारकर पहले दौर में बाहर होने वाले चौथे भारतीय मुक्केबाज बने थे।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा बीएफएल इन्फोटेक लिमिटेड सी-9 सेक्टर-3, नोएडा-201301 (उ.प्र.) से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: प्रदीप तिवारी। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। मुख्य व्यवसायिक कार्यालय- 201-205 द्वितीय मंज़िल, प्रताप भवन, 5,बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष:011-69342500।